THE BOOK WAS DRENCHED

TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176798
UNIVERSAL
LIBRARY

यूनान का इतिहास।

ब्रजनन्दन प्रसाद मिश्र लिखित।

158

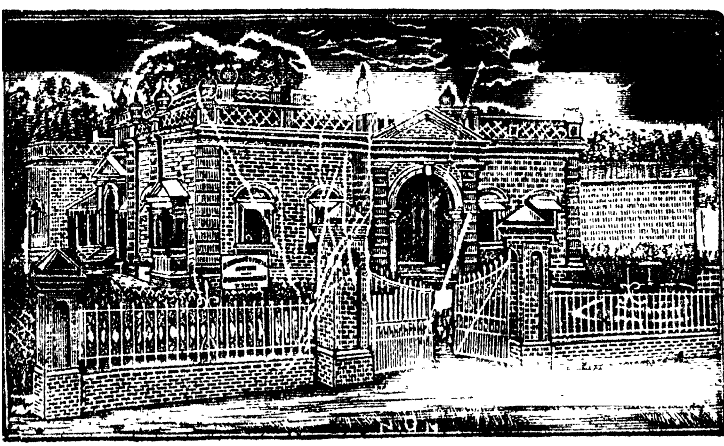

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

श्रीअम्बिकाचरण चक्रवर्ती द्वारा

महामण्डल प्रेस, गोदौलिया बनारस में मुद्रित।

यूनान का इतिहास ।

पहिला पाठ ।

यूनानियों का आरंभ ।

१-यूनानी और इटली वाले—ईसामसीह के जन्म से पहिले के युरोप के इतिहास में प्रायः यूनानी और इटली वालों ही का वृत्तान्त अधिकता से मिलता है । प्राचीन काल में यूरोप में केवल येही जातियां नहीं थीं, बरन् गॉल और जर्मन इत्यादिऔरजातियां भी थीं ।

तब इसका क्या कारण है कि पहिले के इतिहास में इटली वाले और यूनानियों का तो इतना अधिक वृत्तान्त मिलता है और दूसरी यूरोपीय जातियों का इतना थोड़ा ? इस का यह कारण है कि उन दिनों में ही यूनानियों और इटली वालों ने नगरों में रहना सीख लिया था और अच्छे अच्छे कानून और राज्य-पद्धतियां स्थापित करली थीं । वे व्यापार से धनवान् होने लग गये थे और दूसरी जातियां जंगली और मूर्ख ही बनी हुई थीं । यदि उनका उन दिनों का इतिहास हमको मालूम भी होता तो वह रोचक नहीं होता । उसमें लड़ने और घूमने के वृत्तान्त के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं मिलता और शताब्दियों तक वे उस ही भोंडी रीति से रहते रहे जैसे कि आरंभ में

रहते थे। परंतु जिन दिनों में यूरोप की उत्तरीय जातियां वर्बर ही बनी थीं उन्हीं दिनों यूनान और इटली वाले अर्वाचीन जातियों की भांति रहने लगे थे। वे बड़े २ काम कर गये हैं जिनका प्रभाव आज तक वर्तमान है। यूनानियों ने युरोप को एशियावालों के हाथ से बचाया और अपने आसपास की जातियों के जीवन को अधिक सरल और सुखयुक्त बनाया। यूनानी दूसरी प्राचीन अथवा अर्वाचीन जातियों से कुछ अधिक पूर्ण और निर्दोष नहीं थे, उनमें बहुतेरे दोष थे और उनके इतिहास का अधिक भाग फूट और जोर जुल्म से भरा हुआ है। परंतु इन बुराइयों के साथ ही साथ ऐसी ऐसी भलाइयों के नमूने मिलते हैं कि जिन से विस्मय होता है। यूनानियों में जितनी बुराइयां और दुर्व्यसन थे वे उन में दूसरी जातियों से आगये थे। अतः अपनी अच्छी बातों से कारण वे औरों की अपेक्षा बहुत सी बातों में उच्च हो गये थे। किसी जाति ने कभी भी इतनी बातों को ऐसे अच्छे ढंग से नहीं किया जैसे कि यूनानियों ने। :उन्होंने प्रत्येक बात का कारण और उस में सचाई होना सब से पहले सोचा था। आजकल के विद्वानों को भी यूनानियों की बची खुची कविता और इतिहास में आनन्द आता है, और कारीगर जानते हैं कि जो यूनानियों की तराशी हुई मूर्तियां अब भी वर्तमान हैं वैसी हम पत्थर और लकड़ी को तराशकर कभी नहीं बना सकते? मनुष्यों को यूनान के प्राचीन इतिहास में सदा प्रेम रहेगा और वह भी केवल इसी लिये नहीं कि यूनानी स्वयं बड़े चतुर और तीव्र बुद्धि थे; वरन् इस कारण से कि बहुत सी बातें, जिनकी यूरोपवाले अपने जीवन में बड़ी कदर करते हैं जैसे विद्या पढ़ने की इच्छा, उत्तम भाषणशक्ति, गानविद्या और

चित्रकारी—यूरपवालों को उन्हीं से मिली है ।

२—दूसरी जातियों से यूनानियों का संबन्ध—परंतु यूनानी लोग उत्तरीय जातियों से, जो उन दिनों में बिल्कुल बर्बर थीं, बिल्कुल भिन्न जाति के नहीं थे जैसे कि अरब वाले या चीनी उन से बिल्कुल भिन्न जाति के थे । बहुत प्राचीन काल में पुरानी से पुरानी किताबों के लिखे जाने से बहुत पहले कास्पियन सागर और भारतवर्ष के पश्चिमी पर्बतों के बीच में एक जाति रहती थी, जिस से यूनानी और इटली वाले ही नहीं वरन बहुत सी यूरोप की जातियां और हिन्दू भी उत्पन्न हुए हैं । कुछ चीजों के लिए इन जातियों की भाषाओं में जो नाम हैं वे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं और इससे विदित होता है कि कभी कोई ऐसा समय था कि जब यह सब एक जाति थे और एक ही भाषा बोलते थे । 'बाप' के लिये इन सब भाषाओं में एक ही शब्द है केवल कुछ कुछ हेर फेर हो गया है—जर्मन भाषा में 'पैटर' यूनानी में 'पैटर' लैटिन में भी 'पिटर' और संस्कृत में पितृ । समय जाते जाते यह जाति (आर्य) संख्या में बहुत बढ़ गई, और इसके भिन्न २ भाग भिन्न २ दिशाओं को चले गये और भिन्न भिन्न जाति बन गये । उनमें परस्पर इतने अंतर और भेद होने लगे, और उन्होंने उस भाषा में, जिसको कभी वे सब बोलते थे, इतने हेर फेर कर दिये कि सब की एकही भाषा होने के बदले प्रत्येक जाति की जुदी जुदी एक एक भाषा हो गई । उस आर्य जाति की एक शाखा भारतवर्ष को गई, दूसरा भाग उत्तरीय यूरप को गया और और शाखाएं इटली, यूनान और एशियामाइनर में फैल गईं । यूनान और इटली वालों से हिन्दू और जर्मनी वाले बहुत पहिले जुदा हो गये थे, परंतु यूनान और इटली वाले इन के जुदा हो जाने के बहुत दिनों पीछे तक

एक दूसरे से न्यारे नहीं हुए। और इसी कारण से इन दोनों की भाषा एक दूसरे से बहुत मिलती है और दोनों में से किसी की भाषा भी संस्कृत और जर्मन से इतनी अधिक नहीं मिलती। एशियामाइनर के पश्चिम की कुछ जाति असल में यूनानियों से उन दिनों में मिलती हुई थी ऐसा जान पड़ता है। और यह संभव है कि प्राचीन काल में एशियामाइनर के तट के मनुष्य सागर उतर कर यूनान में जा बसे हों, और उन्होंने वहां राज्य स्थापित किये हों। इसके उपरान्त यूनानियों के झुंड एशिया के तट पर जा बसे और इस कारण से यद्यपि यूरोपीय यूनान मुख्य यूनान कहलाता है, तथापि एशियामाइनर का पश्चिमी तट का देश भी यूनान ही कहलाता था, क्योंकि वहां के रहने वालों का वृत्तान्त भी यूनान के ही इतिहास में पाया जाता है। यूनानी अपने को यूनानी न कह कर हेलेनीज कहते थे, और प्रत्येक जनस्थान, जिसमें हेलेनीज (यूनानी) रहते थे 'हेलाज' कहलाता था, चाहे वह एशिया में होता चाहे यूरोप अथवा एफ़्रिका में। हमको अब मालूम होगा कि यूनानी कितने साहसी थे, और उन्होंने मेडिटेरेनियन सागर के दूर के भागों में और काले सागर के तट पर नई बस्तियां कैसे स्थापित की थीं।

३—यूनान एक राज्य नहीं वरन् बहुत सी रियासतें थीं—प्राचीन काल के यूनान देश और इङ्गलैण्ड जैसे अर्वाचीन देश में बहुत अंतर है। सब इङ्गलैण्ड एक ही प्रधान राज्यसत्ता में है, जैसे एक ही महाराजा जो पार्ल्यामेण्ट के कथनानुसार काम करते हैं और पार्ल्यामेण्ट में जो कानून पास होते हैं सब जाति भर को वे पालन करने पड़ते हैं। प्रत्येक नगर को अपने अपने यहां की थोड़ी थोड़ी बातों का प्रबंध करना पड़ता है जैसे सड़क बनवाना या गलियों में रोशनी करना इत्यादि परंतु सब देश

भर के कानूनों और सरकार के अधीन है। कुल इङ्गलैण्ड भर के लिये एक ही जल सेना और एक ही स्थल सेना है, प्रत्येक नगर की सेना जुदी जुदी नहीं है और इङ्गलैण्ड का कोई हिस्सा शेष इङ्गलैण्ड से जुदा होने का कभी विचार नहीं करेगा। परंतु यूनान इस भांति का एक देश नहीं था। वह छोटे छोटे जिलों में बटा हुआ था और प्रत्येक जिले की गवर्नमेंट जुदा जुदा थी। कोई छोटा नगर भी एक पूरी रियासत हो सकती था और वह अपने आस पास की रियासतों से स्वतंत्र हो सकता था, चाहे उसमें केवल कुछ मील भूमि और कई सौ पुरुष हों। तिस पर भी उस की गवर्नमेंट और कानून जुदे होते थे, और सेना भी अलहदा ही होती थी चाहे वह बृटिश सेना की एक रजिमेंण्ट से भी गिनती में कम क्यों न हो। एक अंग्रजी कौंटी (जिले) से भी कम स्थान में कई स्वतंत्र नगर होते थे, जिनमें कभी कभी परस्पर युद्ध और कभी कभी प्रीति होती थी। अतः हम जब यह कहते हैं कि एशियामाइनर का पश्चिमी तट यूनान का भाग था तब हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि यह टुकड़ा और यूनान एक ही गवर्नमेण्ट और कानूनों से शासित होता था। यह तो हो ही क्यों कर सकता था। क्योंकि दोनों ही छोटे छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभक्त थे। परंतु हमारा यह अभिप्राय है कि एशियामाइनर के पश्चिमी किनारे वाले भी उतने ही यूनानी थे जितने कि युरोपीय यूनान निवासी थे। वे वही भाषा बोलते थे; और उन में प्रायः वेही रीतियां थीं और दूसरी जातियों से पृथक पहिचाने जाने के लिये वे अपने आप को हेलेनीज कहते थे और संसार की सब शेष जातियों को वे बार्बेरियन (बर्बर) कहते थे।

बार्बरियन का अर्थ यह है कि जिन की भाषा न समझी जा सके और वे उनके कथन को समझ नहीं पाते थे ।

४–यूनान पर्वतों से विभक्त है--यूनान आरम्भ से ही इङ्गलेण्ड की भांति एक राज्य नहीं है उसमें छोटी छोटी रियासतें हैं जो बहुत सी हैं। होमर ने उन राजाओं की, जो अपनी २ सेना ट्राय के अवरोध को ले गये थे, एक बड़ी सूची दी है, और यूनान के इतिहास भर में हमको बहुत सी छोटी छोटी रियासतों का वृत्तान्त मिलता है । इसका क्या कारण है ?

कारण यह है कि स्वभाव से ही यूनान पर्वतों द्वारा छोटे छोटे भागों में बँटा हुआ है । इङ्गलेण्ड के दक्षिण में मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान को सरलता से जा सकता है और यदि कहीं बीच में पर्वत हैं भी तो वे इतने ऊंचे या खड़बड़ नहीं हैं कि हम उन के ऊपर हो कर जा न सकते हों। परंतु यूनान में बहुत से ऐसे पर्वत हैं कि जिन पर होकर जाना वास्तव में कठिन है और जिनके बीच की उपजाऊ भूमि जिनमें मनुष्य जा बसे थे, एक दूसरी से बिल्कुल छिकी (कटी) हुई हैं । जहाज के अधिक प्रचार न होने से पहिले वे कठिनता से कभी किसी को अपनी घाटी के बाहर देख पाते थे । जब हम यूनान का मिश्र देश या बाबुल से मिलान करते हैं तब हमको विदित हो जाता है कि इसके बंटे हुए होने के कारण यूनान में इन देशों की अपेक्षा कितने भेद हो गये । मिश्र नील नदी की दोनों ओर की उपजाऊ भूमि को कहते हैं । आप जहाज में बैठ कर वायु--वेग से नील में कहीं से चढ़ कर किसी स्थान पर उतर सकते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि मिश्र के एक भाग से दूसरे भाग में जाना सदा सरल था । अतः बहुत

प्राचीन काल से मिश्र अविभक्त और एक ही देश है और उस पर एक ही राजा राज्य करता रहा जैसे कि फैरेओज राजा जिस का बाइबिल में वृत्तांत है । और यही बात बाबुल के विषय में भी है जो जेहू (यूफ्रेटीज) नदी के आस पास है और बहुत उपजाऊ है । इस देश को छोटे छोटे टुकड़ों में बांटने को कोई चीज नहीं है और केवल एक राजा एक बहुत बड़े जनस्थान पर राज्य करता था, और बड़ी सेना एकत्रित कर सकता था । राजाओं की शक्ति और प्रभुता से प्रजा के ऊपर दहल बैठी रहती थी और प्रजा का बिचार राजा का बिरोध करने का कभी नहीं होता था । अतः बाबुल में राजा सर्वशक्ति अपने हाथ में ले बैठा और केवल राजकीय सत्ता स्थापित हो गई और नेबुकडनेजर (दानियाल ३) जैसे राजा हुए और प्रजा की दशा गुलामों से कुछ ही उत्तम थी ।

यूनान में बात ही दूसरी थी। वहां देश भर में कोई भी भूमि का टुकड़ा बहुत लंबा चौड़ा नहीं है । पहाड़ों ने उस को बहुत छोटे छोटे जिलों में बांट रक्खा है और इन सब जिलों में एक एक राजा था, जो केवल खान्दानों के मुखियों के सरदारों की भांति था । उस के पास इतना द्रव्य नहीं होता था कि वह पूर्व के राजाओं की भांति ऊंचे ऊंचे और सजे हुए महलों में रहता और प्रजा पर ऐसी धौंस जमाता कि वे उसको एक भांति का देवता समझने लगती और न वह बहुत बड़ी सेना जमा कर सकता था, जिससे आस पास के देश को नष्ट कर देता और प्रजा को अपना गुलाम बना लेता ।

८—यूनानी और फेनेशियन—अतः हम यूनानियों को छोटे छोटे झुंडों में बँटा हुआ पाते हैं जो यूरोपीय यूनान और पास

के टापुओं में बसते थे और बिलकुल ऐसी ही एक जाति एशिया-माइनर के पश्चिमतट पर रहती थी। धनवान पुरुषों के पास भेंड़े और गायें होती थीं, अनाजों के खेत और अंगूरों की बेलों के बाड़े होते थे, और निर्धन पुरुषों के या तो छोटे छोटे खेत होते थे और या वे धनाढ्यों के खेतों में मजदूरी करते थे। परंतु समुद्र के तट पर एक नवीन और अधिक व्यापार-रत जीवन का संचार होने लगा था। यहां पर यूनानी पहिले पहल फेनेशियन (केनाइट) सौदागर से, जो टाइर या साइडन से आया था मिले। यह फेनेशिया वाले दूर दूर के देशों से व्यापार करने लगे थे परंतु यूनानी अभी तक सीधे सादे कृषक ही थे। फेनेशिया वाले यूनान वालों से बहुत पहले से, वर्णमाला और तोलने की तुला और माप से काम लेना जानते थे। उन्होंने बहुत सी बातों की खोज की थी, या उनको दूसरी पूर्वीय जातियों से सीख लिया था। उन्हों ने समुद्र के एक जन्तु के घोंघे से पर्दे और धनवान मनुष्यों के वस्त्र रंगने का एक प्रकार का लाल रंग बनाना सीख लिया था। वे खानें खोदना और धातु के पदार्थ बनाना भी जानते थे। जब लेबानन पर्वत के अच्छे अच्छे वृक्ष काट डाले गये और फेनेशिया वालों को अपने जलयान बनाने की लकड़ी को खोजने बाहर जाना पड़ा तब उन्होंने बलूत और देवदारु इत्यादि के वृक्षों को इजियन सागर के तट पर अधिकता से पाया। उनको यह भी विदित हो गया कि यूनान के बारह--मासी बलूत की जड़ चमड़ा रंगने के काम आ सकती है और उसके फलों का भी रंग बन सकता है। इन्हीं वनप्रदेशों में उन्हें प्रायः तांबा, लोहा और चांदी भी मिले। अतः यह फेनेशिया वाले अपने जहाजों में टाइर या साइडन के बने हुए असबाब का लाद करे यूनान के

सागर के तटों पर अधिक शीघ्र शीघ्र आने लगे । वे उस असबाब को यूनानियों से लकड़ी या ऊन से बदल लेते थे और उस के बदले नर और नारियों तक को ले लेते थे जिन को यूनानी गुलामों की भांति बेचते थे । कुछ समय में यूनानी फेनिशिया वालों की सब बातें जानने लगे । उन्हों ने उन की वर्णमाला और माप तोल सब जान ली और फेनेशिया वालों ही के से जहाज बना कर सागर के तट के पास रह कर सागरयात्रा करने लगे। पहिले जब वे सागर यात्रा करते थे तो यह यात्रा इतनी व्यापार की इच्छा से नहीं होती थी जितनी की जल में लूटने की चेष्टा से । जल का लुटेरापन दोष नहीं समझा जाता था। वीर और साहसी मनुष्यों की एक टोली अपने जहाज पर बैठ कर समुद्र के किनारे के पास पास यात्रा करती थी और यदि किसी व्यापारी का जहाज देख पड़ता था तो उसे लूट लेती थी। यह उतर कर तट पर के गावों को भी लूट लेती थी। इन लुटेरों के भय से गांव वाले प्रायः अपने अपने पुराने घरों को छोड़ देते थे और समुद्र के किनारे से दूर जा बसते थे।

६—होमर की कविता के ग्रंथ—यूनान में बहुत प्राचीन काल से दो बड़े बड़े कविता के ग्रंथ चले आते हैं जिन को यूनानी लोग होमर नामक एक अकेले कवि का बनाया हुवा समझते हैं। इन में एक का नाम इलियड है, जिस में ट्रोय या इलियन के अवरोध में के वीरों की वीरताओं का वृत्तान्त है । इन क़िस्सों के अनुसार इलियन के राजा प्रियम का पुत्र पेरिस स्पारटा के राजा मेनेलास की स्त्री को भगा ले गया । इस का नाम हेलेन था । उस को पुनः छीनने के विचार से यूनानी लोगों ने मिलकर ट्रोय को घेर लिया और दश वर्ष के अवरोध

के उपरान्त जय पाई और ट्रॉय ले लिया । इलियड में यूनान वालों की ओर के सब से बड़े योद्धा का नाम ऐकिलीज है और ट्रॉय वालों में हैक्टर । ट्रॉय के लिये जाने पर आडिसि-यस ने जो जो वीरता और साहस के काम किये हैं और भ्रमण किये हैं उन का वृत्तान्त दूसरी पुस्तक में है जिस का नाम आडिसी है । आडिसीयस इथाका का राजा था और यूनान भर में सब से अधिक बुद्धिमान था । इलियड को युद्ध का चित्र जानना चाहिये और आडिसी में आडिसियस के खान्दान का शान्तिमय चित्र खींचा गया है । उस में बिचित्र बिचित्र स्थानों और पुरुषों का भी वृत्तान्त है जो कदाचित पुराने समुद्र के यात्रियों ने लौट कर घर आकर कहा होगा और जैसा कि अब हम ग्रिम्स फेअरी टेल्स * में पढ़ते हैं । यद्यपि होमर की पुस्तकों में वह बातें नहीं लिखी हैं जो वास्तव में हुई हों तथापि उनसे हम उनके रचे जाने के समय के यूनानियों के रहने के ढंग का कुछ अनुमान कर सकते हैं । प्रत्येक जिले पर एक एक राजा राज्य करता था जो पुरोहित का भी काम करता था और सर्व साधारण की ओर से प्रार्थना पढ़ता और बलिदान दिया करता था । राजा के साथ थोड़े से सरदार काम करते थे जो सभासद कहलाते थे, जिन को राजा एक कौंसिल करके एकत्र करता था और जिस काम करने का उस का बिचार होता था उस में उन की सम्मति लेता था । प्रत्येक सरदार को अपनी सम्मति प्रकाश कर देने का अधिकार था

* ग्रिम्स फेअरी टेल्स के कुछ अच्छे २ किस्से चुन कर मैंने उनका अनुबाद हिंदी में किया है । वे पहली बार ब्रम्ह प्रेस इटावा में कुसुमबाटिका नाम से छप चुके हैं (अनुवादक) ।

और यद्यपि राजा को यह बंधन नहीं था कि वह उन की सम्मति के अनुसार ही काम करे, तथापि हम को यह विदित हो सकता है कि वास्तव में सरदारों की कौंसिल (सभा) राजा की शक्ति को कैसे कम कर सकती है। और जब राजा उस कार्य के करने का संकल्प कर लेता था तब वह बाजार लगने के स्थान पर सर्व साधारण प्रजा को एकत्र करता था और अपना बिचार उन को सुना देता था। जब वे लोग इस भांति मिलते थे तो सरदार लोग प्रजा के प्रति बोल सकते थे, परंतु सर्व साधारण में से किसी को बोलने की आज्ञा नहीं थी, और न इस बात का कुछ ख्याल ही किया जाता था कि इन लोगों की इस विषय में क्या सम्मति है। होमर के ग्रथों में सर्व साधारण का तो बहुत कम जिक्र है और राजा को पूर्णाधिकारी होने से साधारण प्रजा नहीं वरन् सामँत लोग ही रोकते थे। एक बार थर्साइटज नामक एक साधारण मनुष्य ने अपना विचार कह दिया था तो आडिसियस ने उस को बहुत पिटवाया और सब मनुष्य भी आडिसियस ही की तरफदारी करने लगे। सब और देशों के आरंभ काल की भांति होमर का समय भी लड़ाई झगड़े से भरा हुआ था। युद्ध बड़ी निर्दयता से किया जाता था और इलियड में एकिलीज के कुछ ऐसे कामों का उल्लेख है जिन को हम बहुत अमानुषी कहेंगे। जल और थल द्वारा लूट मार करना तो एक साधारण बात थी, यदि मनुष्य अपने आप अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे तो वे स्वयं गुलाम (दास) बना लिये जा सकते थे और उन का माल असबाब हर लिया जाता था। धोखा बुरा नहीं समझा जाता था वरन् यदि चतुरता पूर्वक धोखा दिया जाता था तो उसकी प्रशंसा होती थी। परंतु इसके साथ में होमर के

काल में बहुत से सुंदर और उत्तम गुण भी थे। एक घर के पुरुष एक दूसरे से प्रेम रखते थे और मान करते थे, माता पिता के प्रति अत्यंत भक्ति रक्खी जाती थी, पति स्त्री कामना दूसरे देशों की अपेक्षा बल्कि यह कहिये कि स्वयं यूनान के पुराने काल की अपेक्षा, अधिक करता था। गाढ़ी और सच्ची मित्रता होती थी और कभी कभी स्वामी और दास में भी सच्चा स्नेह होता था।

७—आरंभ के राज्य—क्रीट और ट्रॉय—इस समय की घटनाओं का वृत्तान्त हमको बहुत कम ज्ञात है। इतने पुराने समय का असली इतिहास तो मिलता ही नहीं केवल किस्से कहानियां मिलती हैं जिन में सत्य का अंश बहुत थोड़ा है। इन किस्सों में क्रीट के एक बड़े राजा माइनास का हाल है। यूनानियों का विश्वास था कि माइनास बहुत शक्तिमान तथा न्यायी राजा था और वह यूनान के सब द्वीपों और देशों पर राज्य करता था, जिस ने समुद्री डाकुओं को समाप्त करके शांति और निडरपन स्थापित किया। उनका यह भी विश्वास था कि बड़ी दृढ़ता और न्याय से राज्य करने के कारण वह मृतकों की आत्माओं का न्यायकारी (इसको 'यमराज' समझिये) बना दिया गया है। इस बात में तो कुछ संदेह ही नहीं कि उस समय में इतनी विस्तृतशक्ति का राजा कोई नहीं था जितना यूनानी माइनास को बतलाते हैं परन्तु शायद यह बात सत्य है कि क्रीट में यूनानी के और स्थानों की अपेक्षा उलरसिक जीवन पहले आरंभ हुआ था। और यह भी सत्य है कि क्रीट के राजाओं ने समुद्र के डाके रोकने के लिये कुछ उपायों का उपयोग किया था। एशियामाइनर के किनारे पर सब से पुराने राज्यों में से एक ट्रोआज़ या ट्रॉय

था। यह हेलेस्पन्त के दक्षिणी सिरे पर था, जो कि उन दो स्थल-विभाजकों में अधिक दक्षिण वाला है, जो काले सागर और मेडिटरेनियन सागर को जोड़ते हैं। ट्रोय में महल समुद्र से हट कर वहां पर बना हुवा था जहां से पहाड़ी ऊंची होने लगती है और यहीं पर ट्रोय नगर था। ट्रोय के अवरोध की कथायें कदाचित् केवल सुन्दर किस्से ही हैं, परंतु इस में संशय नहीं है कि प्राचीन काल में वहां पर ट्रोय नगर अवश्य था। सो हमको यह सोचना न चाहिये कि ये पुराने नगर आज कल के जैसे बड़े शहर होंगे। ये आज कल के गावों से कुछ ही बड़े होते थे और इन के चारों ओर चारदीवारी होती थी।

८—पेलोपोनिसस के राजा लोग—उन बड़े घरानों के विषय में, जिन्हों ने थेबीस और पेलोपेनिसस में राज किया था, बहुत से किस्से कहे जाते हैं और उन की लड़ाइयों और दुर्भाग्यों के विषय में भी बहुत कुछ कहा जाता है। इन किस्सों में जितने राजाओं का हाल है उन में माइसनी का राजा एगेमनन सब से बड़ा था और होमर ने लिखा है कि ट्रोय के अवरोध में सब यूनानी सेना का मुखिया यही था। अब हम को यह याद रखना चाहिये कि यूनानी लोग मिल कर इस भांति से कभी काम नहीं करते थे कि जैसे होमर ने लिखा है तो भी एगेमनन के हाल में चाहे कितनी ही कम सचाई क्यों न हो परंतु माइसनी और अर्गोलिस जिले के और और स्थानों में अवश्य बड़े बड़े राजा हो गये हैं क्योंकि उन के महलों की भीतें अभी तक वर्तमान हैं। ये दीवारें पिछले दिनों के यूनानी लोगों की बनाई हुई दीवारों की भांति नहीं हैं। ये बहुत बड़े बड़े पत्थरों की शिलाओं की बनी हुई हैं

और ये पत्थर इतने बड़े बड़े हैं कि यूनानी इन दीवारों को देवों (राक्षसों) का बनाया हुआ समझते हैं। वे इन दीवारों को 'साइक्लोपियन" अर्थात साइक्लप्स (राक्षस) की बनी हुई कहते हैं। अर्गालिस का टाइरिस नामक जगह में साइक्लोपियन दीवारें है जो पच्चीस फीट मोटी है और जिनके बीच में एक खुली हुई घोघ चली गई है और माइसनी की दीवारें इनसे भी अधिक चतुराई से बनी हुई है और फाटक पर दो बड़े बड़े सिंह खुदे हुए हैं। इनसे थोड़ी ही दूर पर एक जमीनी इमारत है जिसके मुहाने पर एक सीसे की किवाड़ (चादर) किसी समय लगी रहती थी। यहां पर राजाओं का कोश रहता था और यहां ही वे लोग गाड़े जाते थे।

९—डोरिसवालों का पेलोपेनिसस में आना, और एशिया में नई वस्तियां (उपनिवेस) बसाना—यद्यपि अर्गालिस के राजाओं ने ऐसे ऐसे दृढ़ महल बना लिये थे तथापि उन के हाथ से राज निकल गया। यूनान के उत्तर में एक कट्टर और लड़ाकी जाति, जो डोरिस वाले कहलाते थे, रहा करती थी। यह अपना घर बार छोड़ कर दक्षिण की ओर चले कि जिस में कोई उपजाऊ भूमि खोज लेवें। पेलोपेनिसस में आये और वहां की रहने वाली जातियों से, जो एकयावाली और आयोनियावाली कहलाती थीं, अधिक बलवान निकले। बहुत से आयोनियावालों ने डोरिस वालों से शासित होना पसंद नहीं किया। वह एटीका के रहने वाले और आयोनिया से मिल गये और जहाज पर चढ़ कर एशिया माइनर की ओर चल दिये और वहां पर ये लोग तट के मध्य भाग पर जा बसे और सामने के टापुओं मे भी रहने

लगे और माइलटस और एपिसस इत्यादि नगर बसाये जो आयोनिक कलोनियां कहलाती हैं । अथेन्स (एटीका की राजधानी) इन आयोनिक कलोनियों का संरक्षक बनता था यद्यपि एटीकावाले जो गये हुए थे उनकी संख्या पेलोपोनिसस के आयोनियनों से कम थी । इस के उपरान्त बहुत से एकिया वाले भी पेलोपोनिसस से चल दिये और लसबास द्वीप में और एशियामाइनर के पश्चिमी तट के उत्तर में जा बसे । परंतु इस प्रदेश में इन की कलोनियां एकियन कलोनियां कहलाये जाने के बदले एओलिक कलोनियां कहलाती थीं । जब समुद्र के उस पार के उत्तम जल वायु और भूमि की उपज का हाल डोरियन लोगों ने सुना तो वे भी जहाजों पर चल दिये और क्रीट और एशियामाइनर के पश्चिम तट के दक्षिण में जा बसे । उनके बसाये हुए नगरों को डोरियन कलोनियां कहते हैं और उनमें रोडीज की कलोनी सब से अधिक विख्यात थी। सो डोरिसवालों के पेलोपोनिसस में आने से एकियन राजाओं की शक्ति, जिन का होमर ने हाल लिखा है, समाप्त हो गई, और एशियामाइनर में बहुत से बड़े बड़े शहर बस गये । परंतु हम को यह नहीं समझ लेना चाहिये कि डोरिसवाले एक साथ ही आ गये और उसी ही समय उन्होंने देश जीत लिया—ये दोनों बातें सैकड़ों साल तक होती रही होंगी ।

१०—पेलोपोनिसस में डोरिसवालों का दौरदौरा—डोरियन लोग संख्या में इतने तो थे ही नहीं कि वे पेलोपोनिसस भर में फैल जाते, सो उन्होंने उत्तर में कोरिंथ की खाड़ी के किनारे पर एकियनों को बिना छेड़ छाड़ किये शांति पूर्वक रहने दिया । अतः यह प्रान्त एकिया कहलाता था और इसमें

बारह नगर थे। और डोरिसवालों ने पेलोपोनिसस के बीचके पहाड़ी देश अर्केडिया को भी नहीं जीता। अर्केडिया पहलेही का सा बना रहा और उस में बहुत कम परिवर्तन हुए अतः अर्केडियन (अर्केडियावाला) का अर्थ ही गंवार पुरानी वज़ः वाला इत्यादि हो गया। पश्चिम में समुद्र के किनारे पर यूनान की दूसरी उत्तरीय जाति 'इटोलियन' ने एलिस नामक प्रान्त पर अपना दखल कर लिया। शेष पेलोपोनिसस के मालिक डोरियन लोग ही बने रहे और इन की चढ़ाई के बाद ही से पुराने कवियों की कहानियें समाप्त होती हैं और इतिहास आरंभ हो जाता है।

११--सेनायें और सभायें—क्योंकि यूनान की रियासतें छोटी छोटी थीं इस कारण से कोई अलाहिदा सेना इस प्रकार से नहीं रक्खी जाती थी जैसी कि हमारे यहां बरन एक विशेष अवस्था तक की प्रजा ही को स्वयं लड़ना पड़ता था और ये ही युद्ध के समय सिपाहियों का काम देते थे। यूनानी रियासतों के छोटा होने का दूसरा फल यह हुवा कि प्रत्येक रियासत में सब प्रजा, जिसको शासन में कुछ भाग दिया गया होता था, किसी विशेष स्थान में एकत्र हो सकते थे। एक बड़ी इंगलैंड जैसी अर्वाचीन रियासत में यह असंभव है कि सब प्रजा एक जगह पर इकट्ठी हो सके, इस कारण से नगरों और कांउण्टियों (प्रांतो) में मनुष्य चुन लिये जाते हैं कि जो पार्लीमेंट में अपने चुनने वालों की सम्मति प्रगट करते हैं और उनके प्रतिनिधि कहाते हैं।

यह रिप्रेजेंटेटिव गवर्मेंट (Representative government) कहलाती है और इस से एक बड़े देश का स्वतंत्र होना और भली भांति शासित होना संभव हो जाता है। इस के विपरीत

वह गवर्नमेंट समझना चाहिये कि जहां की सब ही प्रजा इकट्ठी हो, जैसी कि यूनान में होती थी परंतु इस प्रकार की गवर्नमेंट छोटी ही रियासत में संभव है ।

१२—यूनान के देवता और हीरो * [वीर पुरुष]—यूनानी बहुत से देवताओं को मानते थे और प्रत्येक स्थान पर दूसरी जगहों की अपेक्षा किसी विशेष देवता की अधिक आराधना होती थी । वे समझते थे कि एक एक देवता किसी विशेष विषय और स्थान की अधिक चिन्ता रखता था और दूसरे स्थानों और विषयों से कुछ संबंध नहीं रखता था । उनका विश्वास था कि एथीनी देवी एथेन्स नगर की रक्षा करती है और इस कारण वहां एथीनी देवी के बराबर किसी का मान नहीं होता था । पहिले प्राकृतिक पदार्थों ही की यूनानी पूजा करते थे—जैसे एपालो नाम से वे पहिले सूर्य की पूजा करते थे, परंतु इसके उपरांत उन्हों ने इन को देवता मान लिया और इन के कामों के किस्से बना लिए । मनुष्यों में और यूनानी देवताओं में केवल इतना अंतर था कि देवताओं में बहुत शक्ति होती थी और वे अमर होते थे, उनके सन्दरशन को मनुष्यों और स्त्रियों की सी मूर्तियां बनाई जाती थीं परंतु ये बहुत सुन्दर और सुवृत्त होती थीं । यूनानी लोगों ने मिश्रवालों की भांति जानवरों की पूजा कभी नहीं की और हिंदुओं की भांति वे अपने देवताओं की शकलें भयानक भयानक † बनाते थे ।

* हीरो का ठीक २ अनुवाद हिंदी में नहीं हो सकता है—यह आधे देवता माने जाते थे और बड़े वीर होते थे ।

† यह बिलकुल ठीक नहीं है । प्राचीन काल की इंगलैंड की मूर्तियों से तब भी हिंदुओं के देवताओं की मूर्तियां सुंदर ही हैं—अनुवादक ।

ज़ीयस देवताओं का राजा था। हीरो देवता नहीं होते थे परंतु वे उस कोटि के मनुष्य होते थे जो साधारण मनुष्यों से अधिक बलवान् होते थे और जो प्राचीन काल में रहते थे और जिन्हों ने ऐसे ऐसे विचित्र काम किये थे जिन को वर्तमान मनुष्य नहीं कर सकते। इन देवताओं के बिषय में जो कहानियां कही जाती हैं सो 'मिथ्स' कहलाती हैं। सब गांवों के 'मिथ्स' अलहदा अलहदा होते थे और जब मनुष्यों ने इन सब को एकत्र किया तो बड़े बड़े ग्रंथ बन गये। सब मिथ्स मिल कर 'मिथॉलोजी' कहलाते हैं। यूनानी केवल इन 'मिथ्स' को सच्चा ही नहीं समझते थे, वरन् कोई ऐसा काम ही न था जिस के किस्से बना कर वे देवताओं या हीरोओं का किया हुवा उस को न कह दें। प्रत्येक नगर के मिथ्स होते थे जो उस की रीति रसमों की उत्पत्ति बताते थे अर्थात् यह बतलाते थे कि यह रीति कैसे निकली। दृष्टान्ततः—यदि किसी स्पार्टावाले से यह पूछा जाता कि स्पार्टा में सदा दो राजे एक साथ क्यों होते हैं तो वह उत्तर देता कि "इसलिये हीरो 'अरिस्टा-डिमस,' जो पहिले पहल स्पार्टनों को देश में लाया, उसके दो जुड़िया बच्चे थे"।

देवताओं की पूजा इस प्रकार होती थी कि उनकी स्तुति की जाती थी और बलिदान चढ़ाया जाता था, परंतु वह पूजा आधुनिक पूजा की भांति नहीं होती थी और उस मे सब कोई योग नहीं दे सकता था। आरंभ में कुछ घर मिलकर किसी मुख्य देवता की पूजा करते थे। और कोई पुरुष जो इन घरों का नहीं होता था इन में भाग नहीं ले सकता था।

१३—आदि के सम्मेलन धार्मिक थे। यूनान में पहिले पहल जो सम्मेलन हुवा था और वह जिस भांति का था अब हम उस को लिखते हैं। शांति की संधियों या राजाओं के परस्पर के मेल मिलाप से बहुत पहिले वह जातियां जो एक दूसरे के पास पास रहती थीं किसी विशेष स्थान पर किसी देवता के पूजन को मिल जाया करती थीं और संधि में यह ठहरा लिया करती थीं कि उस देवता के पूजन—स्थान को पवित्र मानेंगे चाहे परस्पर एक दूसरे से लड़ाई भी हो, और उस की सब प्रकार की क्षति से मिलकर रक्षा किया करेंगे। नियत समय पर सदा धार्मिक मेले हुवा करते थे, जिनमें सब जातियां, जो संधि कर लेती थीं, भाग लिया करती थीं। इन में सब रियासतों से एक एक अफसर यह देखने आता था कि मन्दिर की यथा योग्य चौकसी की जाती है या नहीं और उस की भूमि या स्वयं उस को किसी प्रकार की हानि तो नहीं पहुंची है। धीरे धीरे मांदिर विषयक संधि करते करते कुछ जातियां अन्य विषयों पर भी ठहराव कर लेती थीं जैसे, " यदि हम तुम में परस्पर युद्ध होगा तो अमुक निर्दयता के काम नहीं करेंगे "। धीरे धीरे किसल कर इन संधियों का रूप और भी परिवर्तित होने लगा और ऐसी संधियां भी होने लगीं जिन से परस्पर सदा शांति रखना ठहर जाता था और शत्रुओं से लड़ने के लिये ये सब मिलने को भी राजी हो जाते थे। जिस देवता की वह सब पूजा करते थे उस ही के सन्मुख इन संधियों के पूरा करने की शपथ भी करते थे। ऊपर के कहने के अनुसार ही इन सब से पहले के सम्मेलनों का संगठन हुवा था। ऐसे सम्मेलनों में

कोई न कोई रियासत शेष रियासतों से अधिक शक्तिमान् होती थी ; और यह ही उस सम्मेलन भर की गणनायक या मुखर कहलाती थी । क्योंकि ये समितियां धार्मिक (मज़हबी) सम्मेलनों से निकलती थीं और देवता के सन्मुख शपथ करने के उपरान्त ये स्थापित की जाती थीं । इस कारण से पिछले दिनों के यूनानी जब कभी सम्मेलन स्थापित करते थे तो वे सब देवता की पूजा करना ठहरा लेते थे और उस सम्मेलन के सब मनुष्य शामिल होते थे ।

१४—डेल्फी का सम्मेलन—प्राचीन काल में एक धार्मिक संस्था यूनान के उत्तर में थी । डेल्फी में एपालो देवता के पूजन करने और मन्दिर की रक्षा करने के निमित्त बारह राजाओं ने संधि की थी । और मंदिर संबंधी बात चीत करने को इन बारहों रियासतों से प्रतिनिधि आया करते थे । इस सम्मेलन को " डेल्फी की ऐम्फिक्टियोनी " कहते थे और यह उन्नति हो कर इतनी नहीं पहुंच सकी कि इसके संधि--बद्ध राजे एक दूसरे की उन्नति करने का प्रयत्न करते । एक सामन्त दूसरे से लड़ता रहा परन्तु दो बातें न करने की साक्षी कर ली थी और यह ठहरा लिया था कि लड़ते समय एक तो एक दूसरे के नगर को विध्वंस नहीं किया करेंगे दूसरे जब नगर का अवरोध करेंगे तो बहती हुई नहर इत्यादि को नहीं काट दिया करेंगे [नहर काटने से नगर के भीतर पानी जाने से रोक दिया जाता था और नगरवासी तड़प तड़प कर प्यासों मर जाया करते थे] । इन प्रतिनिधियों के मिलने को ऐम्फिक्टियॉनिक कौंसिल अर्थात् पड़ोसियों की पंचायत कहते थे ।

१९—डेल्फी के देवताओं के बचन—डेल्फी के मंदिर में बारह राजाओं ने संधि की थी और एम्फिक्टियानी पंचायत भी यहां ही होती थी, इसलिये यह कोई साधारण जगह न रही। यहां बरदान दिये जाने लगे और जो कोई कुछ पूछने एपालो देव की शरण आता था उन मंदिरों के पुजारी कुछ बताकर कह देते थे कि एपालो जी यह उत्तर देते हैं। मंदिर के पुजारी लोग बहुत चलते पुर्जे थे। दूर दूर तक की बातों की टोह लिया करते थे। जब कोई पुरुष कुछ बिधि पूंछने एपॉलो के पास आता था तो यह बहुत सुसम्मति दे देते थे; यहां तक कि मंदिर का नाम यूनान भर के अतिरिक्त और भी दूर दूर के देशों में फैल गया। ऐसा जान पड़ता है कि इन पुजारियों ने पहिले तो यूनान की अच्छी सेवा की और न्याय और भलाई के बिचार मनुष्यों के हृदयों में देवता के नाम से जमाये। उन्होंने यूनानी रियासतों में, जो एक दूसरे से अलहदा थीं, यह विचार पैदा कराया था कि हम सब एक हैं और ईश्वरीय नियम भी एक ही है जिसका हम सब को पालन करना उचित है। परंतु जब पुजारी लोग रियासतों के परस्पर के झगड़ों में और युद्धों और सरकारी बातों में भी बरदान बाजी करने लगे तब शक्ति सम्पन्न पुरुष इन्हें घूस देकर अपनी ओर कर लेते थे और इच्छित बरदान ले लिया करते थे। इस प्रकार से वहां के देव बचन की इज्जत (प्रतिष्ठा) जाती रही, और फारस से लड़ाई में, जिसका हाल हम पढ़नेही वाले हैं, उन्होंने यूनानी लोगों को वीरता से सामना करने के लिये उत्साहित करने के बदले हतोत्साह करके और भी अपनी क्षति की।

दूसरा पाठ

पेलोपोनिसस देश का ईसूमसीह के ५०० बरस पहले तक का हाल–कालोनियां

१—डोरिसवाले और प्राचीन निवासी—पेलोपोनिसस थोड़ा थोड़ा करके जीता गया क्योंकि पेलोपोनिसस के रहने वालों की अपेक्षा डोरिस लोगों की संख्या बहुत कम थी और इस देश में बहुत जगहों के रहने वाले बड़े कट्टर थे। डोरिस वाले छोटे छोटे टुकड़ों में बटगये और प्रत्येक टुकड़ा एक एक स्वाधीन रियासत हो गया। ये जहां जहां बसे वहां वालों को इन्होंने नाश न करके उनके साथ अपने से छोटी जाति की भांति बर्ताव करने लगे और उन को शासन में भाग नहीं लेने देते थे।

स्पार्टा में पहिले के रहने वालों को फिर कभी अधिकार मिलेही नहीं, परंतु अधिकांश बस्तियों में डोरियन लोग (डोरिस-वाले) बहुत दिनों तक शासन में सर्वाधिकारी बने नहीं रह सके। इस पाठ में हम भिन्न भिन्न रियासतों के डोरियनें और विजय किये हुए लोगों के परस्पर के निपटारे की चोटों का हाल पढ़ेंगे।

२—स्पार्टा—युरोतास नदी के तट पर उस के मुहाने से बीस मील की दूरी पर तेजतस नामक पहाड़ है इस की तली में बसे हुए, अनाज के खेतों से भरे हुए, लैसेडेमन या स्पार्टा नाम के नगर पर डोरियनों की एक टोली ने अपना अधिकार जमा लिया। शत्रु के देश में वे एक छोटी सेना की भांति

थे। उन के चारों ओर वही एकियन लोग बसते थे। यदि डोरियनों को और भूमि की चाह होती तो वे केवल लड़ कर पा सकते थे। वे अपनी सीमा को धीरे धीरे आगे बढ़ाते गये। वे अपने पड़ोसियों, डोरियन और एकियन दोनो, को आक्रमण कर कर के जीतते गये, यहां तक कि उन्होंने युरोतास के दोनों ओर की भूमि जीत ली और समुद्र तक वे ही वे दीखने लगे। अच्छी पृथ्वी तो उन्हों ने अपने लिये ले ली और शेष पुराने मालिकों को छोड़ दी।

३—पेरिओकी और हीलट—जय की हुई आबादी दो भागों में बांट दी गई, १—पेरिओकी (चारों ओर के रहने वाले)—वे पुराने निवासी जिनके खेत छीने नहीं गये; २—हीलट (इस का अर्थ है 'क़ैद किये हुए')—यह मजदूर लोग थे जो स्पार्टा वालों के खेत जोतने और बोने को लगा लिये जाते थे। पेरिओकी लोगों को स्पार्टा वालों की ओर से सिपाहियों की भांति लड़ना पड़ता था, परंतु शासन में उन लोगों की कुछ नहीं सुनी जाती थी। उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता था जैसा कि छोटे के साथ किया जाता है और स्पार्टा वालों और पेरिओकियों में परस्पर बिवाह संबंध नहो सकता था। परंतु पेरिओकी लोगों से बुरा बर्ताव नहीं किया जाता था और उनका माल वगैरह छीनाँ नहीं जाता था। परंतु अधिकांश हीलटों की दशा इनसे कहीं खराब थी। थोड़े से हीलट उन खेतों में काम करके गुजर करते थे जिनको स्पार्टनों ने छीन लिया था। वे खेत छोड़ कर जा नहीं सकते थे न उनको दूसरा रोजगार करने की आज्ञा थी। उन को खेत में काम करना पड़ता था

और हर साल खेत के स्पार्टन मालिक को कुछ नियत अन्न, शराब, और तेल ले जाना पड़ता था। इस से उपज जितनी अधिक होती थी वह उस गुलाम हीलट की होती थी। परंतु यह लोग साधारण गुलामों की भांति नहीं होते थे क्योंकि न तो खेत इनके अधिकार में से निकाले जा सकते थे और न वे बेचे जा सकते थे। पहिले समय में अधिकांश अंगरेज जाति की भी यही दशा थी, और रूस की तो प्रायः अभी तक यही बात थी। परंतु हीलट लोगों में इस जुल्म के कारण बहुत असंतोष फैला क्योंकि उनके साथ ऐसी कड़ाई की जाती थी कि जैसे वे सदा से केवल गुलाम ही रहे हों। उन के मन में यह विचार उत्पन्न हुवा कि हम सदा से स्वतंत्र रहे हैं। इन स्पार्टा वालों ही ने हम को परतंत्र बना दिया है। जैसे ये यूनानी हैं वैसे ही हम भी यूनानी हैं। तब से स्पार्टा वालों प्रति उन के मन में इतना विरोध और घृणा उत्पन्न हुई कि यह कहा जाता था कि यदि हीलट की चले तो स्पार्टा वालों को कच्चा ही खा जांय। स्पार्टा वाले भी सदा ही भय में रहते थे कि हीलट लोग कहीं राष्ट्रविप्लव न उपस्थित कर दें। स्पार्टा के युवकों की एक पल्टन सदा उन की देख रेख करने को तैयार रहती थी, और इस पल्टन के सुपुर्द यह काम भी किया गया था कि इन हीलट लोगों में जो सब से अधिक बलवान् और भयानक हो उसको गुप्त रीति से मार डाले।

४—स्पार्टन लोग सिपाही हो गए—डोरियन लोगों ने जब पेलोपोनिसस देश जीता तो वे सैनिकोंकी भांति रहते थे और यद्यपि अन्य बस्तियों में वे अधिक रियासत

नगरोचित जीवन व्यतीत करने लग गये थे तथापि स्पार्टा में उन की स्थिति ऐसी थी कि वे अपनी फौजी प्रकृति को छोड़ न सकें बरन् इस के विरुद्ध उन्हें अपना स्वभाव और भी लड़ाका बनाना पड़ा। जिन दिनों पेलोपोनिसस के दूसरे भागों में मनुष्य शांतिपूर्ण रोजगारों में प्रवृत्त हो गये थे स्पार्टा वाले बराबर युद्ध ही में प्रवृत्त थे। वे इस भांति से लड़ने को हरदम तैयार रहते थे जैसे युद्ध की लड़ने वाली सेना युद्ध के दिनों में रहती होवे। वे अपने पड़ोसियों को केवल जीत तो सकते थे, परन्तु उन से अर्थात् हीलट लोगों से चिंता रहित तब ही हो सकते थे जब कि युद्ध करने को वे सदा उद्यत रहते। समुद्र के तट पर की रियासतों में प्राचीन निवासी व्यवसाय से धनवान होते जाते थे और कुछ समय उपरान्त डोरियनों का शासन समाप्त कर दिया गया। परन्तु स्पार्टा में जो समुद्र से बहुत दूर था वाणिज्य नहीं होता था, और स्पार्टा वाले यद्यपि प्रजा के दशमांश भी नहीं थे तथापि वे पूर्णाधिकारी ही बने रहना चाहते थे। और इस काम को पूरा करने के लिये उन्हों ने यह विचार किया कि जितने दृढ़ सैनिक होना संभव हो उतना ही दृढ़ और बलवान होना चाहिये। और नगरों की भांति वहां का नगर व्यवसायी नहीं था और अंत तक वह जंगली गांव की भांति बना रहा जिस में अच्छी अच्छी इमारतों का चिन्ह तक नहीं था। परन्तु ईश्वर ने उस को ऐसी जगह पर बनाया था कि उसके चारों ओर चहार दीवारी की आवश्यकता नहीं थी। स्पार्टा की रीतियों और कानूनों ने, जो कि लाइकरगस के चलाये हुये कहे जाते थे, स्पार्टनों के कुल जीवन को लड़ाई की तैयारी ही बना

दिया। कोई लड़का भी जो शरीर में हृष्ट पुष्ट नहीं होता था पाला पोषा नहीं जा सकता था। सात वर्ष की अवस्था में लड़के घरों से ले लिये जाते थे और रियासत के अफसर लोग उन को फौजी शिक्षा देते थे। उन को कसरत और अस्त्र शस्त्र चलाने का अभ्यास करना पड़ता था। लड़ाई के दिनों में जितने काम सिपाही करते हैं वे सब उन को करने पड़ते थे। वे बिना शिकायत किये सब भांति की तकलीफ सहन करना सीखते थे। उनको खाने को थोड़ा दिया जाता था कि जिस में ये पर्वत पर जाकर मृगया खेलें और कभी कभी देवताओं को बलिदान चढ़ाये जाने के स्थान पर उन पर इतने दुर्रे जमाये जाते थे कि वे अध मरे हो जाया करते थे। उन दिनों में विद्या इत्यादि का प्रचार हो भी गया था तब भी स्पार्टनों ने इस की चिंता नहीं की। लड़कों को केवल जंगलियों की भांति शिक्षा नहीं दी जाती थी उन्हें साधारण और सरल युद्ध के गीतों का गाना बजाना भी सिखाया जाता था। इस प्रकार लड़कपन में तो स्पार्टनों को सिपाही की जैसी शिक्षा दी जाती थी, और बड़े होने पर भी उनका जीवन साधारण नहीं होता था बल्कि लड़कपन की भांति ही कठिन होता था। अपनी स्त्रियों के साथ घर रहने के बदले उन्हें प्रतिदिन कवायद करनी पड़ती थी, साथ साथ सरकारी पाकशाला में भोजन करना पड़ता था और बैरेकों में सोना पड़ता था। एक एक मेज पर पंद्रह पंद्रह मनुष्य भोजन करते थे। खाना बहुत सादा और गरीबों का सा होता था और उस में मुख्य प्याली काले जौ के शोरबे की होती थी। औरतों तक को कसरत करनी पड़ती थी।

स्त्रियों में भी मनुष्यों ही की सी वीरता और जीवट होते थे और यूनान की दूसरी रियासतों की अपेक्षा स्पार्टा में वे अधिक मानदृष्टि से देखी जाती थीं। वे बीर पुरुषों से प्रेम और कायरों से घृणा करती थीं; और एक स्पार्टन माता इस बात को सहर्ष सुनती थी कि उसका पुत्र युद्ध में काम आया, परन्तु वह यह नहीं सुना चाहती थी कि उसका पुत्र रण--क्षेत्र से भाग आया। किसी स्पार्टन को वाणिज्य करने की आज्ञा नहीं थी, और उनके खेतों को हीलट लोग जोतते बोते थे अतः उन्हें कृषी से कुछ संबंध नहीं था। वे अपना सब समय सैनिक कसरतों में॰ लगा सकते थे। विदेशियों का बाणिज्य रोकने के लिये स्पार्टनों ने अपने मुद्रा (सिक्के) लोहे के बना लिये जो कि और राज्यों में किसी काम के नहीं थे।

९—गवर्नमेंट—राजा, पंचायत और मजिष्ट्रेट—यूनान में और कितनी ही अन्य जगहों में राजकीय शासन समाप्त हो गया, और मुसाहिब लोग राज्य करने लगे; परंतु स्पार्टा में, जो किसी भांति का भी परिवर्तन नहीं चाहता था, राजाओं का ही राज्य रहा। स्पार्टा में सदा एक साथ दो राजे राज्य किया करते थे और इस कारण से उन में कोई भी अधिक शक्तिशाली नहीं होने पाता था। सामंतों की कौंसिल, जिस का वृत्तांत होमर में पढ़ चुके हैं, स्पार्टा में स्थिर रही और यह अट्ठाईस बुड्ढे मनुष्यों की पंचायत थी। ये सभासद् सब साठ वर्ष से अधिक अवस्था वाले होते थे यह पंचायत जेहासिया कहलाती थी। ठीक उसी भांति जैसा कि होमर में लिखा है कि सर्व साधारण हाट

लगने के स्थान पर इस लिये एकत्र होते थे कि देखें राजा क्या कहता है कानून पास करने के लिये सब नगर निवासी एक स्थान पर स्पार्टा में भी इकट्ठे होते थे। परन्तु केवल मजिष्ट्रेट लोग ही बोल सकते थे, और नगर निवासियों को केवल 'हां' या 'नहीं' कहकर सम्मति देनी पड़ती थी। और वास्तव में रियासत के प्रबंध में उनकी कुछ नहीं चलती थी। यहां तक स्पार्टा की शासनशैली वैसी ही थी जैसी कि होमर में लिखा है; केवल अंतर इतना ही था कि स्पार्टा में दो राजे साथ साथ राज्य करते थे। परन्तु कुछ समय के अनंतर नये मजिस्ट्रेट निकल पड़े जो 'यफर' कहलाते थे; जो शीघ्र ही रियासत के असली हाकिम बन बैठे। इन 'यफरों' को सर्व साधारण की मजलिस चुनती थी और वे सब स्पार्टनों की शक्ति को यहां तक कि राजा की शक्ति को रोके रहते थे। दूसरी रियासतों के साथ जो कार्यवाही होती थी वह सब उन ही के द्वारा हुवा करती थी। वे ही कानूनों के प्रस्ताव पेश करते थे और मस्विदे बनाते थे। उन के कामों का निरीक्षणकरने वाला कोई नहीं था और इस ही कारण से स्पार्टा की गवर्नमेंट और गवर्नमेंटों की अपेक्षा अधिक गुप्त और पेचीदा थी।

६---अर्गास---डोरियन रियासतों में पहले पहल स्पार्टा सब से अधिक शक्तिशाली नहीं था। पहले एकियन लोगों के समय में पेलोपोनिसस के ईशान कोन में 'माइसनी' नाम वाली रियासत का राजा सब से बड़ा था। और अब यद्यपि माइसनी का सूर्यास्त होने लगा था तथापि स्पार्टा की बारी न आकर पेलोपोनिसस की डोरियन रियस्ता

में अर्गास नाम का नगर चमक उठा। ईशान में और भी कई डोरियनों की बस्तियां थीं जैसे 'कोरिंथ' और 'सिसियन' इत्यादि। ये सब अर्गास रियासत से मेल रखतीं थीं और एपालो को सम्मेलन के देवता के नाम से पूजती थीं। ये सब राजे अर्गास के एपालो के मन्दिर को भेंट भेजा करते थे तथा अर्गास को मंडली का अग्रगन्ता मानते थे। अर्गास का राज्य भी बड़ा ही था जो बहुत दूर दक्षिण में समुद्र के पूर्व तट तक चला गया था। जब स्पार्टन लोग पूर्व की ओर अपना राज्य बढ़ाते आये तो उन की और अर्गास वालों की चल पड़ी। उस समय से अर्गास और स्पार्टा की शत्रुता हो गई और वे एक दूसरे से बढ़ने की कामना करने लगे। अर्गास वाले दक्षिण से हटा दिये गये। तदुपरान्त तटस्थ सिनोरिया नामक जनस्थान भी उन्हें छोड़ना पड़ा और फलतः टेजेटस पर्वत से पूर्वीय सागर तक का देश स्पार्टा के हाथ लगा। इस ही देश को लोकोनिया कहते हैं। उसी समय में अर्गास का प्रभाव मित्रों (सहचर राज्यों) पर भी घटने लगा। अब पेलोपोनिसस में स्पार्टा का नंबर पहला समझा जाने लगा और अर्गास का नहीं।

७—ओलिंपिया का त्योहार—एलिफयस नदी पर पेलोपोनिस के पश्चिम में ओलिम्पिया में ज़ीयस देवता का एक बहुत प्राचीन मंदिर था। यहां भेंट चढ़ाने को अठारह नगरों के राजाओं ने मेल किया था और चौथे वर्ष बहुत बड़ा मेला होता था। मेले के प्रबंध को अपने हाथ में लेने के लिये एलिस और पाइसा नगर के राजाओं में परस्पर झगड़ा हो गया। स्पार्टा

ने एलिस की ओर होकर एलिस को ही प्रबंध दे दिया । यह परस्पर के दो रियासतों के साधारण मेल से कुछ अधिक बढ़ गया, क्योंकि स्पार्टा वाले इस मेले को कुल यूनान भर का धार्मिक मेला बनाया चाहते थे जिस में स्पार्टा मेले का संरक्षक बन कर सब यूनानी रियासतों में बड़ा और सब का मुखिया माना जाय । मेले को जिस भांति हो सका चित्ताकर्षक बनाने का प्रयत्न किया गया । घुड़दौड़ और अन्य बीरता के खेल स्थापित किये गये जिन में प्रत्येक मनुष्य जीत कर अपना जौहर दिखा सकता था । घोषणा--कर्ता सब यूनान भर में यह सूचना देने को कि मेला कब होगा और सब यूनानी लोगों को बुलाने और इन खेल कसरतों में भाग लेने के निमित्त कहने को भेजे जाते थे । पहले केवल पैदल दौड़ हुवा करती थी तदुपरांत घूंसों की लड़ाई, मल्लयुद्ध तथा और बहुत से बल परीक्षक खेल होने लगे । रथों की दौड़ और घुड़दौड़ भी होने लगीं । कुछ काल उपरांत वे सड़कें, जो और रियासतों से ओलिम्पिया को गई थीं, मेले से कुछ दिनों पहले से कुछ दिनों बाद तक, सुरक्षित रक्खी जाती थीं । इस से मनुष्य बिना किसी भय के आ जा सकते थे, और अंत में त्योहार का कुल मास शांति का समझा जाता था और यूनान भर में परस्पर कोई एक दूसरे से नहीं लड़ता था । इस मेले के खेलों और उस से संबंध रखने वाले नियमों से यूनानियों के चित्त में यह विचार होने लगा कि यद्यपि इतनी बहुत सी स्वतंत्र और जुदा जुदा रियासतें हैं तथापि हम सब एक जाति हैं । यह एक रीति पड़गई थी कि प्रत्येक रियासत अपने अपने प्रतिनिधि अपनी ओर से भेजती थी जो खेलों मे भाग लेते थे और उस रियासत

की भेजी हुई भेंट देवता को चढ़ाते थे । सब रियासतों को यह चिन्ता होती थी कि हमारा प्रतिनिधि सब से अधिक भड़कदार और ठाटबाट वाला हो । हज़ारों यूनानी दर्शक हो कर आते थे और ओलिम्पिया का मैदान खेल के समय में एक बड़े कैम्प की भांति हो जाता था । वह लोग जो खेलों में जीतते थे यूनान भर में सबसे अधिक भाग्यशाली होते थे । यद्यपि उन के सिर पर केवल एक ताड़ का मौर लगाया जाता था । और यही सबसे बड़ी नामवरी (सुख्याति) थी जो कि यूनानी को मिल सकती थी । सब से अधिक बलवान राज कुमार खेलों में नाम पैदा करना चाहते थे और रियासत के किसी निवासी के भी जीतने पर रियासत को गर्व होता था । इसी भांति के यूनान में तीन त्योहार और थे जिन में मेला होता था । परन्तु ओलिम्पिया का मेला सबसे बढ़ कर होता था ।

८—स्पार्टा मेसेनिया राज्य को जीतता है—स्पार्टा से मिली हुई पश्चिम में मेसेनिया थी जहां के रहने वाले भी स्पार्टनों की भांति परिश्रमी कट्टर डोरियन थे । मेसेनिया को वश में लाने से पहले दो बड़ी बड़ी और घोर लड़ाइयां हुई थीं (इसूमसीह से ७५० बर्ष पहिले से ६५० बर्ष पहिले तक अर्थात् १०० बर्ष तक) । अर्गास, अर्केडिया और सिसियन, ये तीनों रियासतें यह डरीं कि स्पार्टा का यह बिचार है कि एक एक कर के हम सब को जीते । सो इन्हों ने मेसेनिया को सहायता भेजी और कोरिंथ और एलिस ने स्पार्टा की सहायता की । इस प्रकार सब पेलोपोनिसस किसी न किसी ओर लड़ा । स्पार्टनों के छक्के छूटने लगे थे । ऐसे समय पर टिराटजस नाम के एक एथेंस के कवि ने

उन में आ कर लड़ाई के गीतों से उनको उत्तेजित कर दिया। लड़ाई के नाच गीत स्पार्टनों को सिखाये जाते थे। वे नई कविताओं को धीरे पुस्तकों में हमारी भांति नहीं पढ़ते थे बल्कि फौज में उनको राजा के डेरे के सन्मुख गाते थे या जब सेना लड़ने को जाती थी तब कूच में गाते थे। स्पार्टा वाले जमे रहे, और उन्होंने मेसेनियावालों का वीरता से सामना करना निष्फल कर दिया और उन पर जय पाई। स्पार्टनों ने उन की अच्छी भूमि ले ली और शेष भूमि पर वे पेरिओकियों की भांति नहीं बरन् हीलटों की भांति रहते रहे। उन पर बहुतेरे जुलम हुए परंतु वे यह नहीं भूले कि हम दूसरी जाति के हैं। तीन सौ वर्ष उपरांत थीब्स राज्य के एक बलवान् सरदार ने, जिसका नाम यपैमिनंदास था और जिस ने स्पार्टा की शक्ति को तीन तेरह कर दिया था, घोषणा कर दी कि मेसेनिया वाले अब पुनः स्वतंत्र हैं। एक नगर बनाया गया और मेसेनिया पुनः यूनान की रियासतों की श्रेणी में हो गया। परंतु इन तीन सौ बरस में यूनान में जो कुछ भी हुवा उस में मेसेनिया का बिल्कुल भाग नहीं था।

९—तिजिया—मेसेनिया को जीतने से पेलोपोनिसस के दक्षिण भाग पर एक ओर के समुद्र से दूसरे ओर के समुद्र तक स्पार्टा वालों का अधिकार हो गया। इस के उपरांत स्पार्टा ने अर्केडिया की दक्षिणी सीमा पर आक्रमण किया परंतु यहां स्पार्टनों को ऐसे देश और जाति से काम पड़ा जिस को कि वे जीत न सके। तिजियावालों ने स्पार्टन सेना को नाश कर दिया और उन्हें कैद कर लिया और उन्हों ने स्पार्टन कैदियों से अपने खेतों में दासों की भांति वही हथकड़ियें पहिनाकर काम कराया

जो कि वे तिजियनों के बांधने को लाये थे। अर्केडिया को जीतने की सब आशा जाती रही और स्पार्टा ने प्रसन्नता से तिजियनों को अपना सहायक मंजूर कर लिया (ईसूमसीह से ५०० वर्ष पहिले)। और तिजियनों ने सहर्ष स्पार्टा वालों को पेलोपोनिसस का अगुआ स्वीकार कर लिया और सेना के नायक अपनी सेना से उनकी सहायता में लड़ने को राजी हो गये। अलिफयस नदी के उद्गम पर एक स्तंभ बनायागया। संधि पत्र उस पर खुदा हुवा था। तिजिया ने अपना बचन खूब निबाहा और स्पार्टा के सच्चे सहायक बने रहे। वहां के सिपाही, स्पार्टन जिनका लोहा मान गये थे, स्पार्टन सेना के बायें हाथ पर रहकर लड़ते थे, और यह स्थान स्पार्टा और उसकी मित्र रियासतों से मान दृष्टि से देखा जाता था।

१०—**उत्तरपूर्वीय पेलोपोनिसस आलिगर्की** अब हम को पेलोपोनिसस के ईशान कोन की ओर दृष्टि पात करना चाहिये, अर्थात् सिसियन, कोरिंथ और मिगारा की ओर ध्यान देना चाहिये। स्पार्टा की भांति इनमें भी डोरियन लोग पुराने निवासियों के मध्य में रहते थे। परन्तु वहां राजकीय सत्ता जाती रही थी। और मुसाहिबों का राज्य स्थापित हो गया था। इस प्रकार के शासन को यूनानी लोग 'आलिगर्की' अर्थात् थोड़े से मनुष्यों द्वारा किया हुवा शासन, कहते थे। स्पार्टा को छोड़ कर यूनान की लग भग सब रियासतों में राजा की शक्ति घटती जा रही थी; और शासन मुसाहिब लोगों के हाथ में अधिक अधिक आता जा रहा था। अंत में राजकीय शासन बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया।

ये मुसाहिब लोग हीरोओं (वीरों) की औलाद समझे जाते

थे। ये लोग पवित्र समझे जाते थे इस कारण कि और लोगों से जुदा कर दिये गये थे। उनकी पूजायें भी जुदी ही थीं जिन में सब लोग भाग नहीं ले सकते थे। क़ानून लिखे नहीं जाते थे और येही लोग कानून जानते थे। कानून कंठाग्र रहते थे और एक मनुष्य दूसरे को याद करा देता था जैसे कि किसी पवित्र विद्या को। यह लोग सर्व साधारण को अपना सहवासी और भाई नहीं समझते थे और यह भी स्वीकार नहीं करते थे कि हम लोगों से पर और मनुष्यों के भी कुछ अधिकार हैं। उनके पास तो बड़ी २ जायदादें थीं ही, परंतु सर्व साधारण या तो अपने खेतों मे कृषी करते थे, मज़दूरी करते थे, और या रोजगार करते थे। कभी २ तो ये मुसाहब लोग रहते भी सर्व साधारण से जुदाही थे।

११—सिसियन—सिसियन मे भी यहीं हाल था, डोरि-यंन मुसाहब लोग पहाड़ की ढालपर रहते थे और साधारण पुरुष मैदान में समुद्र के किनारे एसोपस नदी के मुहाने पर रहते थे। ये मुसाहब लोग इन लोगों को इजियेलियन्स अर्थात् समुद्र के तट वाले मनुष्य कहते थे और पहले पहल ये न तो उन साधारण पुरुषों को फौज मे दाखिल करते थे और न नागरिको (Citizen) का सा काम ही करने देते थे। परंतु कुछ समय उपरांत जब सिपाहियों की बहुत आवश्यकता पड़ी तो उनको सेना मे भरती करने लगे और उनको लड़ने को गदा देते थे और आप स्वयं खड्ग और बर्छियां रखते थे। परंतु उधर डोरियन मुसाहब तो अपने खेतों की उपज से निर्बाह करते थे इधर 'इजियेलियन' लोग व्यवसाय और बाणिज्य से धनवान होते जारहे थे। और ईसूमसीह से लग-

भग ६७६ बरस पहिले 'अर्थागराज' नामक एक धनवान इजियेलियन ने सर्व साधारण का नेता बनकर, मुसाहबों के शासन की भी इति श्री करदी और स्वयं रियासत भर का स्वामी बन बैठा। उसने राजा की भांति शासन किया और अपने उपरांत अधिकार अपने पुत्रको छोड़ गया। सिसियन का राज्य सौ वर्ष तक उसी के घराने में रहा और उसकी संतति 'अर्थागरिडी' कहलाती थी। उन्होंने सर्व साधारण की तरफदारी की और डोरियनों के अधिकारों को तोड़ दिया। इस प्रकार से सिसियन में डोरियन मुसाहबों के शासन का भी अंत कर दिया गया, और सिसियन आलिगर्की न रहकर, वहदेश एक मनुष्य से शासित होने लगा।

१२—'टिरेनस' शब्द का अर्थ—अर्थागराज और उसके घराने के ऐसे शासकों को राजा न कहकर 'टाइरंट' (Tyrant) कहते हैं। यूनानी शब्द टिरेनस या टाइरंट का यह अर्थ नहीं है कि जो जुल्म से शासन करे वह टाइरंट हो परंतु इसका यह अभिप्राय है कि जो देश के नियमों विरुद्ध शासन करे अथवा नियमों से अधिक शक्ति का प्रयोग करे। सो अर्गास का एक राजा फीडन जब वह सर्वाधिकारी बनबैठा तो 'टाइरंट कहा जाने लगा क्योंकि अर्गास की रीति और नियमों के अनुसार तो राजा के अधिकार नियम बद्ध थे। परंतु फारिस का राजा कितने ही जुल्म से भी राज्य क्यों न करे परंतु वह 'टाइरंट' नहीं कहा जा सकता, क्योंकि फारिस की रीति और कानून यही थे कि राजा ही सर्व स्वत्त्वाधिकारी होवे अर्थात् वह अपने राज्य में चाहे कुछ भी करता रहे और कोई उसको

रोक न सके * । परंतु इसके बिरुद्ध अर्थागराज के खान्दानी सब टाइरंट थे, उन्होंने चाहे कितनी ही नर्मी और बुद्धिमत्ता से भी क्यों न राज्य किया हो, क्योंकि वे अपनी शक्ति का प्रयोग सिसियन के नियमानुसार नहीं कर रहे थे। सो जब हम 'टिरेनस' शब्द के बदले 'टाइरंट' शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमको यह याद रखना चाहिये कि हमको इसके अंग्रेजी के साधारण अर्थ (ज़ालिम) से अभिप्राय नहीं है ।

१३—पहला पवित्र युद्ध—सिसियन के 'ल्काइस्थेनीज़' नामक एक 'टाइरंट' को यह चिंता रहती थी कि डेल्फी के देवता को किसी भांति से प्रसन्न करलूं । वह एथेंस और कई और रियासतों की सहायता को उनमें मिलगया । ये सब देवताओं की ओर से लड़ने जा रहे थे । डेल्फी और समुद्र के बीच में क्राइसा नाम की एक बसती थी, जहां के रहने वालोंने इस बात का प्रयत्न किया कि जो डेल्फी के जाने वाले क्राइसा में होकर जांय उनसे एक कर वसूल किया जाय । अतः ल्का-इस्थनीज़ और उसकी सहायक रियासतों ने आक्रमण करके क्राइसा को सत्यानाश कर दिया । और क्रिसियनों की भूमि को देवता के अर्पण कर दिया जिसमें फिर कोई वहां नगर को न बना पावे । यह युद्ध पहिला पवित्र युद्ध कहलाता है और यह ईसूमसीह से ५९५ वर्ष पहले के ५८५ वर्ष पहिले अर्थात् दस वर्ष तक होता रहा ।

१४—कोरिंथ—कोरिंथ में भी गवर्नमेंट का परिवर्तन इसी

* अब फारिस में भी राजासर्वाधिकारी नहीं है वरन् वहां भी पार्लमेंटेरी शासन है। (अनुवादक)

क्रम से हुआ जैसे कि सिसियन में अर्थात् पहले राजतंत्र, तदुपरांत आलिगर्की, और पश्चात् 'टाइरेंट' । जब राजतंत्र टूटा तो दो सौ मुसाहबों ने, जो कि 'बैकूचियाडी' कहाते थे, राज्य में शासन किया । क्योंकि कोरिंथ जल विभाजक पर स्थित था अतः वह सब से बड़ा व्यापारी नगर था । यूनान के सब भागों से यहां की सड़कें आई थीं । और कोरिंथ वालों ने जलविभाजक के इस पार से उस पार तक ट्राम गाड़ी बना ली थी जिस पर रखकर वे जहाज़ों को जोकि उन दिनों में नावों से कुछ ही बड़े होते थे, रखकर एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक पहुंचा देते थे जिससे 'मलिया' नाम की रास के चारों ओर की भयानक समुद्री यात्रा बच जाती थी । इस कारण सब भांति का व्यापार कोरिंथ को सिमट आया । वहां जलयान बनाये जाते थे जो बाहर वालों के हाथ बेंचे जाते थे । इस कारण कोरिंथ यूनान की एक बड़ी जहाज़ बनाने वाली जगहों में होगया । यूनान में पहला मानवी बंदर गाह लेकियम में था, जोकि कोरिंथ का उत्तरीय बंदर था, उसके चारों ओर जहाज़ खड़े करने की डकें (अरगड़े) दिये गये । कोरिंथियनोंने अपने जहाजों में बहुत उन्नति की, अंतमें उन्होंने त्रिरमा (तीन पतवार) के जहाज का आविष्कार किया और फिर वे जल युद्ध में सदा उसी से काम लेते रहे । कोरिंथ वालों की समुद्री जीवन में रुचि लगाने को सब प्रयत्न किये गये । और जब बैकूचियाडी के शासन से मनुष्य दुःखी होगये तो युवा मुसाहब लोगों को जो भयानक और असंतुष्ट थे नई बस्तियों के बसाने का साहस हुवा जहां समुद्र पार वे नेता होकर रह सकते थे । इन नई बस्तियों में

सबसे बड़ी बस्तियां 'कर्सीरा' और 'साइरेक्यूस' थीं जिनमें से पहिली अब 'कर्फू' कहाती है। यह यपाइरस के सागर तट से दूर पर है और दूसरी सिसिली द्वीप मे थी।

१५—सिप्सिलस ने बैक्चियाडी (मुसाहिबों] को तीन तेरह कर दिया—परंतु यद्यपि बैक्चियाडी ने बुद्धिमत्ता से व्यवसाय की वृद्धि की और भयानक मनुष्यों के नई बस्तियों में चले जाने से उनसे भी पिंड छुड़ा लिया परतु वे जम न सके और उनकी शक्ति उखड़ ही तो गई। एक तो वे संख्या में कम हो गये थे, दूसरे लोग उनसे घृणा करते थे, तीसरे और भी डोरियन मनुष्य थे जो कि उतने ही ऊंचे घरानों के थे जितने कि बैक्चियाडी, परंतु इनको शासन में भाग नहीं मिलता था। इन उच्च वंशजों में से एक ने बैक्चियाडी घराने की एक लड़की से विवाह कर लिया क्योंकि लड़की होने के कारण कोई बैक्चियाडी उसके साथ बिवाह नहीं करता था। इनसे जो लड़का 'सिप्सिलस' हुवा वह अपनी मां की ओर का सम्मान (अर्थात् शासनाधिकार इत्यादि) न पाकर अपने पिताही के ओहदे का रहा। बैक्चियाडी से तिरस्कृत होकर उसने पुरवासियों को अपनी ओर फोड़लिया और नगर का स्वामी बन बैठा। आलिगर्की शासन उखाड़ दिया गया। सिप्सिलस ने टाइरेंट होकर तीस वर्ष राज्य किया [इसूमसीह के ६५५ से ६२५ वर्ष पहले तक] और अपने बाद अपने पुत्र पिरियन्द्र को राज्य छोड़ गया।

१६—पिरियंदर—इस समय पिरियंदर की अवस्था चालीस वर्ष की थी, । उसने एशिया के सर्वाधिकार भोगी (Despotic) राजाओं की राज्य करने की शैली सीख ली थी। और यह समझा

जाता था कि यह इतना राजनीतिज्ञ और शासन पटु है कि जितना उस समय तक कोई यूनानी कभी हुवाही नहीं था । वह 'सातबुद्धिमानों' में से एक था और राजा और प्रजा की बहुत सी बुद्धिमत्ता की कहावतें उसही की कही जाती थीं । पिरियन्दर दिखावे और वास्तव दोनों ही में राजा होना चाहता था। उसका पिता सिपसिलस प्रजा में पुरवासियों की भांति रहता था, परंतु पिरियंदर ने यह न किया और कोरिंथ के बड़े किले में अपना महल बनवाया और अपने चारों ओर सिपाही रक्खे। वह पूर्वीय राजाओं की भांति दरबार किया करता था । अपने अतिरिक्त किसी और को वह शक्ति शाली नहीं होने देता था । यदि कोरिंथ के किसी पुरुष के पास बहुत धन होता था तो वह उससे उस धन का कुछ अंश वसूल कर लेता था और इस भांति से जो धन उसको मिलता था उससे वह देवताओं को बड़ी २ भेंटें चढ़ाता था। पिरियंदर कवियों और कारीगरों की कदर करता था. । उसके दरबार में कवि रहते थे। और देवताओं की भेंट में वह कारीगरी के सुंदर २ काम दिया करता था । उसने नई बस्तियां बसाई और समुद्र के किनारे २ कोरिंथ राज्य की सीमा बहुत दूर तक बढ़ाई । रोज़गार की इतनी उन्नति हुई कि बंदरगाह के महसूल को छोड़कर और किसी महसूल की आवश्यकता नहीं थी । वह बड़े ठाठ और शान।शौकत से रहता था किन्तु यह चिंता उसको निरंतर लगी रहती थी कि कहीं प्रजा में स्वतंत्रता की इच्छा न होजाय। साधारण प्रजा या व्यवसायी लोग तो सदा से ही राजा या आलिगर्की से शासित होते आये थे अतः वे 'टाइरंट' को नापसंद नहीं करते थे। केवल उन घरानों में स्वतंत्रता की इच्छा ज़रूर तीव्र थी

जिनके हाथ से शासन निकाला गया था। इस कारण पिरियंद्र ने सभाबंदी का कानून पास कर दिया कि जिसमें ये उचारण घरानों के मनुष्य स्वतंत्रता के लिये एक दूसरे को उत्तेजित न करसकें। डोरियनों के समय से जो एकसाथ मिलकर भोजन करने की प्रथा चली आती थी वह भी उसने उठादी। युवकों का मिलकर कसरत करना भी दूर करादिया गया। उसने भेद नीतिका प्रयोग करना चाहा। वह चाहता था कि नगरनिवासी एक दूसरे का विश्वास न करें और केवळ अपनी अपनी स्त्री और बच्चों से संबंध रखें। वह यह चाहता था कि प्रजा मेरी आज्ञाकारी हो और दासों की भांति दबती रहे अर्थात पूर्वीय हिसाब उसने रखना चाहा। उसने यह न विचारा कि असीमशक्ति से मनुष्य अंधा हो जाता है और सर्वशक्ति भोगीराजा मनुष्यमात्र में सबसे अभागा और क्रोधी होता है। वह निर्दयी और अविश्वासी होता गया। क्रोध में आकर उसने अपनी प्यारी स्त्री मेलिसा को मारडाला, और पश्चातापसे संतप्त होकर इसके उपरांत उसने कोरिंथ की सब स्त्रियों के वस्त्रों का ढेर लगाकर मृतक को भेंट देने की भांति जला दिया। उसके दो पुत्र, जिन्हें यह नहीं बिदित था कि हमारी माता कैसे मरी है, अपने नाना के यहां रहते थे। जब वे नाना के यहां से आने लगे तो उसने उनको एक ओर लेजाकर पूछा कि तुम अपनी माता के घातक को जानते हो या नहीं। बड़ा लड़का मूर्ख था। उसने इस बात की फिर चिंता नहीं की परन्तु छोटे लड़के लाइकोफन ने इस बातकी खोजकी और हाल जान लिया कि मेरा बापही मेरी मां का हत्यारा है। जब वे कोरिंथ को आये तो लाइकोफन ने अपने पिता को न तो

दंडवत ही की और न उससे बोला। पिरियंदर ने क्रोध में उसको महल से निकलवा दिया, और जब उसको लाइकोफ्रन के मन की दशा ज्ञात हो गई तो उसने नगर में मनादी करवादी कि लाइकोफ्रन को न कोई घर में ठहरावे, न उससे बोले और न कोई उसको भोजन देवे। लाइकोफ्रन कई दिनों तक भूखा और चुप सरायों में फिरता रहा। जब पिरियंदर ने सोचा कि लाइकोफ्रन के सिर का भूत उतर गया होगा तब उसने उसके पास जाकर कहा कि अब तुझे लौटने की परवानगी दी जाती है। परंतु लाइकोफ्रन ने तिरस्कार से उत्तर दिया कि मुझसे बात चीत करके तुमने स्वयं अपना कानून तोड़ डाला। राजा की आज्ञा से वह तब करसीरा बस्ती को भेज दिया गया और वह वहां विस्मृत की भांति बहुत वर्षों तक रहा। परंतु जब पिरियंदर बहुत वृद्ध हो गया और उसने बड़े लड़के को राज्य करने के अयोग्य देखा, तो उसने करसीरा को अपनी लड़की भेजी कि जिसमे वह समझा बुझा लाइकोफ्रन को ले आवे और वह उत्तराधिकारी होवे। लाइकोफ्रन ने अपनी बहन से कहा कि जब तक पिता जी जीवित हैं तब तक मैं कोरिंथ को नहीं जाऊंगा। तब निराश होकर पिरियंदर ने यह ठानी कि वह करसीरा मे जाकर रहे और लाइकोफ्रन कोरिंथ में राज करे। परंतु करसीरा वालों ने जब यह सुना तो वे बुड्ढे टाइरंट के आने से डरे और उन्होंने पकड़ कर लाइकोफ्रन को मारडाला। अतः पिरियंदर की अंतिम आशा भी नष्ट हो गई। उसने करसीरा वालों का रोमांच करने वाला प्रत्यपकार किया और इसके उपरांत चालीस साल शासन करके परलोक सिधारा (उसने ईसूमसीह के ६२५ ५२६ सैलसा

पहिले तक शासन किया)।

१७—मिगारा—ईसूमसीह से लगभज ६२० साल पहले थिजनीज़ टाइरेंट बन बैठा और उसने डोरियनो और शेष निवासियों का भेद दूर करादिया। परंतु वह निकाल दिया गया। तत्पश्चात उच्च घराने वालों और साधारण मनुष्यों में बहुत खिचाखिची और झगड़ा होता रहा।

१८—टाइरेंट के लाभ और हानियां—लगभग उसी समय और बहुत सी रियासतों में भी टाइरेंट उठ खड़े हुए। एशिया माइनर की आयोनिक बस्तियों के नगरों से उनका आरम्भ हुवा था। यहां के रहने वाले तो पूर्वीय राजाओं के सर्वसत्ता युक्त शासन को खूब ही जानते थे। टाइरेंट इतनी जगहों में कैसे उठ खड़े हुए, इसका यह कारण था कि इन रियासतों में मुसाहिब लोगों के हाथों में सब शासन की बाग थी और सर्व साधारण की शासन संबंधी कामों में कुछ पूछ नहीं होती थी। टाइरेंट लोग सर्व साधारण के पक्ष को लेकर उनको अपनी ओर फोड़ कर शक्ति युक्त हो जाते थे। और यहां तक उनका काम लाभदायक भी था, क्योंकि वे थोड़े से मुसाहिबों के शासन का, जो कि सर्व साधारण को नगर निवासी तक नहीं समझते थे और शासन को अपनी मीरास समझते थे, विध्वंस कर दिया करते थे। अब तक बड़ी बड़ी धार्मिक रस्में केवल उच्च कुलीनों ही के हाथ में थीं। निर्धन मनुष्य उनमें शामिल नहीं हो सकते थे और हतोत्साह हो कर सोचा करते थे कि हमको रियासत से कुछ संबंध ही नहीं है। टाइरेंट ऐसा नहीं करते थे वे नये और बड़े बड़े त्योहार स्थापित करते थे जिनको सब लोग

मान सकते थे । और यद्यपि लोगों ने अपने पुराने त्योहार छोड़े नहीं और वे उनमें गर्व करते थे तथापि धनाढ्य और निर्धन लोगों में इन त्योहारों ने यह विचार पैदा कर दिया कि हम सब एक रियासत के रहने वाले और सहवासी नागरिक हैं । जब टाइरंट समाप्त हुए और शासन नगर वासियों ने अपने हाथ में लिया तो कुलीन धनाढ्यों और साधारण पुरुषों का द्वेष कुछ कुछ कम हो गया । तब वे राज्य को भली भांति समझने लगे और यह जानने लगे कि यह ऐसी चीज़ है कि जिसमें हम सब शामिल हैं । टाइरंट लोगों से यूनान को दूसरा यह लाभ पहुंचा कि उन्हों ने कलाकौशल और कविता की उन्नति की । उनके त्योहारों में मनुष्य नई भांति के गाने बजाने सुनते थे दूसरी और कोई विधि इनके प्रचार की उन दिनों मे न थी क्योंकि तब छापा नहीं था और गाने बजाने का आजकल की भांति प्रचार नहीं हो सकता था । पिरियंद्र जैसे बड़े राजा के दरबार में सब भांति के बड़े बड़े विद्वान और बुद्धिमान मनुष्य उपस्थित रहते थे जो कि कुल यूनान से एकत्र होते थे । जो बात कहीं भी सबसे अच्छी और नई होती थी वह सबको विदित हो जाती थी और सब उससे लाभ उठा सकते थे । प्रायः टाइरंट--शृंखला का पहला टाइरंट सुशासक होता था और उसके उत्तराधिकारी उसकी अपेक्षा कहीं अयोग्य होते थे । सिप्सिलस या अथा गराज़ इत्यादि जो ऐसी उच्च दशा को प्राप्त करते थे उन का ऐसा बड़ा होना संभव था क्योंकि मुसाहिबों के अधिकारों को तोड़ने और प्रजा का पक्ष ग्रहण करने को किसी न किसी महापुरुष की आवश्यकता होती थी । रियासत में बहुत काम

करने पर वह शक्ति पाता था और प्रजा को उसका विश्वास रहता था। परंतु उसके उत्तराधिकारी कुछ अपनी करतूत से तो राज्य पाते ही नही थे। वे पैदा ही कुमार होते थे और प्रायः उनकी इच्छा अपनी शक्ति बढ़ाने की होती थी। अमीर लोग उनके विरुद्ध षडयन्त्र रचते थे और उनसे घृणा करते थे। तब आपत्ति को आया हुवा जानकर वे प्रायः कोरे ज़ालिम बन जाते थे क्योंकि शक्ति होने से उनका स्वभाव तो बुरा और चिड़चिड़ा हो ही जाता था, और मनुष्यों के जीवन और उनकी दिलेरी को कुचल डालना चाहते थे। साधारण प्रजा को तब भी ऐसे सर्वाधिकारभोक्ता ज़ालिम से शासित होना बुरा नही जान पड़ता था क्योंकि 'आलिगर्की' प्रणाली में भी उनको तो कभी शासन में कुछ अधिकार मिलेही नही थे। इस कारण वे दासत्व से घृणा नही करते थे और स्वतंत्रता की क़दर नही करते थे। इसके बाद वे स्वतंत्रता से प्रेम और दासत्व से घृणा करने लगे।

१९—स्पार्टा और टाइरेंट—पेलोपोनिसस में टाइरंट हो जाना स्पार्टा को बुरा लगा। उन्होंने अपने राज्य में डोरियनों के शासन का विध्वंस कर दिया था और प्राचीन निवासियों का पुनरुत्थान किया था। यह देख कर स्पार्टा घबड़ाया कि कहीं हमारे यहां भी ऐसाही युग परिवर्तन न हो जाय। इस कारण से जब कभी उन्हे मौका मिला तो उन्हो ने पलोपोनिसस मे और दूसरी और रियासतों में टाइरंटों को दबाया। और मनुष्यों के साथ साथ स्पार्टा से पिरियेंडर का भतीजा भी निकाल दिया गया। इन दिनो यूनान में स्पार्टा सबसे बड़ी रियासत मानी जाती थी, पेलोपोनिसस के बहुत

से नगर उससे मित्रभाव रखते थे और जब कभी सेना की मांग होती थी तो सेना भेज दिया करते थे। इस सब सेना के सेनापति स्पार्टा के राजा होते थे।

२०—कलोनियां [नई बस्तियां]—आलिगर्की और डाइरट लोगों के शासन के दिनों में बहुत से नगरों से मनुष्यों के झुंड के झुंड चल निकले, और भूमध्य सागर (मेडिटरेनियन) समुद्र के भिन्न भिन्न भागों में और काले सागर के तट पर उन्हों ने नगर बसालिये। ये नगर कलोनियां (नई बस्तियां) कहलाते थे। इन लोगों ने अपने अपने घर या तो निर्धनता या असंतोष के कारण छोड़ दिये थे। ये कलोनियां ऐसी ऐसी जगहों पर बसाई गई थीं जहां के रहने वालों के साथ व्यवहार और व्यवसाय पहले ही आरंभ हो चुका था, और प्रायः सागर तटपर थीं या कुछ ही दूर पर हट कर। कलोनियों में आरम्भ से ही यूनानी नगरों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता थी। यहां उनलोगों को भूमि भी अधिक उपजाऊ मिली थी और व्यापार में भी लंबे लंबे हाथ मारने को मिलते थे इस कारण से उनमें से बहुत से नगर उन नगरों से भी शक्ति और धन में कहीं बढ़ गये जहां के निवासियों ने उन्हे बसाया था। एक कलोनी उस नगर की आधीन बस्ती नहीं होती थी जहां के रहने वालों ने उसे बसाया होता था, बल्कि वह मातृनगर को मान दृष्टि से देखती थी और इससे मित्रभाव रखती थी। विशेष करके वह मित्रभाव और सम्मान ऐसे जाना जाता था कि वे ही देवता इस बस्ती में पुजते थे जो कि मातृनगर में पूजे जाते थे। ये कलोनियां इटली के नैऋत्यकोण और सिसिली के सागर तट

तक थीं । यूनानी मेडिटरेनियन सागर के पूर्वीय भाग में अधिक वाणिज्य करने लग गये थे। उन्हों ने फिनिसिया के व्यापारियों को निकाल बाहर किया । पहले सब व्यापार इन्हीं की मुट्ठी में था । समुद्र के इस भाग में तो यूनानी लोगों के सामने इनकी दाल न गली परंतु उन्होंने यह संकल्प कर लिया कि पश्चिमी भाग में मेडिटरेनियन का व्यापार हम ही अपने हाथ में रखेंगे और यूनानियों का प्रवेश इसमें न होने देंगे । इस कारण से फिनिसियनों ने अफ्रिका महाद्वीप के तट पर कार्थेज नाम की कलोनी लडने को बसाई और कार्थेज प्रवासियों ने इटली के इस्कनो से संधि करके यूनानियों को सिसिली के पश्चिमी कोने पर या कर्सीका द्वीप मे नही बसने दिया और वे स्पेन देश में भी कोई बडी बस्ती बना न सके । यदि यूनानियों की कलोनियों का प्रसार कार्थेज द्वारा इस भांति से न रोका जा चुका होता तो मेडिटरेनियन सागर का कुल तट यूनानी ही होजाता । सिसिली द्वीप का तट पश्चिम कोण को छोड़कर यूनान देश की भांति हो ही तो गया । यहां सबसे बड़ी बस्तियां साइरेक्यूज़ और ऐग्रीजेंटम थीं । सिसिली के यूनानियों और कार्थेजियनों मे बहुधा लड़ाई होती रहती थी । कलोनियों की संख्या अधिक होने और उनके बड़े होने के कारण इटली का दक्षिण पश्चिम भाग 'मैग्नाग्रीसिया' (बडा यूनान) कहलाता था । ये बस्तियां समुद्र के किनारे किनारे कुछ कुछ अंतर से कूमी 'सेटारेटम तक फैली हुई थीं और यहां के प्रवासी कृषी, व्यापार या मछली मार कर गुज़र करते थे । कूमी के उत्तर और इटली के पूर्वीय समुद्र तट पर इनकी बस्तियां नही थीं । गाल (फ्रांस)

के दक्षिण में समुद्र तट पर 'मासिलिया' (जो अब मार्सेल्ज़ कहलाता है) यूनानी कलोनी थी और छोटी छोटी और भी कई बस्तियां थीं। यूनान के सन्मुख अफ्रिका महाद्वीप के सागर तट पर 'सिरीना' और 'मिश्र' में 'नूक्रेटिस' आदि बस्तियां थीं। काले सागर के दक्षिणी तट पर 'माइलेटस' ने कई बस्तियां बसाईं और काले सागर के पश्चिमी तट पर ये कलोनियां 'क्रीमिया' तक फैली हुई थीं,। यहां के पड़ोस के मनुष्य असभ्य, जंगली थे यहां शीत बहुत अधिक होता था। काले सागर की कलोनियां अनाज के व्यापार ही से धनवान थीं। उस प्रांत में यह व्यवसाय अब भी बहुत होता है। बहुत से उन स्थानों के रहने वाले जहां यूनानी लोग जा कर बसते थे अपनी पुरानी रहन सहन छोड़ कर यूनानियों की भांति ऐसे रहने लग जाते थे जैसे अंगरेज जहां जाकर रहते हैं वहां के निवासी इनकी भाषा और स्वभाव सीखने लग जाते हैं। दक्षिण इटली और सिसिली वालों ने इनका बहुत ही अनुकरण किया क्योंकि यह स्वभाव ही से यूनानी जान पड़ते थे। ईसूमसीह से लग भग ४०० वर्ष पहले यद्यपि सिसिली द्वीप के समुद्र तट वाले मनुष्य यूनानी हो गये थे परन्तु देश के भीतर वाले साइकेल लोगों में यूनानियों का प्रभाव नहीं घुसा था और वे भिन्न जाति के बने थे। परंतु ईसूमसीह से ७० वर्ष पहले सब द्वीप यूनानी हो गया था और यूनानी भाषा को छोड़कर और भाषा का शब्द सुनने में नहीं आता था।

२१—गुलामी [दासत्व]—होमर के समय में बहुत से दास नहीं थे, परन्तु यूनानी ज्यों ज्यों धनवान होने लगे और नगर में रहना पसंद करने लगे त्यों त्यों दासों की संख्या

बढने लगी । और नगर निवासी दासों की मेहनत पर अधिक निर्भर हो गये । यह तो एक साधारण बात थी कि लोग नगर में आकर रहते थे और अपने खेत की जोत खोद पुर्णत या दासों को छोड़ देते थे । वणिक और व्यापारी लोगों के भी दास होते थे । सब दासों की दशा एक सी नही होती थी । दास मोहर्रिर [लेखक] और सैक्रेटरी भी बना दिये जाते थे जिन के साथ में स्वामी मित्रों का बर्ताव करते थे, दासों का सा नहीं । उनके साथ ऐसा भी बर्ताव किया जाता था जैसा कि किसी पशु के साथ किया जाता है । ऐसों का जीवन बहुत ही दुख से व्यतीत होता था । यूनान के इतिहास को पढ़ने में यह स्मरण रखना चाहिये कि हम दासों का नही बरन स्वामियों का इतिहास पढ़ रहे हैं तथा यूनान के जीवन का बड़ापन और उसके बृतांत की रोचकता केवल प्रजा के थोड़े ही भाग पर निर्भर थी । प्रजा का एक दूसरा भाग भी था अर्थात दास लोग ; परंतु यदि उनका इतिहास हो भी तो वह इतने दु:ख और कष्ट की कहानी होगी कि हम उसको पढ़ भी न सकेंगे ।

तीसरा पाठ ।

एटिका राज्य का बृतांत—

मसीह से ५०० साल पहले तक ।

१—एथेन्स से राजा निकाल दिये गये—एटिका देश के निवासी यूनानियों की आयोनियन शाखा की औलाद में से थे । पहले एटिका में बहुत सी स्वाधीन रियासतें थीं जो प्रायः एक दूसरों से लड़ती झगड़ती रहती थीं । इनमें एथेन्स सबसे अधिक शक्ति शालिनी थी परन्तु उसने और पास की रिया-

सतों को अपने अधीन नही किया जैसा कि स्पार्टा वालों ने लकोनिया में किया, वरन् उसको मिलाकर एक कर लिया और एटिका एक रियासत हो गई और दूसरी रियासतों के कुलीन अमीर एथेंस के अमीर हो गये। शायद यह उन्हीं दिनों में हुवा जब कि राजाही शासन करते थे। एथिनियन लोग यह बिश्वास करते हैं कि इन रियासतों को थसियस नाम के हीरो ने संयुक्त किया था। राजा की शक्ति धीरे २ तोड़ दी गई। पहले तो अमीरों ने राजा से पूजा इत्यादि का काम निकाल लिया और शासक और पुजारी (वेसिलियस) के बदले उसको केवल शासक (आर्कन) कहने लगे। परंतु आर्कन का ओहदा जन्म भर रहता था और उसका पुत्रही उत्तराधिकारी होता था। उसके उपरांत यह बिचार हुवा कि आर्कन केवल दस वर्ष तक रहा करें, और अंत में सन् इसवी से ६८३ वर्ष पहले यह केवल साल भर का ओहदा रह गया और एक के बदले नौ आर्कन होने लगे। ऐसा करने से न्याय करने और सेना का प्रबंध करने को भिन्न २ मनुष्य हो गये और पहले के विपरीत एक मनुष्य ही सब शक्ति वाला नही रहा।

२—ऊँचे घराने—एटिका निवासी तीन भागों मे विभक्त थे यूपैट्रिडी अर्थात् बड़े घराने के, ज्योमोरी अर्थात् किसान, और डेमिअर्जी अर्थात् शिल्पकार। बड़े घराने के मनुष्य (यूपैट्रिडी) भिन्न जाति की भांति सर्व साधारण से अलग अपने आपस के ही लोगों मे रहते थे, परंतु वे पेलोपोनिसस के डोरियनों की भांति विदेशी नही थे जिन्हों ने देशको जीता हो वरन् ऊंचे कुल के मनुष्य थे और हीरोओं की औलाद समझे जाते थे।

पवित्र त्योहारों का प्रबंध वे ही करते थे और शासन को भी अपनी ही मुट्ठी में रखते थे। इनमें से कुछ घराने औरों से अधिक विख्यात थे और इनमें के बड़े २ मनुष्य शासन संबंधी बातों में अग्रगराय थे। जब से एटिका का इतिहास आरंभ होता है उस समय सर्व साधारण का हाथ शासन में नहीं था। अब हमको मालूम हो जायगा कि यह बड़े २ घराने कम काम के कब समझे जाने लगे और एथीनियनों की समझ में यह कैसे आया कि रियासत और उसकी प्रजा को किस भांति का होना चाहिये।

३—ड्रैको के बनाये हुए कानून—सर्वसाधारण की सब से बड़ी कमबख्ती यह थी कि जज लोग ठीक न्याय नहीं करते थे। लिखे हुए क़ानून तो थे ही नहीं मुसाहिब लोग एक दूसरे को क़ानून कहावतों की भांति जिह्वाग्र करा देते थे, परंतु सर्व साधारण की यह शिकायत रहती थी कि आर्कन लोग सब बड़ेही घरानों के होते है वे अपनी इच्छानुसार आज्ञा देते हैं और अपने मित्रों की रियायत करते हैं। इस लिये यह निश्चय हुवा कि ड्रैको नामक एक नगर निवासी कानून बनावे कि जिसमें कानून सब किसी को मालूम रहे (ईस्वीसन् से ६२४ वर्ष पहले) ड्रैको ने नवीन कानूनों की रचना नहीं की। जो नियम कामों में आते थे उन्हीं को निश्चय करके लिखलिया पिछले दिनों के यूनानी इन कानूनों को इतना कठिन समझते थे कि ड्रैकोनियन (ड्रैकोका) शब्द ऐसी बात के लिए प्रयोग किया जाता था जो बहुत कठिन या निर्दयता पूर्ण होती थी; परंतु वास्तव में पहले के सब ही क़ानून बड़े कठिन थे और ड्रैको के इन से अधिक कठिन नहीं हैं।

४—साइलन—अलिकमियानोडी पर विपत्ति—ऊपर लिखी हुई बातों के थोड़े दिन उपरांत साइलन नामक एक अमीर ने, इस आशा से कि यूपैट्रिडी को निर्मूल करने में सर्वसाधारण मेरी ओर हो जायंगे, अपने लिये टाइरेंट की भांति रियासत में स्थापित करना चाहा। उस ने एथेंस के ऐक्रापोलिस दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया। परंतु उस की सहायता किसी ने भी नहीं दी और सरकार ने दुर्ग को सेना से घेर लिया। साइलन स्वयं तो भाग गया, परंतु उस के साथी जब भूख से मरणप्राय हो गये तो वे ऐक्रॉपोलिस के देवता के वलिदान के स्थान पर छिप रहे। आर्कन के आधिपत्य में सेना गई थी उसने वचन दिया कि तुम लोग बाहर निकल आओ तो तुम को प्राण दान दिया जायगा, परंतु जब वे बाहर निकल आये तो उस की सेना ने उन को मार डाला। यह कर्म बहुत ही अपवित्र था और एथेनियनों ने सोचा कि हमारे नगर पर बड़ा आंतक आवेगा। सो उन्हों ने मिजाक्लीज़ के कुल को जो एलिकामिया-नोडी कहलाते थे, बुलाया कि जिस में उन से बदला लिया जाय। यह समझा जाता था कि यह सब कुल इस पाप से अपवित्र हो गये। वर्षों तक अमीरों में यही झगड़ा चलता रहा कि ऐलिकमियानोडी को छोड़ा जाय या नहीं। सर्वसाधारण इन के शासन से बहुत रुष्ट हो गये। अंत में एक बुद्धिमान् यूपाट्रिडो, सोलन, ने अलिकमियानोडी को समझा दिया कि तुम अपनी जांच हो जाने दो। वे परमात्मा की आज्ञा भंग करने के दोषी ठहरे और उन को नगर निष्कासन दंड दिया गया।

५—सोलन ने ऋणियों की रक्षा की—अब सोलन में अमीर ग़रीब सब को बड़ा विश्वास हो गया अमीरों ने देखा कि यदि

साधारण मनुष्यों की विपत्ति और दिवाला टालने की कोई विधि नहीं काम में लाई जायगी तो टाइरंट का जन्म हो जायगा। इस कारण उन्हों ने सोलन को अधिकार दे दिया कि जो कुछ भी तुम उचित समझो सो करो। मनुष्यों की सब से बड़ी विपत्ति ऋण था। किसानों ने धनवान पुरुषों से बड़े ऊंचे सूद पर रुपया ले रक्खा था और अपने खेत गिरवीं रख दिये थे। इस भांति जो खेत गिरवीं रखे जाते थे उन की मेंड पर छोटे २ स्तंभ बना दिये जाते थे जिन में ऋण के धन की संख्या और धनी का नाम खुदे हुए होते थे। यह स्तंभ साक्षी का काम देते थे। अधिक सूद के कारण ऋण प्रति वर्ष बढ़ता ही जाता था और किसान निराश हो जाता था कि यह ऋण अब मैं नहीं दे सकूंगा और वह उस खेत के मजदूर की भांति रह जाता था जिसका कि वह कभी स्वामी रह चुका था। वह ऋणी जो ऋण भी नही पटा सकता था और न उसके खेत ही होते थे उसकी दशा और भी शोचनीय होती थी क्योंकि वह अपने साहूकार का वास्तव में दासही हो जाता था तथा बेच भी दिया जा सकता था। सो स्वतंत्र कृषक [ज्योमारी] कम होते जारहे थे। कुछतो बाहर दासों की भांति से बेचे जारहे थे। कुछ वहां ही मजदूरों की भांति काम कर रहे थे या निर्धनता के कारण से अपने जीवन की गाडी दुःख से घसीट रहे थे। रियासत की रक्षा के लिये सोलन को बड़ी तर्कीबें काम में लानी पडीं। उसने आज्ञा दी कि वह साधारण चांदी की ड्रेकमी मुद्रा [सिक्का] कुछ हलकी बनायी जाय जिसमें सौ नई ड्रेकमी पुरानी तेहत्तर ड्रेकमी के बराबर होवें परंतु यह नई ड्रेकमी पुरानी के बराबर समझकर स्वीकार की जांय और

ऋण पट जाय। इसभांति से जब १०० पुरानी ड्रैकमी किसी को किसी साहूकार को देना होता था तो वह नई १०० ड्रैकमी देकर निपट जाता था। यह नई ड्रैकमी ७३ के बराबर तो होती ही थी अतः उसको २७ कम देना पड़ती थी। जिन किसानो पर राज्य का कुछ रुपया चाहिए था उनको वह छोड़ दिया गया और नये सिर से काम आरंभ हुआ। बहुत से मनुष्य जो दूर दूर बाहर बेच दिये गए थे फिर बुला लिये गये और छोड़ दिये गये। सोलन ने यह भी नियम कर दिया कि आगे को कोई भी एथिनियन ऋण के कारण दास नहीं बनाया जा सकेगा। इन कामों से किसानों को बहुत लाभ पहुंचा; और सोलन के पद्य से हम को विदित हो जाता है कि गिरवीं के स्तंभ कैसे नदारद हो गये।

६--सोलन की बनाई हुई राज्यपद्धति—डिमोक्रैसी (धनाढ्यसत्ता)।

रियासत की शासनपद्धति और कानून बनाने का भार भी सोलन को सौंपा गया। अब तक मुसाहिब ही रियासत के सर्वस्व थे। और रियासत को पहिले सोलन ही ने ऐसा बनाया कि इन मुसाहिबों के कुल के बाहर के मनुष्य एथन्सनिवासी भी शासन में योग दे सकते थे। वह बाजार लगने की जगह वाली सर्वसाधारण की पंचायत जिस का वृत्तांत होमर के पद्य में हम पढ़ चुके हैं कभी समाप्त नहीं हुई थी और एथेन्स में होती रहती थी, परंतु उस के हाथ में अधिकार कभी कुछ नहीं आये। सोलन ने पहली बार इन को राज्य का एक असली भाग बनाया। आर्कनों का निर्वाचन ऐसी पंचायत द्वारा होते थे, कानून भी यही पास करती थी और माजिस्ट्रेटों के कामों

की जांच कर सकती थी। स्वतंत्र देश एटिका के प्रत्येक निवासी को पंचायत में सम्मति देने का अधिकार था चाहे वह अमीरों के कुल में उत्पन्न होता था या साधारण पुरुष के। परंतु सोलन का यह विचार नहीं था कि जो कोई भी चाहे वह खड़ा हो कर पंचायत में कानून पेश कर दे। उस ने चार सौ सभासदों की कौंसिल बनाई कि जो काम भी बड़ी पंचायत के सामने रक्खा जाने को होवे उस को यह कौंसिल तयार करे। और कौंसिल में जिस बात की मंजूरी न हो गई होवे वह बड़ी पंचायत में पेश नहीं हो सकती थी। कौंसिल के सभासदों को प्रजा हर साल चुनती थी।

सोलन ने प्रजा को कुछ भागों में विभक्त कर दिया था परंतु यह भाग पहले की भांति नहीं हुए थे कि ऊंचे कुल के अमीर एक भाग में हों और सर्व साधारण दूसरे भाग में। उसने एटिका भर के निवासियों को चार भागों में बांटा। यह बांट पृथ्वी के माप के हिसाब से की गई थी। जो लोग अधिक धनाढ्य थे उनको अधिक शासनाधिकार दिया गया, परंतु उनको कर भी अधिक देना पड़ता था। रियासत का काम भी इन्हीं को अधिक करना पड़ता था। सब से अधिक धनवान् या प्रथम श्रेणी के मनुष्य ही आर्कन हो सकते थे। इस भांति धनाढ्य 'यूपट्रिडी' जो कि शासन के काम को भली भांति से जानते थे, अभी रियासत के मुखिया बने ही रहे। सब से अधम श्रेणी वाले न 'पंचायत' के ही सभासद हो सकते थे और न उन्हें ऊंची सरकारी नौकरी मिल सकती थी। इन को कर नहीं देना पड़ता था और जब कभी युद्ध करने को वे बुलाये जाते थे तो

उन को शस्त्र इत्यादि अपने पास से नहीं ले जाना पड़ता था, परन्तु शेष दोनों श्रेणी के मनुष्यों को शस्त्र अपने पास से ले जाने पड़ते थे और जब घुड़सवार हो कर लड़ना पड़ता था तो घोड़े भी अपने ही ले जाने होते थे। सोलन की जैसी शासनपद्धति कि जिस में शासन के अधिकार धन के हिसाब से मिलते हैं 'डिमोक्रसी' कहलाती है। इस से पहले मनुष्य ऊंचे कुल में उत्पन्न होने ही से शाशसनाधिकारी हो सकता था और अब भी यद्यपि पहिली श्रेणी में निस्संदेह यूपैट्रिडी ही अधिक थे, तथापि कोई एथीनियन भी जिस के पास अधिक जायदाद होती प्रथम श्रेणी में हो सकता था अर्थात यह बंधन तो नहीं था कि यूपैट्रिडी के अतिरिक्त और कोई भी प्रथम श्रेणी में न हो सके और ऊंचे २ पद न पा सके। और सब प्रजा को यद्यपि असल में शासन में भाग नहीं मिला था परन्तु शासन तब भी कुछ न कुछ उन के वश में था क्योंकि आर्कन को वेही चुनते थे और उन के कामों की जांच कर सकते थे।

७—एरियोपैगस (महती सभा)—मुसाहिबों की एक बहुत पुरानी सभा थी जो एरियो पैगस नाम के पहाड़ पर जुटा करती थी और स्वयं भी एरियो पैगस कहलाती थी। पहले यह हत्या के अभियोगों का फैसला किया करती थी। सोलन ने उसके अधिकार भी बढ़ा दिये, और ठहराया कि यदि यह महती सभा 'एरियोपैगस' राजी हो जाय तो प्रति बर्ष आर्कन लोग इसके सभासद होजाया करें और शेष जीवन भर इसके सभासद बने रहें। सोलन ने इस एरियोपैगस को यह अधिकार दे दिया कि यह किसी कानून को भी, जिससे राज्य की क्षति होती जान पड़े, काट सकती है और पास होने से रोक

सकती है। किसी पुरुष को भी, जो ऐसे रहता हो कि जिससे एथीनियनों को कलंक लगे, यह डांट या दंड दे सकती थी और यह बर्ताव वह उनके साथ भी कर सकती थी जो अपने बच्चों का ठीक पोषण नहीं करते हों या ठीक शिक्षा न देते हों। यह एरिओपैगस शासन संबधी बातों में नियम बद्ध होकर बराबर भाग नहीं लेती थी। इस का मान अब इय बहुत होता था और यूपेट्रिडी इससे गर्वित होते थे।

८—सोलन के कानून—सोलन को कानून बनाने का भार भी दिया गया था कि जिसमें वह ड्रैको के कानूनों के बदले और कानून बनावे। पहले दिनों में सब देशों में घराने में कोई मनुष्य हुवा करता था जो शेष घरवालों पर अधिकार चलाता था, परन्तु अब यह अधिकार कानून का होगया। पहले दिनों में पिता का बच्चों पर बहुत अधिकार होता था और बच्चों को मार तक डाल सकते थे और जब कोई ऐसा मनुष्य मर जाता था जिसके संतान नहीं होती थी तो उसके गोत्र वाले उसके दाय भागी होते थे। सोलन ने विचारा कि बच्चों की स्वतंत्रता और जीवन बच्चों के पिताओं की इच्छा पर निर्भर नहीं रहना चाहिये और मनुष्य के बच्चा न होने पर उसके गोत्रजों का उसके माल पर कुछ अधिकार नहीं है। सो उसने एक कानून यह भी बना दिया कि किसी को अपने बच्चों को बेचने या बंधक रखने का अधिकार नहीं है और जिसके कोई बालक नहीं हो उसको अधिकार है कि वह मरते समय अपना धन चाहे जिसको देदेवे। यदि पिताने लड़के को शिक्षा दी होती थी तो लड़के को बुढ़ापे में पिता की सेवा सुश्रूषा करनी पड़ती थी। क्योंकि

एथेंस में पुलिस या सेना तो थी ही नहीं इस लिये सोलन ने नियम कर दिया कि प्रत्येक पुरुष को रियासत की क्षति इत्यादि से रक्षा करनी चाहिये। इस कारण से वह उनको दंड देता था जो कि देश में किसी प्रकार का झगडा उपस्थित होने पर दृढ़ संकल्प से किसी न किसी ओर नहीं हो जाते थे। सोलन ने उन लोगों को क्षमा करके जिन्हों ने अपने को पिछली गड़बड़ों मे कलंकित किया था अपना काम तमाम किया और अक्लिमियानोड़ी एथेंस को लौट आये (सन् ईस्वी से ५९४ वर्ष पहले) !

९—नामोथेटी कानून रचयिता-जो बुराइयां एथेंस में थीं वे और युनानी रियासतों में भी कसरत से थीं और एथेंस की भांति इन में से बहुत सी रियासतों में कानून बनाने का भार केवल एकही मनुष्य को सौंप दिया जाता था जिसमें कानूनों से जो मनुष्य असंतुष्ट रहे हों वे संतुष्ट हो जावें और कानूनों की कठिनता से वे कुचले न जांय और परस्पर मित्र भाव से बिना लड़े झगड़े हुए रहें। जिनको कानून बनाने का भार सौंपा जाता था वे नामोथेटिक कहलाते थे। इन में से कोई २ तो अपना काम बड़ी बुद्धिमता और सफलता से करते थे और वास्तव में नये जीवन का संचार कर देते थे। किसी नामोथेटा के कानून इतने विख्यात नहीं हैं जितने कि सोलन के विख्यात हैं।

१०—अनैक्य--पिजिस्टेटूस नामक टाइरेंट--सोलन की की हुई उन्नति होने पर भी एटिका का रंग न बदला। बड़े २ अमीरों में शत्रुता रहती थी, और क्योंकि एटिका बहुत बड़ी रियासत थी, इस कारण से उत्तेजित किये जाने पर उसके एक भाग के निवासी दूसरे भाग के निवासियों

के विरुद्ध सहज में उभड़ जाते थे। एटिका में तीन दल थे मैदान में रहने वाले, पहाड़ों पर रहने वाले, तथा सागर तट पर रहने वाले। पिछला दल इनमें सब से अधिक निर्धन तथा असंतुष्ट था, और सबसे अधिक चलते हुए एक अमीर ने अपने को उनका नेता बना लिया। तटस्थ दल का नेता मिजाक्लीज था, जो कि एक आल्किमियोनोडी कुल का मनुष्य था और उस मिजाक्लीज का पौत्र था जिसने साइलन के सहचरों को मार डाला था। एक दिन पैंट के दिन जब गांव वाले नगर ही में थे, तो मजिस्ट्रेटस ने अपने शरीर को रुधिर से रंग लिया और हाट में होकर गाडी पर चढ़कर निकला और कहने लगा कि प्रजा का पक्ष लेने के कारण शत्रुओं ने मुझ को अधमुवा कर दिया। पिजिस्ट्रेटस के एक मित्र ने, जिस को सब भेद विदित था और जिस के साथ यह षड्यंत्र रचा गया था लोगों को यह सलाह दी कि इस की रक्षा को ५० गदायुक्त पुरुष देदेने चाहियें। सोलन ने बहुतेरा मना किया परंतु इस का कुछ फल नहीं हुआ; धीरे २ रक्षक बढ़ाकर ४०० कर दिये गये। इस के अनंतर जब पिजिस्ट्रेटस ने समझा कि मैं काफ़ी शक्तिमान् हूं तब उसने एक्रोपालिस किले पर अधिकार जमाया और वह टाइरंट बन बैठा। मैदान और तटस्थ दलों ने दोबार उसको निकाल दिया परन्तु सन् इस्वी से ५४५ वर्ष पहिले वह तीसरी बार फिर टाइरंट बन बैठा और सन् ईस्वी से ५२७ वर्ष पहिले तक निष्कंटक राज्य करता रहा। वह यद्यपि विदेशी शरीर रक्षक अपनी रक्षा को रखता था, परंतु उस ने बड़ी कोमलता से राज्य किया, और राज्य सोलन की शासन-पद्धति ही अनुसार उस मे होने दिया, केवल हेर फेर इतना ही हुआ

कि राज्य के ऊंचे ऊंचे पद उसके कुनबे वालों को ही मिलते थे। उस ने ऐसे धार्मिक त्योहार स्थापित किये जिनमें सब प्रजा भाग ले सके, उसने मंदिर और सरकारी इमारतें बनाकर एथेंस की शोभा बढ़ाई, सड़कों की दशा सुधारी और पानी निकालने को नालियां बनवाईं। वह एथेंस को अच्छे अच्छे कवि लाया और उसने यूनान भर में पुरानी कविता की खोज की और विद्वानों को उन कविताओं से अशुद्धियां और गड़बड़ दूर करने को नियुक्त किया।

११–हिपियस और हिपार्कस–पिजिस्ट्रटस की मृत्यु हो जाने पर (इस्वी सन् से ५२७ वर्ष पहले) उसका सब से बड़ा पुत्र हिपियस गद्दी पर बैठा। उस ने दयापूर्वक शासन किया परंतु इस्वी सन् से ५१४ वर्ष पहले हिपियस के भाई हिपार्कस ने हार्मोडियस नामक एक युवा पुरवासी की बहन का मान भंग किया, इस कारण हार्मोडियस और उस के मित्र ने जिस का नाम एरिस्टाजिटन था, टाइरंट (हिपियस) और उसके भाई दोनों को संसार से उठा देने की ठान ली। वे हिपार्कस के मारने में सफल मनोरथ हुए परंतु हिपियस निर्भयता के कारण बच गया। एरिस्टाजिटन और हार्मोडियस भी समाप्त हो गया। इसके उपरांत हिपियस संशयपूर्ण और अविश्वासी तथा निर्दयी हो गया और नगरवासियों के प्राण लेने लगा और उनसे बुरा बर्ताव करने लगा।

१२–टाइरंट लोगों के शासन का अन्त– पिजिस्टेटस के तीसरी बार आने और टाइरंट बन जाने के बाद से अल्किमिया-नोडी फिर देश निकाले ही में रहने लगे थे। ये लोग धनाढ्य तो थे ही और किसी धर्मात्मापन के काम को कर के अपना

कलंक दूर किया चाहते थे। इधर डेल्फी के देव मन्दिर में आग लगी थी और वह भस्म हो गया था सो उन्होंने उस की मरम्मत का ठेका ले लिया था और यद्यपि ठहराव में केवल साधारण पत्थर लगाना ठहरा था परंतु उन्हों ने संगमर्मर से उस को बनवा दिया। इस से देवता उन से प्रसन्न हो गया और क्योंकि वे यह तो जानते ही थे कि जब तक पिजिस्ट्रेटस के घराने के हाथ में शासन रहेगा तब तक हम एथेंस में नहीं घुस पावेंगे सो उन्हों ने मंदिर की पुजारिन को अपनी ओर घूस दे कर तोड़ लिया और कह दिया कि जब कभी स्पार्टा के राजा मंदिर से किसी विषय में सम्मति मंगवावें तो यह ही उत्तर देना कि "एथेंस को स्वाधीन कर देओ"। जब स्पार्टा ने देखा कि हम जब कभी सम्मति मांगते हैं तो देवता सलाह न देकर सदा एथेंस को स्वतंत्र करा देने की आज्ञा देता है तो उस ने सोचा कि देवता की आज्ञा पालन करनी चाहिये॥ तब स्पार्टा ने हिपियस को निकाल देने के लिये एक सेना भेजी और जब इस सेना की पराजय हुई तो स्पार्टा के राजा ने क्लियोमिनीज के सेनापतित्व में दूसरी सेना भेजी। हिपियस के बच्चे क्लियोमीनीज़ के हाथ में पड़ गये और उन को पाने के लिये हिपियस प्रतिज्ञा छोड़ने पर राजी हो गया। पिज़िस्ट्रेटस के घराने की डाइरेट श्रृंखला यहां पर टूट गई (सन् इस्वी से ५१० वर्ष पहिले)। एथेनियन लोगों को हिपियस के पिछले निर्दयता के चार वर्ष याद आजाने पर कंपकंपी बंध आती थी और अरिस्टाजिटन और हार्मोडियस का स्मरण वे लोग भक्ति से यह समझ कर करते थे कि इन्हों ने एथेंस का उद्धार किया है।

१३—क्लाइस्थेनीज की शासन पद्धति—डिमाक्रैसी (प्रजातंत्र)—हिपियस के चले जाने पर दल बंदी और झगड़ा फिर नये सिरे से चल पड़ा। बहुत से ऊंचे कुल वाले अमीरों ने जिन का नेता आइसागोरज़ था अमीरों के शासन को पुनः उसी भांति स्थापित करना चाहा जैसा कि सोलन से पहिले था परन्तु मिजाक्लीज़ का पुत्र क्लाइस्थेनिज अल्किमियानाडी कुल का नेता बन कर उन के विरुद्ध उठ खड़ा हुवा। मिजाक्लीज ने सिसियन के टाइरंट की लड़की के साथ अपना विवाह किया था इस टाइरंट का नाम क्लाइस्थेनिज था और इसी नाम पर मिजाक्लीज ने अपने पुत्र का नाम क्लाइस्थेनिज रख लिया था। इस ही ने डेल्फ़ी की पुजारिन को घूस देकर अपनी ओर फोड़ लिया और अब या तो ऊंचे होने की तृष्णा से या एथेंस के प्रेम से उस ने प्रजावर्ग का पक्ष लिया और उन का शासन से और भी अधिक संबंध बढ़ाया।

१४—जातियां और जिले—मनुष्य पहले से चार भागों में बंटे हुए थे जो आयोनिक जातियां कहाती थीं। क्लाइस्थेनीज ने इस बांट को दूर कर दिया क्योंकि इस से मनुष्य को अपनी जाति के अमीरों की बड़ी इज्ज़त करनी पड़ती थी और सब को उन का मुंह ताकना पड़ता था। उस ने रियासत को बहुत से जिलों में बांट दिया। इन जिलों को 'डेमी' कहते थे। तब उस ने दस जातियां बनाई और एक जाति में दूर २ की डेमियों के मनुष्य रख दिये, अर्थात् एक एक डेमी में सब जाति के मनुष्य होते थे और एक जाति के मनुष्य बहुत सी डेमियों में पाये जाते थे अतः एक जाति के मनुष्य छिन्न भिन्न डेमियों में हो गये और एक जाति के मनुष्य मिले हुए एक ही स्थान

पर न रहे । ऐसा करने से नई कोई जाति पुराने कुलों की भांति न रही । उस जाति के मनुष्य एटिका के भिन्न प्रदेशों में हो गये, उत्पत्ति से एक दूसरे का संबंध न रहा और एक कुल के मनुष्य एक जाति वाले न हो कर भिन्न २ जातियों में विभक्त हो गये । ऐसा क्लाइस्थनीज़ ने इस आशा से किया कि बड़े बड़े अमीर अब अपने पक्ष में दल नहीं बांध पावेंगे और पहिले का देश-विभाग अर्थात मैदान, समुद्र तट, और पर्वत—भी उठ जायगा ।

१९—कौंसिल—सोलन की शासन पद्धति में जो ४०० मनुष्यों की एक कौंसिल थी उस में चारों आयोनिक जातियों से सौ सौ सभासद चुने जाते थे । क्लाइस्थनीज़ को तो दसों ही नई जातियों में से सभासद चुनने थे अतः उस में सभासदों की संख्या ५०० कर दी और ५० मनुष्य प्रत्येक जाति से चुने जाते थे । धन के हिसाब से जो सोलन ने मनुष्यों को बांटा था उस में क्लाइस्थनीज़ ने हस्तक्षेप नहीं किया और न अमीरों के स्वत्वों में हाथ डाला; परंतु जब उस ने डेमियों में राज्य को बांटा तो एटिका के सब ही मनुष्यों को चाहे वे वास्तव में एटिका निवासी थे या विदेशी उस ने बांट में मिला लिया । इस भांति बहुत से व्यापारी तथा प्रवासी लोगों को, जो 'एलीन' कहाते थे, एथेंस के सिटीजन के अधिकार मिल गये । अब मनुष्यों को यह अधिक जान पड़ने लगा कि हम को भी शासन में वास्तविक अधिकार प्राप्त है । पुराने कुलों ने अपनी प्राचीन रीतियां और त्योहार अभी छोड़ नहीं और वे अपने कुल से गर्वान्वित होते थे; परंतु शासन संबंधी सब कामों में मनुष्य को अपनी २ जाति वालों के साथ काम

करना होता था ।

१६—पंचायत—क्लाइस्थेनीज़ की यह इच्छा थी कि सर्व साधारण की पंचायत शासन में सोलन के समय से अधिक योग दे, और क्योंकि पंचायत में कोई भी ऐसी बात पेश नहीं हो सकती थी जिस की मंजूरी कौंसिल में नहीं हो चुकी हो, इस कारण से क्लाइस्थेनिज ने पंचायत को अधिक काम करने वाली बनाना चाहा । क्योंकि ५०० मनुष्य नियम पूर्वक साथ साथ काम नहीं कर सकते थे, इस लिये कौंसिल को क्लाइस्थेनीज़ ने कमिटियों (समितियों) में बांट दिया । प्रत्येक समिति के मनुष्यों को एक २ जाति चुनती थी । ऐसा करने से कोई अमीर समिति को अपने कुल वालों से नहीं भर सकता था । इस संस्कार के उपरांत कौंसिल तथा बड़ी पंचायत शासन में अधिक भाग लेने लगी ।

१७—सेना के सरदार लोग—इन नई जातियों से संबंध रखने वाला एक नया पद निकाला गया जो बड़े काम का था । प्रत्येक जाति को एक २ सरदार (स्ट्रैटेजस) चुनना होता था और ये १० सरदार एक एक दिन एक एक मनुष्य बारी २ से सेनाध्याक्ष रहा करते थे और एक आर्कन, जो पालिमार्कस कहाता था, उनके साथ सेनापति रहता था । धीरे धीरे इन सरदारों ने विदेशी राज्य संबंधी बातों का प्रबंध भी अपने हाथ में लेलिया ।

१८—जूरी (सम्मतिदाता)—इसी समय में पंचायत कचहरियों या जूरियों में बट गई, जिसमें मुख्य अभियोगों का न्याय आर्कनों या एरिओपैगस सभा द्वारा न हो कर नगर निवासियों का जूरी के सम्मुख हुआ करे ।

१९—देश निकाला—क्लाइस्थेनीज़ यह देख चुका था कि यूनान भर में ऊंचे होने की इच्छा वाले यूनानी टाइरेंट बन जाने में समर्थ हो जाते थे क्योंकि राज्य की ओर से सेना या पुलिस तो होती ही नहीं थी जो प्रजा के स्वत्वों की टाइरेंट से लड़ कर रक्षा कर सके और वह यह भी डरता था कि कहीं कोई और टाइरेंट फिर न उठ खड़ा होवे और एथेंस पर दखल कर बैठे। इस लिये उस ने 'आस्ट्रैसिज़्म' नामक एक रीति निकाली, जिससे पुरवासी ऐसे मनुष्य से अपना पिंड छुड़ा सकते थे जिस से कि उनको यह भय होता था कि यह टाइरेंट बन बैठेगा या रियासत में बखेड़े पैदा कर देगा। पहले तो कौंसिल और पंचायत को निश्चय करना पड़ता था कि रियासत वास्तव मे खतरे में है या नहीं, तब पुरवासियों के एकत्र होने का कोई दिन निश्चय कर दिया जाता था। ये लोग एकत्रित हो कर किसी भी पुरुष का जिस को वे भयंकर समझते थे नाम लिखते थे। यदि ६००० टिकटों में एक ही पुरुष का नाम निकलता था तो वह १० वर्ष को निर्वासित कर दिया जाता था। परंतु उसका माल असबाब जब्त नहीं होता था और दस वर्ष बाद वह लौट सकता था और पुनः सिटीजन (पुरवासी) के अधिकार उस को प्राप्त हो जाते थे।

२०—पर्ची—यों तो उसी समय या कुछ काल उपरांत एक और तर्कीब निकाली गई जिस से उच्चाभिलाषी मनुष्य तो दलबंदी करने से रुक गये और न्यून प्रभाव वालों के हाथ उत्तम अवसर लगा। अभी तक तो यह नियम था कि जो आर्कन होना चाहे वह अपना नाम लिख कर दे जाय और फिर लोग उन में से आर्कनों को चुन लेते थे, परंतु अब चुनने

के बदले उन नामों की पत्ती डाल ली जाती थी और जो नाम निकलते थे वे ही आर्कन हो जाते थे । अब उच्चाभिलाषी बढ़ से बढ़ कर यह कर सकता था कि लिख कर अपना नाम दे आता और क्योंकि वोट लेना बंद हो गया अतः मनुष्यों को अपने पक्ष में फोड़ने से भी कुछ लाभ न रहा । परंतु सब से अधिक काम के कर्मचारी स्ट्रेटजाई (सरदार लोग) पत्ती द्वारा नहीं चुने जाते थे क्योंकि यदि पत्ती से ऐसे मनुष्य का नाम निकलता कि जो सेनापति होने के अयोग्य होता तो बड़ी आपत्ति होती ।

२१—स्पार्टनों का हस्तक्षेप—क्लाइस्थनीज़ के किये हुए संस्कार से प्रजाशक्ति बहुत प्रबल हो गई और शासन पद्धति बदल कर डिमाक्रेसी अर्थात् प्रजातंत्र हो गई और थोड़े से मुसाहबों का शासन टूट गया । बहुत से अमीरों ने, जिन के दल का नेता आइसागोरज था, क्लाइस्थनीज का भर सक विरोध किया और जब आइसागोरज ने देखा कि क्लाइस्थनीज के संस्कारों के आगे मेरी कुछ नहीं चलती है तो उस ने स्पार्टा के राजा क्लियोमेनिस से निवेदन किया कि क्लाइस्थनीज टाइरंट बनना चाहता है और यदि ऐसा हो गया तो वह अपने नाना सिसियन के टाइरंट क्लाइस्थनीज के अनुसार डोरियनों से शत्रुता रक्खेगा । क्लियोमेनिस बड़ा लोभी था और वह चाहता था कि स्पार्टा के अधिकार में ही एथेंस रहे । इसलिये क्लाइस्थनीज को दूर करने के लिये उस ने एथेंस वालों को बुला कर उन से कहा कि क्योंकि अल्किमियानोडी कुल को देवता का शाप है इसलिये इन को निकाल देओ । क्लाइस्थनीज उसी समय एथेंस से निकल गया और उधर क्लियोमेनिस थोड़े सिपाहियों की सेना लेकर

एथेंस पर चढ़ आया और उसने सात सौ घरानों को, जिन को आइसागोराज ने प्रजातंत्र का पक्षपाती बताया, निकाल बाहर किया। तब उस ने ५०० मनुष्यों की कौंसिल को दूर करना चाहा परंतु सब प्रजा शस्त्र लेकर लड़ने को तैयार हो गई क्लियोमेनिस की सेना की पराजय हुई और एथेंस वालों ने स्पार्टनों को हांक कर दुर्ग एक्रोपोलिस में बंद कर दिया। तदुपरांत उन की सेना को तो बिना हानि पहुंचाये हुए निकल जाने दिया परंतु जितने नगर के रहने वाले उन की ओर हो गये थे उन सब को मार डाला। तब स्पार्टा ने अपनी पेलोपोनिसस वाली सहायक रियासतों को बुलाया और यह संकल्प करके कि आइसागोरज को टाइरंट बनाऊंगा, ऐटिका पर आक्रमण कर दिया। आइसागोरज इस बात पर राजी था कि एथेंस को स्पार्टा के आधीन करा दूंगा। उस ने अपने विचार को अपने सहायकों को प्रकट नहीं किया परंतु जब वे ऐटिका के यलूसिस स्थान पर पहुंचे तब उन्हें सब भेद मालूम हो गया और उन्हों ने आगे बढ़ने से इनकार किया और सेना तितर बितर हो गई। क्लियोमेनिस ने थेबिस के रहने वाले और यूबिया देश के चाल्किस नगर निवासियों को भी एथेंस से युद्ध करने को फुसला लिया था। इधर एथेंस वालों ने स्पार्टा की सेना को तीन तेरह होते देख कर थेबिस वालों की ओर कूच कर दिया और उन को यूरिपस समुद्र के किनारे पर पाया। वे चाल्किस निवासियों के आने की बाट जोह रहे थे। एथेनियों ने थेबिस वालों को हरा दिया और तब यूरिपस के उस पार जाकर उसी दिन चाल्किस निवासियों पर ऐसे भारी की जय पाई कि चाल्किस की रियासत उन के

बश में होगई थी। उन्हों ने अमीरों की भूमि छीन ली और वहां ४००० एथेनियन किसानों को बसा दिया। स्पार्टा के हृदय में एथेंस को देख कर अब और भी डाह हुआ। उन को यह पता भी चल गया कि हम से जो डल्फी की पुजारिन ने हिपियस को निकलवा दिया सो उसने घूस खा ली थी, सो उसने एथेंस को नीचा दिखाने और हिपियस को फिर गद्दी पर बैठाने की ठानी। परंतु पिछले हाल को देख कर उन का साहस यह न हुआ कि सहायकों से भेद को गुप्त रक्खें। इसलिये उन्होंने पेलोपोनिसस के सब भागों से प्रतिनिधि बुलाये और उन सब को हिपियस को फिर राजा बनाने को समझाया। परंतु कोरिंथ के प्रतिनिधि सोसिक्लीज ने स्पार्टा वालों को बहुत बुरा भला कहा, और कहा कि तुम लोग तो टाइरंट शासन के सदा ही से विरोधी हो अब तुम में यह परिवर्तन कैसे हो गया तथा उन को यह भी स्मरण दिलाया कि देखो पिरियन्दर से कोरिंथ को कितनी हानि हुई थी। उपस्थित मनुष्यों ने सोसिक्लीज की प्रशंसा में तालियां बजाईं, और जब स्पार्टनों ने अपनी कुछ चलते न देखा तो वे चुप बैठ रहे। इस प्रकार से एथेनियनों ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की थेबिस तथा चाल्किस निवासियों पर बाढ़िया जय पाई, नहीं तो इन्हीं लोगों ने एथेंस में टाइरंट शासन स्थापित कर दिया होता। इधर इन के हौसिले भी बढ़ गये। क्लाइस्थेनीज के संस्कारों से अमीरों की परस्पर की शत्रुता घट गई और गरीब जानने लगे कि शासन में हमारा भी हाथ है अब टाइरंट की किसी को भी इच्छा नहीं थी। परस्पर ऐक्य अधिक हो गया। अगले फारिस के युद्ध में घर के दुष्ट भेदियों के होते हुए भी

आयोनियन परस्पर मिल कर काम करते रहे और जब २ आवश्यकता हुई तो अमीर गरीब दोनों ने अपना अपना कर्तव्य पालन किया।

चौथा पाठ।

आयोनियनों का विद्रोह और फारिस वालों से युद्ध।

१—लीडिया ने आयोनिक कालोनियों को जीत लिया—एशिया माइनर में जो आयोनिक कालोनियां थीं वे सब समुद्र तट के नगर थे। नगर निवासियों ने देश के भीतरी भाग को जीतने का प्रयत्न नहीं किया और न फ्रिजिया और लीडिया इत्यादि भीतरी रियासतों के राजाओं ही ने पहले इन कालोनियां पर आक्रमण किया वरन् इन को समुद्र के तट पर शांतिपूर्वक अपना अधिकार स्थिर रखने दिया। ये नगर युरोपीय यूनान के नगरों से बहुत बहुत पहिले ही से अधिक धनाढ्य होने लगे थे। सब से अधिक बड़ी आयोनिक कालोनियां थीं। ये बारह स्वतंत्र नगर थे और यद्यपि इन सब के त्योहार एक ही थे और यह डारियनों और इयोलियनों से अपने को भिन्न जाति का समझते थे, तथापि ये मिल कर काम नहीं करते थे और न इन बारहों नगरों में कोई नगर और नगरों का ऐसा नेता था जैसा कि पेलोपोनिस का नेता स्पार्टा था। जब तक कोई कट्टर शत्रु उन पर आक्रमण नहीं करता तब तक उन्हें अपने में मेल न होने की हानि भी नहीं सूझती परंतु सन् ईस्वी से ७२० वर्ष पहिले के लगभग लीडिया में एक नया वंश गद्दी पर बैठा, जिसने लीडिया को एक बड़ा राज्य बनाना तथा समुद्र के सब तट को जीतना चाहा। इन राजाओं ने आयोनिक नगरों पर एक एक करके आक्रमण किया, अन्त में सन् ईस्वी से ५५० वर्ष के पहिले क्रिसस इन सब का राजा बन बैठा। परंतु क्रिसस की यह

इच्छा न थी कि वह किसी यूनानी नगर को हानि पहुंचावे या उस का सत्यानाश कर दे। वह उन को अपने राज्य का भाग बनाना चाहता था। लीडिया के राजा उन की रीतियों को समझने और पसन्द करने लगे थे। वे देवता की सम्मति भी मंगवाया करते और बड़े २ चढ़ावे भेजा करते थे और जब कभी यूनानी लोगों से वे युद्ध भी करते थे तब भी उन के पवित्र स्थानों की ओर आंख नहीं उठाते थे। क्रिसस यह चाहता था कि ये नगर मुझ को थोड़ी २ भेंट देते रहें और और मुझ को महाराजा मानते रहें, और सब बातों में उस ने नगरों का प्रबंध वहां वालों ही के हाथ में रहने दिया। वह यूनान की सब बातों को पसंद करता था, वह अपने दरबार में आये हुये यूनानी यात्रियों और कारीगरों की बड़ी खातिर करता था और यदि लीडिया राज्य कुछ दिनों और रहा होता तो यूनानी बातें शीघ्र हो एशियामाइनर में फैल गई होतीं। परंतु लीडिया शीघ्र ही एक असली एशिया की शक्ति द्वारा उलट दी जाने को थी जो कि यूनानी बातों से घृणा और उन का तिरस्कार करती थी। अब भावी घटनाओं के पढ़ने तथा समझने को कुछ देर के लिये यूनान की ओर से ध्यान तोड़ लेना चाहिये और एशिया की जातियों के बहुत पुराने इतिहास के समुद्र में गोता लगाना चाहिये।

(२) निनिविह—इशुमसीह से १००० वर्ष पहिले निनिविह के ईसू राजाओं ने पड़ोस की युफ्रैतिस नदी के पास की पृथ्वी जीत असीरिया को एक बहुत बड़ा राज्य बना दिया था। जिन दिनों उस का नक्षत्र उंचाई पर था तो असीरिया के राजाओं की हुकूमत पश्चिम में लीडिया तक और पूर्व में सिंध नदी तक फैली

हुई थी । ईस्वी सन से ३५० वर्ष पहिले के लगभग मिदिया और बाबुल विद्रोह करके स्वाधीन हो गये । यह बात निनिविह और बाबुल रियासतों के जुदा हो जाने के पीछे की है कि युहूदी लोग पकड़ कर निकाल दिये गये थे—इसराइल को असिरिया का राजा पकड़ लेगया, युधा को बाबुल के राजा ने पकड़ लिया ।

३—मिदिया वाले—मिदिया वाले, जिन्हों ने निनिविह के विरुद्ध विद्रोह किया था, युफ्रेतिस नदी के पूर्व की पहाड़ियों में रहते थे और बहादुर जाति के थे, और इन्हों ने पड़ोस की पहाड़ी जातियों को —जिन में फारिस वाले भी थे-- अपने अधिकार-में कर लिया । फारिस वाले उनसे दक्षिण में रहते थे । मिदिया के चौथे राजा सिग्राक्षरिस ने बाबुल के राजा नबूनसर के साथ निनि-वह के विरुद्ध मित्रता कर ली और ईस्वी सन से ६०६ वर्ष पहिले इस बड़े नगर निनिवह पर अपना अधिकार कर लिया और फिर उस का सत्यानाश कर दिया । क्योंकि मिदिया वालों की इच्छा विजय करने की थी और बाबुल पर आक्रमण करने को उनका साहस नहीं पड़ता था अतः उन्हों ने एशिया माइनर की ओर दृष्टि डाली । इस ओर जब तक लीडिया वालों से इन की मुठभेड नहीं हुई तब तक इन की विजय बढ़ती ही गई । जिस समय लीडिया और मिदिया वालों की सेना आमने सामने युद्ध को उद्यत हुई तो सूर्य ग्रहण हो गया और अंधकार पृथ्वी पर फैल गया । उन्हों ने ग्रहण को शकुन समझा और संधि करली जिस में यह स्थिर हुआ कि लीडिया और मिदिया के मध्य में हैलिस नदी सीमाविभाजक है, इस कारण से ईस्वी सन से ५५० वर्ष हिले क्रिसस ईजियन सागर और हैलिस नदी के मध्य के देश पर राज्य करता था ।

४--फारिसवाले--जब मिदिया वाले आगे राज्य प्रसार से रुक गये तो फारिस वालों ने साइरस के अधिपत्य में उन के विरुद्ध सिर उठाया और वे प्रशस्त मिदिया राज्य के स्वामी बन गये । क्रिसस को यह विदित था कि ये नये सिरे से देशों को जीतते फिरेंगे अतः उस ने युद्ध की तैयारी की। उस ने बाबुल के राजा वेलशजर और मिश्र के राजा अमासिस से सहायता विषयक संधि की और डेल्फी के देवता से यह पूछा कि साइरस से मैं युद्ध करूं या नहीं। उस को वड़ी बुद्धिमत्तायुक्त सम्मति मिली कि तुम स्पार्टा से मेल करो । स्पार्टा ने सहायता का वचन दिया, परंतु क्रिसस इन के बिना आये ही कैपदोकिया पर चढ दौड़ा और साइरस के साथ लड़ा परंतु उस का फल कुछ नहीं हुआ [ईस्वी सन से ५४७ वर्ष पहिले] । तब वह लीडिया की राजधानी सार्डिस को चला गया और उसन सहायकों से कहला भेजा कि पांचमास उपरांत अपनी सेना सार्डिस को भेज देना । परंतु साइरस इतना तैयार निकला जितना कि क्रिसस ने कभी अनुमान भी नहीं किया था। उस ने सार्डिस को कूंच कर दिया और सहायता पहुंचने से पहले क्रिसस को पराजित करके नगर पर अपना अधिकार जमाया । विजयी की शरण में सब लीडिया चली आई और उस को शासक स्वीकार करने को तटस्थ नगरों ने भी इस शर्त पर अपनी इच्छा प्रकट की कि तुम हमारे वे अधिकार रहने दो जो क्रिसस ने हमको दिये थे । परंतु साइरस ने नाहीं करदी और नगरों को यह निश्चय करना पड़ा कि नियमों ही पर उस के आधिपत्य को स्वीकार करें या अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये युद्ध करें । अंत में युद्धही की ठहरी और उन्होंने स्पार्टा से सहायता के लिये निवेदन किया। परंतु स्पार्टा ने कुछ

उत्तर नहीं दिया। अधीनता स्वीकार करने की मियाद भी निकल गई और साइरस के सेनापति हर्पेगस ने एक एक नगर का अवरोध किया।

९—आयोनिया का युद्ध—फारिस वालों का जिन्हों ने अब यूनानियों पर आक्रमण किया था, भयानक शत्रु यूनानियों को आज तक नहीं मिला था। लीडिया के युद्ध में उन्हों ने बड़ी अच्छी घुड़ सारों की सेना देखी थी परंतु फारिसवालों की सेना नई थी और वे रण-नीति से परिचित थे। उन के धनुषधारियों ने दुर्गों के रक्षकों को वाण से मार गिराया। वे अवरोध के नये २ यंत्र काम में लाते थे जिस-से अवरोध उठ न जावे। उन्हों ने नगरों के चारों ओर नालियें डालदीं जिस में कोई न तो भीतर जासके न भीतर से बाहर निकल सके। वे दि-वाल से मिलाकर ऊंचे २ बटीहे बना लेते थे जिस में उन पर चढ कर दीवार पर पहुंच जायं या नीचे २ पृथ्वी खोद कर दीवारों को गिरा देते थे। लीडिया वालों ने उनके पवित्र स्थानों को अछूता छोड़ दिया था, परंतु फारिस वाले मोहम्मद की सेना की भांति एक ईश्वर को मानते थे और मूर्तिपूजकों के सब कामों से घृणा करते थे। युद्ध भर में यूनानियों का क्रोध बढ़ाने और उन्हें सन्तप्त करने को फारिस वाले उन के मंदिरों को बर्बाद कर देते थे। एथेनि-यों ने देखा कि अब कुछ नहीं चलेगी और उन में से थोड़े से मनुष्यों ने अपनी स्वतंत्रता के उच्च और पवित्र प्रेम से विजयी राजा की अधीनता स्वीकार करने के बदले अपना घरबार छोड़ दिया। टियास के बहुत से प्रवासी जहाजों में बैठ कर थ्रेस में चले गये। फाकी निवासियों ने अपने घरने वालों से एक दिन के लिये संधि कर ली और इस समय में अपनी स्त्रियों और बच्चों को जहाज में बैठाल कर उन्होंने वहां से भेज दिया और वे स्वयं भी चल दिये और खाली

नगर फारिसवालों को छोड़ दिया। कुछ समय उपरांत उन में के थोड़े मनुष्य गृह-प्रेम के रोग से व्यथित हो कर लौट आये और शेष बहुत सी दुर्घटनाओं में जान पर खेल कर इटली के दक्षिण में बस गये। दूसरे नगरों को भी फारिस वालों ने जीत लिया और जब एक बार वे उन के हाथ में पड़ गये तो फिर उन के साथ दुष्टता का व्यवहार नहीं किया गया। परंतु यद्यपि उस समय उन की धनाढ्यता इत्यादि में घट्टा नहीं लगा था तथापि उन के सब से अधिक बुद्धिमान् सहवासी प्रीणि के व्यास ने उन को यह समझा दिया कि तुम फारिस वालों के बिलकुल वश में हो तथा तुम्हारी स्वतंत्रता छिनने के कारण ऐक्य की कमी ही है। जहाज तो उन के पास भी थे ही, व्यास ने उनको यही सम्मति दी कि फोकी वालों की सी कार्रवाई करना ही ठीक है—अर्थात् सार्डिनिया द्वीप को चले चलो और वहां मिल कर कोई बड़ा नगर बसा लो। परंतु सब नगरों में फोकियनों के से बिचार नहीं थे; उन्हों ने सोचा कि यद्यपि हम फारिस वालों की प्रजा हो गये हैं परंतु हमारे व्यवाहार और धन में कोई कमी थोड़े ही हो गई है इस विचार से व्यास की सम्मति अनुसार काम करने से उन्होंने इनकार कर दिया।

६—फारिस साम्राज्य का नाविक बल बढ़ना--हर्पैगस ने समुद्र तटस्थ सब स्थानों को जीत लिया और लेसबास और कियास द्वीपों ने भी फारिस की अधीनता स्वीकार करली परंतु मजे की यह बात थी कि फारिस वालों के पास इन द्वीपों तक पहुंचने को जहाज भी नहीं थे। जिन दिनो में हर्पैगस इन स्थानों को जीत रहा था तब दूसरी ओर

साइरस ने स्वयं बाबुल को घेर कर अपना अधिकार जमा लिया था। अब युहूदी लोगों को जो पहिले पकड़ कर ले आये गये थे, जुदा लौटने की आज्ञा दे दी गई। जब साइरस का देहान्त ईस्वी संवत से ५२५ पहिले हो गया तब फेनेशिया ने उस के पुत्र कम्बेसिस की आधीनता स्वीकार करली। अब फारिस वाले दो जल शक्तियों को—फेनेशिया वालों और आयोनियनों को—जहाजों का बेड़ा देने को वाध्य कर सकते थे और समुन्दर के पार भी जयपताका फहराने का बिचार कर सकते थे। कम्बेसिस ने जय किये हुए देशों की सूची में मिश्र देश और साइप्रस द्वीप और मिलाये, और वह ईस्वी सन् से ५२२ वर्ष पहिले परलोक सिधारा।

७-दारा ने राज्य में शांति स्थापित की- ेसिस के उपरांत एक झूठा धूर्त. साइरस के छोटे पुत्र स्मर्दिस होने का बहाना करके गद्दी पर बैठ गया। परंतु स्मर्दिस को साइरस ने मारडाला था। आठ मास के उपरांत भेद खुल गया और यह धूर्त मार डाला गया और साइरस के कुनबे का एक मनुष्य जिसका नाम दारा था राजा बना दिया गया। दारा बुद्धिमान् और नीतिज्ञ शासक था। जब वह गद्दी पर पैठा तो राष्ट्र का अधिक भाग विद्रोहयुक्त था। उसने सोचा: कि यदि इस भाग को हाथ से न निकलने दे कर सब पर राज्य करना है तो शासन अधिक नियमबद्ध होना चाहिये। उस ने राज्य को २४ भागों में बांटा और उन का नाम 'सत्रपियें' रक्खा और सब भूमि की माप कराइ जिस में वह यह निश्चय कर सके कि प्रत्येक सत्रपी पर कितना कर नियम किया जावे। मीडिया के सूसा नगर को उस ने शासन का केंद्र बनाया और

सूसा से राज्य के सब भागों को सड़कें बनवाई, और प्रबंध कर दिया कि जिसमें राजा के काम करने वाले को शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुंचाने में सुबीता हो सके। दारिक नाम का सिक्का चलाया गया था, जो सर्वत्र चलता था। इजियन सागर से सिंध नदी तक एक ही शासन पद्धति काम में आती थी। और दारा को दूर दूर के राज्यकीय भाग की खबर लगती थी। जीते हुए देश में जो राजा अधीनता में रह कर भली भांति से काम करता जान पड़ता था उसका शासन कायम रहने दिया जाता था और 'सपत्र' अर्थात् फारिस का प्रान्तीय सूबेदार उस की देख रेख करता था और वह रियासत उस ही की तहत में समझी जाती थी। दृष्टान्ततः सीरिया के सूबेदार के नीचे जुद्दे में जेरुब्बेबल और जाशुवा शासन करते थे, और दारा ने देखा कि आयोनिया में प्रायः 'टाइरेंट' लोग शासक हैं और इन के शासन से नगर फारिस की अधीनता में बने रहेंगे अतः उस ने प्रत्येक नगर के टाइरेंट को रक्षा प्रदान कर रक्खी थी।

८---सिथियनों पर चढ़ाई---जब दारा राज्य में शांति स्थापित कर चुका तो उस ने युरोप की डैन्यूब नदी के उत्तर के सिथियनों पर चढ़ाई की तैयारी की (ईसू मसीह से ५१० वर्ष पहिले) और अब फारिस वालों को जान पड़ा कि आयोनियों को जीतने से कितना काम बना, क्योंकि दारा ने आयोनिया के टाइरेंटों को ६०० जहाज ला कर सेना में मिलने की आज्ञा दी थी। उस की सेना 'बासपरस' के तट पर पहुंची। बासपरस उन स्थल विभाजकों में से एक है जो एशिया और युरोप को एक दूसरे से जुदा करते हैं। वहां

समास के इंजीनियर मेंड्राक्लीस ने नावों का एक पुल बांध रक्खा था जिस पर हो कर फारिस वाले युरोप में पहुंच गये। उधर भायोमियन बेड़े ने, जो टाइरंट लोगों के सेनापतित्व में था, वास्पर से चल कर डेन्यूब के मुहाने पर पहुंच कर नावों का एक पुल नदी पर बांध दिया जो कुछ दूर भूमि तक गया था। दारा सेना सहित इस पुल पर हो कर सिथिया में पहुंच गया और टाइरंट लोगों को आज्ञा दे गया कि तुम दो मास तक यहां रह कर पुलकी रक्षा करना। परंतु वह दो मास हो जाने पर भी नहीं लौटा। सिथियन लोग बद्दू [घूमने वाली] जाति के थे और उन के घरबार कुछ भी नहीं था, सो वे खुले मैदान में शत्रु से लड़ने के बदले पीछे को हट गये कि जिस में फारिस वाले भी पीछा करते चले आवें और इधर यूनानियों को भी यह सुध मिलगई कि दारा की सेना मैदानों में राह भूलकर भटकती फिरती रही और अब डैन्यूब के इधर भागी आरही है और सिथियन धनुषवाले उसका पीछा करते आ रहे हैं और वह बड़ी विपत्ति में है। जब यह खबर आई तो एक 'टाइरंट' मिल्टाइडीज, जो उत्पत्ति के हिसाब से एथेनियन था और थ्रेस के कर्सोनिसस नगर का शासक था, और टाइरंटों से बोला कि पुल को नष्ट कर देना चाहिये और दारा और उस की सेना को सीथिया में भूखों मरने देना चाहिये। परंतु माइलेटस के टाइरंट हिस्टियस ने औरों को यह स्मरण दिलाया कि हम तुम को फारिस वालों ने ही गद्दी पर बैठा रहने दिया और यदि फारिसवालों का राज्य जाता रहा तो प्रजा हम तुम को शहरों से बाहर निकाल देगी। इसलिये टाइरंटों ने पुल तोड़ने से नाहीं

कर दी और हिस्टियस की सम्मति से दारा और उस की सेना के प्राण बचगये ।

९—फारिस का राज्य थिसिली तक पहुंच गया—दारा निष्कंटकता से सार्डिस पहुंचा और उसने फारिस के एक सरदार 'मेगाबजस' को, अस्सी सहस्र सेना के साथ थ्रेस का वह भाग जीतने को जिसने अधीनता स्वीकार नहीं की थी और स्थिर रूप से वहां सत्रपी स्थापित करने को छोड़ दिया । मेगाविजस ने सब थ्रेस जीत लिया और मकदुनिया के राजा अमितस के पास दूत भेजा कि आकर दारा की अधीनता स्वीकार करो । अमितस ने अधीनता स्वीकार करने के फारसी प्रथानुसार, जल और मिट्टी, चिन्ह भेज दिये । अब मकदुनिया भी अधीन रियासत हो गई और फारिस राज्य युरोप में डैन्यूब नदी से आलिम्पस पर्वत तक पहुंच गया । ओलिम्पस थिसिली और मकदुनिया के बीच में सीमा स्थापक था । दारा ने हिस्टियस को पुल बचाने के पुरस्कार में थ्रेस में स्त्रीमान नदी के तट पर का मिसिनिस नामक प्रदेश दे दिया । जब हिस्टियस के पास माइलेटस और मिसिनिस दोनों हो गये तो उस को राज्य बढ़ाने की सूझी । परंतु मेगाबेजस सत्रप [सूबेदार] को यह भेद मालूम हो गया और उसने दारा को चितावनी लिख भेजी कि हिस्टियस स्वतंत्र होना चाहता है । यह जान कर दारा ने हिस्टियस को बुला भेजा और मित्रता के मिस उस को सूसा में रोक लिया और उसके जामाता परिस्तगोरस को माइलेटस का टाइरंट हो कर शासन करने की मंजूरी देदी ।

१०—आयोनियनों का विद्रोह मचाना—परिस्तागोरस भी अपने श्वसुर की भांति ऊंचे मंसूबों वाला था और शीघ्र ही

अपनी शक्ति बढ़ाने का अवसर भी उसके हाथ लग गया। नैक्षास द्वीप के अमीरों को उस द्वीप के रहनेवालों ने निकाल दिया था सो उन्हों ने पेरिस्तागोरास की सहायता मांगी (ईस्वी सन् से ५०२ वर्ष पहिले)। पेरिस्तागोरास ने सोचा कि यदि अमीरों को मैं पुनः नैक्षास में स्थापित करदूंगा तो नैक्षास का मैं ही स्वामी बन जाऊंगा परंतु नैक्षास की शक्ति इस से अधिक थी और यह अकेला आक्रमण नहीं कर सकता था सो इस ने अपने प्रान्त के सूबेदार आर्टाफर्निस के पास जा कर उससे कहा कि तुम मुझे नैक्षास जीतने में सहायता देओ और फारिस राज्य में अकेला नैक्षास ही नहीं बरन् और द्वीपों को भी मिला लेना। आर्टाफर्निस इस बात पर राजी होगया और उसने पेरिस्तागोरस को २०० जहाजों का एक बड़ा दिया। परंतु फारिस के जहाजी बेड़े का सेनापति पेरिस्तागोरास से झगड़ पड़ा और और यह चढ़ाई की तैयारियां खाक में मिल गईं। इधर पेरिस्तागोरास आर्टाफर्निस के क्रोध से घबड़ाया और बिद्रोह करने की सोचने लगा। उसी समय हिस्टियस ने, जो सूसा से विदा होना चाहता था, पेरिस्तागोरास को कहला भेजा कि विद्रोह कर देओ। ऐसा करने से उस ने यह सोचा कि दारा विद्रोह मिटाने को मुझ को ही भेजेगा और मैं फिर परतंत्रता से निकल जाऊंगा पेरिस्तागोरास ने आदमी इकट्ठे कर लिये और माइलेटस तथा दूसरे नगरों को उकसाया कि फारिस के विरुद्ध विद्रोह कर देओ और स्वंय यह घोषणा दे दी कि अब मैं टाइरंट नहीं रहूंगा। सब नगरों के टाइरंट गद्दी से उतार दिये गये और स्वाधीनता की घोषणा दे दी गई। ईयोलियनों तथा डोरियनों की

कालोनियां और साइप्रस द्वीप भी इस विद्रोह में मिल गये (ईसू मसीह से ५०० वर्ष पूर्व)।

११—एथेनियनों ने सार्डिस जला दिया—क्योंकि पेरिस्ता-गोरास फारिस की महती शक्ति को जानता था, सो वह सहायता की खोज में यूनान में गया। स्पार्टा वालों ने कोरा जवाब देदिया, परंतु एथेंस ने बीस जहाज दे दिये और यूबा देश में यरेत्रिया ने भी पांच जहाज दिये। इन की सेना विद्रोहियों के साथ सार्डिस को चली, जहां आर्टाफर्नीस था, और उसने नगर में आग लगा दी। परंतु फारिस वालों की सेनायें आ गईं और यूनानी सार्डिस को अपने हाथ में नहीं रोक सके और जब वे समुद्र के तट की ओर भाग रहे थे तो उन पर फारिस की सेना ने आक्रमण कर के उन को भगा दिया। एथेनियन लोग घर लौट आये, और फारिस की सब सेनाएं विद्रोही, नगरों को होश में लाने को इकट्ठी हुईं।

१२—लेदी का युद्ध (सन् इस्वी सन ४९६ वर्ष पूर्व)—यह युद्ध बहुत घोर था और बहुत दिनों तक होता रहा। छोटे छोटे नगरों का अवरोध हुआ। इन्हों ने खूब सामना किया। जब फारिस वालों ने सेना जोड़ कर सब से बड़े नगर को घेरा (अर्थात माइलेटस नगर को) तो उन को जल और स्थल दोनों की सेना एकत्र करनी पड़ी थी और युद्ध को आरंभ हुए चार वर्ष व्यतीत हो गये थे। तब जितने नगर अब तक नहीं लिये गये उन्हों ने कौंसिल की। परंतु स्थल मार्ग से माइलेटस को घेरने वाली सेना को वे स्थल में जीत नहीं सकते थे अतः यह निश्चय हुवा कि अपनी सब सेना को जहाजों पर चढ़ा कर भेज दिया जाय और यह प्रयत्न किया जाय कि फारसी

समुद्र की ओर से माइलेटस को न रोक पावें। कुल जहाजों की संख्या, जो उन्हों ने इकट्ठे किये थे, ३५३ थी। जहाजी बेड़े का पड़ाव माइलेटस के सामने के लेडी द्वीप के पास पड़ा था। तब फारिस वाले फेनिशिया से ६०० जहाज लाये और जब शत्रुओं की संख्या देख कर यूनानियों का साहस जाता रहा तो एक फोकी निवासी ने जिस का नाम डायोनिसियस था उन से कहा कि यदि मेरे कथनानुकूल काम करोगे तो निस्संदेह अपनी जय है। आयोनियन राजी हो गये और डायोनिसियस उन को सात दिन बराबर प्रातःकाल से रात्रि तक युद्ध का अभ्यास कराता था परंतु ये लोग आरामतलब थे और नियम बद्ध रहना नहीं जानते थे। आठवें दिन वे घबड़ा गये और जहाजों को छोड़ कर टापू में जाकर छाया में विश्राम करने लगे। उधर फारिस के सरदारों ने टाइरंट लोगों को यह आज्ञा दे रक्खी थी कि तुम नेताओं को फोड़ लेना सो वे उन को फुसला रहे थे कि तुम लोग और नगर वालों का साथ छोड़ देओ तो तुम को फारिस वालों से क्षमा दिलवा दी जायगी। यहां फारिस वालों को तो यह बिश्वास था ही कि टाइरंट कृतकार्य हुए होंगे सो उन्हों ने फेनेशिया के जहाजी बेड़े को आक्रमण करने की आज्ञा दी। यूनानी उस समय फिर जहाजों पर लौट आये थे। अब यूनानी और फेनेशियन युद्ध को आमने सामने आये, और स्वतंत्रता रक्षा की अंतिम लड़ाई पास ही थी कि एक लज्जा जनक दृश्य उपस्थित हुआ। युद्ध के आक्रमण से पहिले ही सेमास के आये हुए ६० जहाजों में से ४९ चल दिये। लेसबास वालों ने भी उनका अनुकरण किया, तब और बहुत से जहाज भी चल दिये। कियास और माइलेटस की सेना

फ़ीनिशिया के सब जहाज़ी सिपाहियों से अकेली ही लड़ी। उन थोड़े से मनुष्यों में, जिन्हों ने साथ नहीं छोड़ा था, दायोनिसियस भी एक था। वे प्रशंसनीय वीरता से लड़े परंतु सब निष्फल था। लेडी के युद्ध से आयोनिया को बड़ा धक्का पहुंचा, और विनाश भी उतना ही हुआ जितनी कि लज्जा और कलंक। इस से संसार भर को विदित हो गया कि आयोनियन लोग ऐसे सब के लाभ के काम में कुछ भी बलि प्रदान करने योग्य नहीं थे और अपने कर्त्तव्य और मानरक्षा से कैसे विमुख थे।

१३—फारिस वालों का बदला लेना—लेडी के युद्ध के थोड़े ही दिनों उपरांत, सन् इस्वी से ४९५ वर्ष पहिले फारिस वालों ने बड़ी भारी सेना से घेर कर माइलेटस ले लिया और सार्डीस जलाने का बदला बड़ी कठोरता से लिया। उन्हों ने अधिकांश मनुष्यों को तो मार डाला और स्त्रियों को और बच्चों को कैद कर लिया और यूनानी तीर्थों को जला कर भस्म कर दिया। इस के उपरांत उन्हों ने समुद्र के तट के सब नगरों तथा आस पास के टापुओं के नगरों और थ्रेस में के कर्सोनिसस को भी ले लिया। जो जगह भी उन्होंने जीती उस में आग लगाई और निवासियों के गले काटे। यूनानी लोग तो यह लिखते हैं कि जिस स्थान को उन्हों ने जीता वहां के सब निवासियों को मार डाला परंतु ऐसा नहीं हो सकता है क्योंकि ये नगर शीघ्र फिर निवासियों से भरे हुए थे और उन्नति कर रहे थे।

१४—फारिस वालों की यूरोपीय यूनान पर पहली चढ़ाई (सन् इस्वी से ४९३ वर्ष पूर्व)—अब फारिस वालों ने एथेंस

और यरित्रिया को सार्डिस जलाने का दंड देना चाहा। मार्दोनियस के सेनापतित्व में एक सेना गई और हलस्पन्त के उस ओर जा कर थ्रेस के समुद्र के किनारे २ यूनान की ओर चली और जहाजी बेड़ा भी इस के साथ लगा चला जाता था। परंतु जब जहाजी बेड़ा अथास पर्वत के पथरीले और उभड़े हुए रास के पास पहुंचा तो एक तूफान आया जिससे ३०० जहाज, जिनमें बीस सहस्र मनुष्य थे, नाश हो गये। और उधर थ्रेस वालों ने मार्दोनियस पर आक्रमण किया और वह लज्जा का मारा एशिया को लौट आया।

१९--दूसरी चढ़ाई--[ईस्वी सन से ४९० वर्ष पूर्व]-- तब चढ़ाई करने से पहिले दारा ने टापुओं को दूत भेजे और कहला भेजा कि अधीनता स्वीकार करने के चिन्ह जल और मिट्टी भेजो। बहुत से द्वीपों ने उस की अधीनता स्वीकार की और शक्तिमान् द्वीप इजीना ने भी, जो एथेंस का शत्रु था और उस का विनाश चाहता था, उसकी अधीनता मान ली। तब दारा का जहाजी बेड़ा इजीयन सागर में चल दिया और उस में दैतिस और आर्टाफर्निस के सेनापतित्व में सेना भेजी गई थी। ये लोग पहिले नैक्षास द्वीप में उतरे क्योंकि उस ने अधीनता अस्वीकार की थी। मसीह से ५०५ बर्ष पहिले नैक्षास ने अपनी रक्षा आर्टाफर्निस की जल सेना के बिरुद्ध सफलता से की थी, परंतु आयोनिया के नाश को देख बहादुर से बहादुर नैक्षास वालों के होश उड़ गये थे इसलिये वे अपने नगर से भाग कर पर्वत में छुप रहे थे। फारिस वालों ने सब नगर तथा देव मंदिरों को बर्बाद कर दिया। तब वे यूबिया की ओर जहाजों पर बैठ कर चले और जाकर यरित्रिया का अवरोध किया। छठे दिन दुष्ट मुखबिरों ने फाटके खोल दिये। नगर को उन्हों ने मिट्टी में मिला दिया

और अधिकांश पुरवासियों को हथकड़ियां डाल कर एशिया भेज दिया ।

१६—मराथान—[मसीह से ४९० वर्ष पहिले]—फारिस की सेना यरित्रिया से चल दी और यूरोप सागर को पार कर के एथेंस से २२ मील की दूरी पर मराथान के मैदान में उसने डेरा डाला । यदि एथेंस वाले यह राह देखते कि पुर रुन्धित होने पर कुछ करेंगे तो उन के नाश में कुछ संदेह नहीं था, उनकी प्राण रक्षा तो केवल खुले मैदान में हो सकती थी, नहीं तो उन का खून खराबा होता ही और वे पकड़ कर बंधुए भी किये ही जाते । वे ९००० सशस्त्र सेना को पालिमार्क और दस सेनापतियों के सेनापतित्व में लाये और उन्होंने पहाड़ियों पर डेरा डाला जहां से मराथान मैदान खूब दीखता था । वह सेना जिस ने आयोनिया में ऐसा गजब ढाहा था, वह सेना, जिसका सामना यूनानियों ने कभी सफलता से कर नहीं पाया था, उन के नीचे पहाड़ियों और समुद्र के बीच के मैदान में पड़ी थी । स्पार्टा ने सहायता का बचन दिया था परंतु सेना भेजने में देर की और बेचारे एथेंस वाले अकेले ही उस भय का सामना करने को थे, जिस से कि उन की जान पर आ बनी थी । ऐसे समय में प्लटिया निवासियों की थोड़ी सी सेना, जो संख्या में एक सहस्र थी इस विपत्ति में एथेनियनों का साथ देने को आगई क्योंकि एथेनियनों ने थोड़े ही दिन पहिले उन को शरण में लेकर बचाया था । प्लेटिया के ऐसे साहस और दृढ़ संकल्प को देख एथेंस वाले गद्गद् हो गये और उन के उपकार को कभी नहीं भूले । परंतु सेना की संख्या अब भी केवल दस सहस्र ही थी और दस में से

पांच सर्दारों की इच्छा थी कि जब तक स्पार्टा से सहायता न आवे तब तक चुपचाप पड़े रहना चाहिये। दूसरे पांच सर्दारों का नेता, जिन की सम्मति स्पार्टनों की राह देखने की नहीं थी, मिल्टाइडीज़ था जो फारसियों के हत्थे से निकल आया था और सरदार (स्ट्रेटेजस) चुन लिया गया था। वह यह जानता था कि दुष्ट देश नाशक घर के भेदिये नगर निवासियों में वर्त्तमान हैं और यदि युद्ध में देरी की जायगी तो यह सेना तितर बितर कर दी जायगी। सो यद्यपि फारसी सेना संख्या में दस गुनी अधिक थी तथापि मिल्टाइडीज युद्ध करने को हठ करता रहा। जब सम्मतियां ली गईं तो ५ सरदारों की युद्ध की राय थी और पांच की इसके विरुद्ध परंतु कल्लैमिकस नामक पालीमार्क (सेनापति तथा शासक दोनों काम करने वाले) ने युद्ध के पक्ष में सम्मति दे दी। सब सर्दारों ने अपने अपने दिन का सेनापतित्व मिल्टाइडीज को दे दिया, और जब ठीक समय आया तो युद्ध के लिये सेना को एक रेखा में खड़ा किया। जब दसों सरदार अपने अपने स्वजातियों को समझा बुझा चुके तब युद्ध चिन्ह दिखाया गया और सेना, वह शब्द कहती हुई जो एथेनियन युद्ध काल में कहा करते थे, पहाड़ी पर से फारिस वालों पर आक्रमण को उतरी। युद्ध में यूनानियों की सेना की रेखा का मध्य भाग पीछे को हटा दिया गया, परंतु दोनों सिरों के सिपाहियों ने सामने सफाई कर दी और मुड़ कर फारसी सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। फारिस वालों की सेना दब गई और प्राण-रक्षा के लिये अपने जहाजों पर भागी अथवा समुद्र के तट के पङ्क में हांक दी गई

युद्ध में ६ हजार फारिस वाले और १९२ एथेनियन काम आये। या तो युद्ध से पहिले या ठीक युद्ध के उपरांत एक चमकीली ढाल दिखाई पड़ी जो कि किसी देश के नाश करने वाले भेदिये ने, जो एथेनियन था, एक पहाड़ पर ऊंची उठा दी थी कि जिस से फारिस वालों को विदित हो जाय कि नगर में सेना नहीं है। मिल्टाइडीज उसी दम एथेंस को चल दिया। थोड़ी ही देर बाद फारिस निवासी भी जहाजों में बैठ इस आशा से आये कि नगर बल रहित है। परंतु जब उन्हों ने उन मनुष्यों को समुद्र के तट पर लड़ने को तैयार देख, जिन से मराथान के मैदान में लड़ चुके थे तो वे उलटे पावों फिरे और सब जहाज एशिया को लौट गये। मराथान के युद्ध से प्लेटिया और एथेंस का मान बढ़ गया, और यद्यपि यूनानी सेना और युद्ध में मरे हुए लोगों की संख्या कम थी तथापि इतिहास भर में यह युद्ध सर्वोपरि समझा जाता है, क्योंकि यदि इस में यूनानियों की जय न होती तो एथेंस पर अवश्य फारिस वालों का अधिकार हो जाता और संभवतः शेष रियासतें भी फारिस की अधीनता स्वीकार कर लेतीं। यूनान फारिस प्रांत हो जाता और युरोप का इतिहास उन्नति करने वाला और स्वतंत्र जातियों का इतिहास होने के बदले ऐशिया के इतिहास की भांति होता अर्थात जालिमों और उन के दासों का इतिहास। एथेंस वालों का यह बहुत ही साहस का काम था कि उन्हों ने उस सेना का सामना किया कि जिस ने बाबुल, लीडिया, और आयोनिया को उलट पुलट कर दिया। इससे मिल्टाइडीज़ की सिपाहियों के पहिचानने की चतुरता भी विदित होती है जिसने फारिस वालों द्वारा आयो-नियनों को एक एक कर के पराजित होते देख भी लिया और

तो भी उस को निश्चय रहा कि दस सहस्र सेना फारिस के इत ने मनुष्यों का मुकाबला कर सकती है। (युद्ध के एक दिन उपरांत स्पार्टा से २००० मनुष्यों की सेना आई। उन्होंने पूर्णेन्दु न होने के कारण तब तक नहीं भेजी और अब अपनी धार्मिक प्रथानुसार पूर्णिमा हो जाने पर भेज दी। परंतु यदि स्पार्टा को वास्तव में एथेंस को बचाना होता तो वह चाहे पूर्णिमा तक ठहरा होता या न ठहरा होता परंतु दो सहस्र से अधिक मनुष्य भेजता। इस भांति से स्पार्टा फारिस पर पहिली विजय का हिस्सेदार होने का नाम खो बैठा।

१७—मिल्टाइडीज—यूनान तो बच गया, परंतु वह सेनापति, जिसने यूनान को बचाया था, बुरी मौत मरा। क्योंकि मिल्टाइडीज़ बीस बरस टाइरेंट रह चुका था सो वह एथेंस की सेना से पुरवासी सेनापति की भांति काम नहीं लिया चाहता था, बरन् टाइरेंट की भांति काम कराना चाहता था। उस ने नगर बासियों को फुसलाया कि थोड़े से जहाजों का अधिकार मुझे दे देओ परंतु इस का कारण उन को नहीं बताया, और व्यक्तिगत द्वेष के कारण पैरास द्वीप पर आक्रमण किया। परंतु पैरास वालों ने बड़ी वीरता से आत्मरक्षा की और मिल्टाइडीज़ को विदित हो गया कि मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूं। परंतु एक पुजारिन के जो चाहती थी कि नगर पर मिल्टाइडीज का अधिकार हो जाय मिल्टाइडीज के पास संदेसा भेजा कि तुम छिप कर मेरे मंदिर में आ जाओ। मिल्टाइडीज़ रात में मन्दिर पर चढ़ने लगा परंतु वहां से गिर पड़ा और उस के घुटने में चोट लगी। वह २६ दिन सेना का सेनापति रह कर बिना कुछ किये हुए लौट आया। उस पर लोगों को

धोखा देने का अभियोग लगा और उस पर बहुत सा रुपया जुर्माना डाला गया। परंतु उस की सब जायदाद फारिस वालों के हाथ में थी और वह एक कौड़ी भी नहीं दे सका। इधर उस की चोट प्राण की ग्राहक हो गई और वह बड़े अपमान की दशा में मरा।

१८—थेमिस्टाक्लिस—मराथान के युद्ध के उपरांत फारिस वाले यूनान से भाग गये और एथेंस निष्कण्टक रह गया। वहां के दो बड़े विख्यात महापुरुष थेमिस्टाक्लिस तथा आरिस्टाइडीज़ थे। थेमिस्टाइक्लिज अपने समकालीन व्यक्तियों में सब से अधिक बुद्धिमान और चतुर था। वह भविष्य की होने वाली बातों को पहिले से सोचने में बहुत ही शीघ्रगत और बुद्धिमान था। जब वह कुछ करने की ठान लेता था तो उस को सब से अधिक चिंता कोई बढ़िया विधि सोचने की लगती थी जिस में सोचा हुआ काम हो जावे। उधर और यूनानी तो फारिस वालों पर मराथान में विजय के कारण बहुत फूल फूल फिरते थे, परंतु थेमिस्टाक्लिस को यह दृढ़ विश्वास था कि फारिस आक्रमण फिर भी किये बिना रहेगा नहीं। सो वह यह सोचने लगा कि एथेंस यथाशक्ति बलशाली कैसे बन सकता है, और जब उस ने एथेंस से चार कोस वाले पिरियस के समुद्र तट को देखा जो पानी में दूर तक चला गया था और उस की खाड़ियां पर दृष्टि डाली जो इसलिये बनी हुई जान पड़ती थी कि जहाजों का गोदाम बनाई जाय, तथा जब आयोनिक नगरों के नाश के पहिले की उन की समुद्र की शक्ति पर विचार किया, और यह सोचा कि यूनान में कितने द्वीपपुञ्ज और बंदर हैं जो केवल एक बड़े जहाजी

बेड़े से सुरक्षित रह सकते थे, तो उस को यह सूझी कि यदि एथेंस समुद्र की ओर प्रवृत्त हो जाय तो उस की शक्ति इतनी बड़ी हो जायगी जितनी की कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी। उस ने सोचा कि एथेंस स्थल द्वारा जितनी सेना कभी भी फारिस वालों के मुकाबले को नहीं जोड़ सका था, समुद्र द्वारा उस से कहीं अधिक सेना मुकाबले को ले जा सकेगा तथा स्पार्टा के नेता रहने के बदले वही रियासत नेता हो जहाजी बेड़े से यूनान द्वीपों तथा तट की रक्षा कर सकेगी।

१९—एथेंस ने जहाज बनाये—सौभाग्य से एथेंस और इजीना द्वीप में सदा चलती ही रहती थी और इस कारण से उन्हों ने थेमिस्टाक्लीज की बात सुनी और २०० त्रिरमी (३ पतवार के जहाज) बनाने को सर्कारी चांदी की खानों की आय उस में लगाने को राजी हो गये। परंतु थेमिस्टाक्लीज जानता था कि तब तक जहाजी बेड़ा कभी नहीं हरा भरा होगा जब तक कि समुद्र द्वारा व्यवसाय की उन्नति नहीं होगी और जन संख्या नहीं बढ़ेगी। अतः उस ने मनुष्यों को समुद्र की ओर आकर्षित करने तथा समुद्र द्वारा व्यापार बढ़ाने का बड़ा परिश्रम किया। इस से पहिले एथेंस के जहाज फेलिरम नामी खुली हुई खाड़ी में पूर्व के कोने में खड़े किये जाते थे और अब पिरियस के चारों ओर की वह सुरक्षित खाड़ियां जहाज का घर बनाई गईं, और समुद्र के तट के पास ही एक व्यवसाय पूर्ण नगर 'पिरियस' बन गया—ईसा मसीह से ४९० वर्ष पहिले एथेंस में कठिनता से एक जहाज होगा परंतु १० वर्ष बाद उस की २०० त्रिरमी थी जो कि यूनान भर में सब से बड़ी जलशक्ति थी।

२०—अरिस्टाइडीज—अरिस्टाइडीज ने थेमिस्टाक्लीस की बात का विरोध किया। उस ने सोचा कि एथेनियनों ने जैसे एक बार फारिस वालों को पराजित किया है वैसे ही दूसरी बार कर सकते हैं। अरिस्टाइडीज जानता था कि जितने मनुष्य माराथान के मैदान में लड़े थे वे सब जमीन के मालिक थे, परंतु यदि जहाजी बेड़ा बना तो उस में प्रायः गरीब मनुष्य ही घुस पड़ेंगे और जो कोई युद्ध में अधिक भाग लेगा शासन में भी मुख्य भाग उस ही का होगा, तथा यदि एथेंस जल सेना ही पर अधिक निर्भर रहेगी तो गरीबों की चढ़ बनेगी। वह यह भी सोचता था कि ऐसी आबादी बढ़ जायगी जिस को समुद्र के द्वारा व्यवसाय और व्यवहार रुचेगा और जो नई नई जगहों को जीतना तथा ढूंढ़ निकालना और देश में परिवर्तन को करना पसंद करेगी और फलतः अच्छी अच्छी पुरानी रीतियां जाती रहेंगी। अरिस्टाइडीज की सम्मति कि एथेंस में जहाज न बनें अवश्य ठीक नहीं थी और उस का नाम इस राय के कारण से इतना नहीं है वरन् उस के चाल चलन के ऊंचे तथा भले होने के कारण से है। वह पूर्ण-तया आदरणीय था। यदि कोई और मनुष्य घूस लेता था या उस पर दोषारोपण करता था तो सब जानते थे कि अरिस्टा-इडीज कभी सच्चा और न्यायी होने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता है। और इन्हीं गुणों के कारण उस को केवल एथेंस में ही नहीं वरन् यूनान भर में असली शक्ति मिली क्योंकि तब न्यायशील मनुष्य की आवश्यकता पड़ी थी। यह हम आगे चल कर पढ़ेंगे। परंतु अरिस्टाइडीज और थेमिस्टाक्लीज के दलों में इतनी खिचा खिची हुई कि देश

निकालने की पत्थियें डालने की आवश्यकता पड़ी। अरिस्टाइडीज निर्वासित किया गया और थेमिस्टाक्लीज अपने इच्छानुसार निर्विघ्न काम करने को रह गया।

२१—जराक्षिस का यूनान पर आक्रमण करना—[ईसा मसीह से ४८० वर्ष पूर्व]—ईस्वी सन् से ४८५ वर्ष पहिले दारा का देहान्त हो गया और उसके उत्तराधिकारी जरक्षिस ने यूनान पर चढ़ाई करने को बहुत बड़ी सेना एकत्र की जिस में एशिया माइनर से सिंध नदी तक की सेना बुलाई गई थी। हेलेस्पन्त पर नावों के दो पुल बांधे गये थे और आयोनिया और फिनिशिया के समुद्र तट पर १२०० जंगी जहाज और ३००० लादने के जहाज इकट्ठे हुए थे। थ्रेस के समुद्र तट पर के नगरों में रसद इकट्ठी की गई थी। और अथास पहाड़ को काट कर नहर निकाली गई जिस में उस के चारों ओर घूम कर भयानक जलयात्रा न करनी पड़े। स्थल सेना के इकट्ठे होने का स्थान कैपेडोकिया में क्रितिल्ला था। यहां पर (ईसा से ४८१ वर्ष पूर्व) ४६ जातियों की सेना जो संख्या में दस लाख के लगभग थी इकट्ठी हुई ये सिपाही अपने अपने देश के रिवाज के अनुसार वस्त्रों तथा शस्त्रों से सजे थे। स्वयं जरक्षिस उन का सेनापति बना और शरद और हेमन्त ऋतुओं भर के लिये तो सेना को सार्डिस में ले गया और ईसा से ४८० वर्ष पूर्व की बसंत ऋतु में यह सब सेना हेलेस्पन्त को चली जहां जहाजी बेड़ा इन की बाट जोह रहा था। अबिदास पर्वत पर संगमर्मर का एक श्वेत सिंहासन बना दिया गया। यहां से जरक्षिस जल और स्थल को, जो उस की सेना से

भरे हुए थे, देख रहा था और युरोप में जाने की आज्ञा दे रहा था। इस पुल पर बराबर सात दिन रात सेना उतरती रही। तब हलेस्पंतसे सेना थ्रेस के किनारे किनारे चलती रही और उस को दोरिस्क पर फिर जहाज मिले। यहां जहाज किनारे से लगा दिये गये और जल सेना तथा स्थल सेना गिनी गई। यहां से सेना और जहाजी बेड़ा दोनों थर्मा की खाड़ी तक बे रोक टोक चले गये।

२२---कोरिंथ के जल विभाक की 'कांग्रेस'--इस्वी सन् से ४८१ वर्ष पहिले स्पार्टा और एथेंस ने यूनान की सब रियासतों को कोरिंथ के जल विभाजक में कांग्रेस कर के यह विचार करने को बुलाया कि फारिस वालों से यूनान को बचाने की सर्वोत्तम कौन सी बिधि है? सब बड़ी बड़ी रियासतों के प्रतिनिधि आये, यथा—एथेंस, थेस्पिया, प्लेटिया और थिसिली—केवल एकिया और अर्गास से कोई नहीं आया। इजीना का एथेंस से मेल हो गया और वह भी सब के भले को लड़ने को उद्यत हो गया। अर्गास स्पार्टा के द्वेष से और थेबीस एथेंस से द्वेष रखने के कारण फारिस वालों के पक्ष में थे। एकिया ने कभी स्पार्टा के मेल में काम किया ही नहीं था। कांग्रेस ने कालोनियों के पास भी दूत भेजे कि तुम भी यूनान की रक्षा करने को लड़ो परंतु इस का कुछ फल नहीं हुआ। साइरेक्यूज के टाइरेंट गेलन के पास इतनी सेना थी जितनी कि किसी भी यूनानी राज्य के पास नहीं थी परंतु उसने कहा कि मैं तब सहायता दूंगा जब मुझ को सब सेना का सेनापति बनाया जाय। क्रीट कुछ किया ही नहीं चाहता था करसीरा ने जहाज भेजने का वचन दिया परंतु

यह वह भी चाहता था कि जहाज देर कर के पहुंचे। सो ऐसा यूनान का थोड़ा ही सा भाग था जिस में फारिस का सामना करने का साहस और इच्छा थी और जब हम उस ख्याति के विषय में कहें जो कि यूनानियों ने इस युद्ध को जीत कर पाई तब हम को यह ध्यान रखना चाहिये कि यूनान के अधिक हिस्से का इस में कुछ भी हाथ नहीं था, वरन् इस के विरुद्ध उन्हों ने यूनान के हितार्थ कुछ किया ही नहीं। युद्ध की जय के सम्मान के भागी एथेंस, पेलोपेनिस की रियासतों की गोष्ठी, विशिया के छोटे छोटे नगर, प्लेटिया तथा थेस्पिया और दो चार और रियासतें थीं। एथेंस ने यद्यपि सब से बड़ा जहाजी बेड़ा दिया था परंतु उदारता से जल स्थल दोनों का सेनापतित्व स्पार्टा को इस कारण से दे दिया जिस में फूट न फैल जाय। सब सहायक मंडली ने इस बात की शपथ की कि जब तक जीवित रहेंगे तब तक लड़ेंगे और जो कुछ लूट का माल हाथ लगेगा उस का दशमांश डेल्फी के देवता को चढ़ावेंगे।

२३—टेम्पी—कांग्रेस को यह बिचार करना था कि यूनान कैसे बचाया जाय, क्योंकि फारिस वालों के पास बहुत बड़ी सेना थी, अतः यूनानियों के लिये सब से अच्छी बात यह थी कि खुले मैदान में न लड़ बैठते जहां कि वे घिर जाते वरन् किसी ऐसी तंग जगह में उन से लड़ते जहां पर दस सहस्र मनुष्य पांच लाख मनुष्यों का काम देते। यूनान ऐसा पहाड़ी देश है कि किसी समय एक ज़िले से दूसरे ज़िले में जाने को केवल एक तंग दर्रे में से जाना पड़ता है। कांग्रेस का यह विश्वास था कि फारिस वाले

यूनान में केवल थिसिली के उत्तर वाले टम्पी के तंग दर्रे में होकर घुस सकते हैं। इसलिये उन्होंने टेम्पी को दस सहस्र की एक सेना भेज दी, परंतु वहां पहुंच कर सरदारों ने देखा कि एक और सड़क भी है जिस पर हो कर फारिस वाले हमारे आगे आ सकते हैं और टम्पी पर सेना नियुक्त होना व्यर्थ था। अतः वे कोरिंथ के जल विभाजक को लौट आये और कांग्रेस को दूसरी जगह निश्चय करनी पड़ी।

२४-थर्मापाली—थिसिली भर में कोई ऐसी तंग राह नहीं थी जिस में होकर फारिस वालों को जाना पड़ता परंतु थिसिली के दक्षिण में मैलियन की खाड़ी के सिरे पर उन की राह पर्वतों और दलदल के मध्य में हो कर गई थी। यह दलदल समुद्र तक चली गई थी और एक जगह पर यह पङ्क पहाड़ के इतने पास तक चढ़ आई थी कि सड़क भी तंग ही रह गई थी। यह थर्मापाली की विख्यात घाटी है और यहां के विषय में यह समझा जाता था कि थोड़े से मनुष्य भी यहां पर शत्रु की बड़ी से बड़ी संख्या की सेना का नाका रोक सकते हैं। ठीक इसी समय स्पार्टा वाले एक त्योहार मना रहे थे जिस में सब स्पार्टनों को सम्मिलित होना चाहिये था। इसलिये थर्मापाली को केवल ३०० मनुष्यों की सेना भेजी गई, परंतु उन के साथ १००० या इस से भी अधिक हेलट थे (पाठ दूसरा-तीसरा पैरा देखिये) और पेलोपोनिसस की और रियासतों के भी ३००० सशस्त्र सिपाही थे। स्पार्टा का राजा ल्योनिदास इस सेना का नायक था। वे बोशिया में होकर जा रहे थे तो इन में ७०० थेस्पिया निवासी आ मिले और थर्मापाली में फोकी और लोकी निवासियों

की भी सेनायें आ मिलीं और अब सब मिलाकर सात हज़ार सिपाही हो गये। उधर जल सेना 'आर्टिमिजियम' पर नियुक्त की गई, जो कि यूबिया के स्थल विभाजकों के उत्तरी सिरे पर है, कि जिस में फ़ारिस की जल सेना आगे बढ़ कर थर्मापाली पर यूनानियों को पीछे से घेर ले। बेड़े में २७१ जहाज थे और इन सब का अध्यक्ष 'यूरिबियाडीज' नामक एक स्पार्टन था। जब ल्योनिदास थर्मापाली पर पहुंचा तब उस को मालूम हुवा कि पहाड़ पर होकर एक पथ और भी है जिस पर हो कर फ़ारिस वाले आ कर मुझ पर आक्रमण कर सकते हैं। उस ने फ़ोकियन सेना को पहाड़ की सड़क रोकने को भेजा और वह स्वयं घाटी में युद्ध करने की तैयारी करने लगा। फ़ारिस वालों की सेना आई और चार दिन तक घाटी पर ल्योनिदास के सामने बिना आक्रमण किये पड़ी रही और उन को यह देख कर बहुत बिस्मय होता था कि यूनानी शांति से कसरत करते रहते थे और अपने लम्बे लम्बे बाल काढ़ते रहते थे जैसा कि वे किसी त्योहार के पहिले किया करते थे। पांचवें दिन जरक्षिस ने आक्रमण की आज्ञा दी और उस रोज तमाम दिन और दूसरे दिन तक युद्ध होता रहा और फ़ारिस वाले यूनानियों को पीछे हटा न सके। परंतु युद्ध आरंभ होने के तीसरे दिन उसी देश के एक निवासी ने जरक्षिस को पहाड़ के ऊपर वाले मार्ग का हाल बता दिया; और रात्रि हो जाने पर एक दृढ सेना पर्वत पर चढ़ कर यूनानियों को पीछे से घेरने को भेजी गई। प्रातःकाल ही फ़ोकियन सेना ने जंगल में से पैर की आहट आती हुई सुनी। वे लड़ने को तैयार नहीं थे और अपनी जगह

से भाग गये। और फारिस वाले बढ़ते चढ़े आये कि जिस में ल्योनिदास को पीछे से जा कर घेर ले। ल्योनिदास को रात की बात का पता चल गया। अब यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट थी कि यदि वहां से ल्योनिदास सेना नहीं हटाता है तो घेर लिया जायगा और मार डाला जायगा, परंतु स्पार्टा के नियमानुसार सिपाही अपने स्थान को छोड़ नहीं सकता था और ल्योनिदास को भी मृत्यु का भय नहीं था। अतः उस ने दूसरी सेनाओं से कहा कि तुम जाओ अभी निकल जाने का समय है परंतु स्वंय अपने ३०० सिपाहियों के साथ मरने को वह वहां ही डटा रहा। सब सेना चली गई परंतु सात सौ थेस्पियन सिपाहियों ने वहां ठहरना और मरना निश्चय कर लिया। ल्योनिदास ने फारिस की सेना के पर्वत से उतर कर अपने पीछे आ जाने से पहिले ही उन के सामने अपनी १००० मनुष्यों की सेना को जमा दिया। ल्योनिदास तो शीघ्र ही मारा गया परंतु उस की सेना तब तक बराबर लड़ती रही जब तक कि फारिस वाले बिल्कुल पास नहीं आ गये और तब तक आक्रमण करना बंद कर दिया और एक ऊंची जगह पर खड़े हो कर शत्रु का आक्रमण रोक कर अपनी रक्षा करने लगी। फारिस वालों ने उन को चारों ओर से घेर लिया था, व यहां पर एक एक मनुष्य करके सब कट मरे।

इस भांति से ल्योनिदास और उस के स्पार्टन साथी मारे गये और थेस्पियनों ने भी उन के साथ अपने प्राण दिये। उन का स्वेच्छानुसार और बीरता से मरना व्यर्थ नहीं गया। ऐसे समय में जब कि बहादुर से बहादुर यूनानियों के मन डांवांडोल हो रहे थे, और मनुष्यों की रुचि यह थी कि अपने

प्राणों की इस समय रक्षा करें और सब के हित के काम को छोड़ दें, ल्योनिदास ने आत्म समर्पण और दृढ़ता का बड़ा अच्छा उदाहरण दिखाया और यह बता दिया कि किसी देश के निवासी का क्या कर्तव्य है।

२९-आर्टिमिसियम का जहाजी बेडा - जिन तीन दिनों में थर्मापाली पर युद्ध हो रहा था उन दिनों में यूनान और फारिस की जल सेना भी जुटी रही। यूनानी बेड़ा आर्टिमिसियम पर इसलिये नियुक्त किया गया था कि जिस में फारिस के जहाज यूबिया के स्थलविभाजक में न घुस पावें और ल्योनिदास के पीछे सेना न उतार पावें, परंतु ज्योंही फारिस के जहाज पास आये तो यूनानी बेड़े में खलबली मच गई और ये लोग स्थल विभाजकों से चाल्किस की ओर जहाजों को लेकर भागे। यहां पर समुद्र बहुत संकुचित था। जब वे चाल्किस पहुंचे तो उन्हों ने सुना कि कुछ फारसी जहाज नष्ट हो गये हैं और हिम्मत बांध कर वे फिर आर्टिमिसियम की ओर लौटे। थोड़ी ही देर उपरांत फारसी जहाज दिखाई दिये, जिन की संख्या देख कर यूनानी घबड़ा गये और फिर भागने की फिक्र में लगे। यह हाल देख कर यूबिया वालों ने सोचा कि हमारी खैर तो इस ही में है कि फारिस वाले स्थल विभाजक से बाहर रहें और थेमिस्टाक्लीस को ३० टैलंट्स इस बात पर देने को कहे कि तुम युनानी बेड़े को यहां हटा देओ। इस घूस के द्रव्य में से थेमिस्टाक्लिस ने कुछ धन यूरिबियाडीज तथा दूसरे सरदारों को देकर जहाजों को वहां से हटाकर न लजाने को राजी कर लिया। सो ऐसे समय में भी जहाजी बेड़े के सरदारों ने घूस का ख्याल अपने कर्तव्य से अधिक

रक्खा और इस बात से लज्जित न हुए कि हम ऐसे समय में भी जब कि युनान पर विपत्ति आई हुई है पैसे कमा रहे हैं। फारिस के नौका विभाग के सेनापति ने जब देखा कि युनानी बेडा आर्टिमिसियम पर है तो उस ने दो सौ जहाज भेज दिये कि जिस में यूबिया को यह जहाज घेर लें और युनानी दक्षिण की ओर से बंद हो जायं। जब वे जहाज चले आये तो यूनानीयों ने बड़ी कुशलता से आक्रमण किया और ३० जहाज छीन लिये। उसी दिन रात को एक आंधी आई और वह सब जहाज, जो यूबिया के इधर उधर घूम रहे थे, नष्ट हो गये। दूसरे दिन यूनानी जहाजों में एथेंस के ५० और जहाज आ मिले और यूनानियों ने फारिस वालों पर फिर आक्रमण किया और कुछ जीत ही में रहे। तीसरे दिन फारिस वाले इस बात पर नहीं ठहरे रहे कि यूनानी आक्रमण करें वरन् जोर शोर से आक्रमण किया दोनों ओर के बहुत से मनुष्य काम आये। इस के दूसरे दिन यहां यूनानियों को यह सुध मिली कि थर्मापाली पर स्पार्टा वाले मारे गये। क्योंकि जरक्षिस की सेना थर्मापाली से आगे बढ़ ही आई थी अतः जहाजों का आर्टिमिसियम पर पड़ा रहना व्यर्थ था, सो वे स्थल विभाजकों से दक्षिण की ओर जहाज ले गये और ऐटिका के सिरे पर की सेनियम की रास के चारों ओर घूम कर सलामिस द्वीप के सिरे पर पड़े।

२६—एथेंस छोड़ दिया गया और नष्ट कर दिया गया—थर्मापाली से जरक्षिस सीधा एथेंस की ओर को चला। स्पार्टा वालों ने ऐटिका की रक्षा करने को सेना नहीं भेजी, और पेलोपानिस की सेनाओं को कोरिंथ जल विभाजक पर

रोक लिया। क्योंकि वे तो यह चाहते थे कि एथेंस पर चाहे कैसी ही षति, परंतु फारिस वाले जब तक पेलोपोनिस न आ सकें तब तक अच्छा ही है। सहायकों से इस भांति से छोड़े जाकर, एथेनियनों को यह आशा नहीं थी कि हम एथेंस को बचा सकेंगे, सो उन्हों ने एथेंस छोड़ने और अपनी स्त्री और बच्चों को सुरक्षित स्थानों में पहुंचाने का बिचार किया। सब निवासियों--मर्द, औरतों तथा बच्चों ने अपने अपने घर शौक से छोड़े और जो कुछ माल असबाब संग ले जा सकते थे नावों में रख कर समुद्र के किनारे की ओर चले। यहां से जहाज उन सब को ससामिस, इजीना और ट्रिज़ीन पहुंचा आये। और जब जरक्षिस एथेंस पहुंचा तो वह सुनसान पड़ा था और वहां से सन्नाटे का शब्द आ रहा था। थोड़े से गरीब यां अपनी जान की चिंता न करने वालों ने ही जाने से इन्कार कर दिया था, और ऐक्रोपालिस की चोटी पर, जो कि दुर्ग था और जहां एथेंस वालों का पूजने का स्थान था, लकड़ी की शहरपनाह के पीछे अड़ खड़े हुए। अब सार्डिस जलाने का बदला लिया गया। फारिस वालों ने शहरपनाह को उड़ा दिया और एक्रापालिस में घुस पड़े, शहर के रक्षकों को मार डाला और सब पवित्र स्थानों को जला कर भस्म कर दिया। एथेंस और दुर्ग बार्बारियनों (पहिली पाठ-३--देखिये) के हाथ में थे, वहां के निवासी तेरह तीन कर दिये गये और पवित्र जगह जला दी गई। एथेनियनों को केवल एक आशा बाकी रही अर्थात् वह जहाज जो थेमिस्टाक्लीस ने कह सुन कर बनवाये थे।

२७—सलामिस का युद्ध—जब जराक्षिस थर्मापोली से एथंस की ओर बढ़ा उस के जहाज यूनान के समुद्र के किनारे किनारे चलते रहे, और एथंस के पास फलीरम की खाड़ी में लंगर डाल दिये गये (ईसा मसीह से ४८० वर्ष पूर्व) यूनानी जहाज यहां से कुछ मील की दूरी पर ऐटिका और सलामिस के मध्य में स्थल विभाजक पर पड़े थे। उन में और जहाज आ मिले और सब मिल कर संख्या में ३६६ जहाज हो गये। यूनानियों में किसी बात का निश्चय ही नहीं हो पाया था। पेलोपोनिस के कप्तान जल विभाजक को चले जाना चाहते थे कि जिस में स्थल सेना का साथ दे सकें। यूरिवियाडीज कुछ निश्चय ही नहीं कर पाया था। थेमिस्टाक्लिस यह जानता था कि जहाजों ने जहां भी एक सलामिस छोड़ा कि सब बेड़ा छिन्न भिन्न हो जायगा सो उस ने यह विचार कर लिया कि जिस भांति से भी हो सके युद्ध यहां ही पर होना चाहिये। उस ने यूरिवियाडीज और पेलोपोनिस के कप्तान से बहस की और कौंसिल पर कौंसिल की तथा उन को यह धमकी दी कि यदि तुम सलामिस से चले जाओगे तो तुम्हें एथंस के जहाजों से सहायता नहीं मिलेगी। परंतु जब उस ने सब को अपनी सम्मति के विरुद्ध देखा तो गुप्त रीति से जराक्षिस से कहला भेजा कि यदि तुम अभी आक्रमण नहीं करोगे तो यूनानी भाग जायेंगे। दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले ही अफसरों की कौंसिल हो रही थी कि इतने ही में किसी अनजान मनुष्य ने थेमिस्टाक्लिस को पुकारा। यह निर्वासित 'आरिस्टाइडीज' था (४ पाठ का २० देखिये), और एथंस पर विपत्ति

और नाश आ जाने पर उन लोगों की सेवा करने आया था जिन्हों ने उस को देश से निकाला था। वह समुद्र में पैरता हुवा फारिस वालों के जहाजों के बीच में होकर यूनानियों के जल सेना नायकों से यह कहने आया था कि तुम, लोग घिर गये हो। अरिस्टाइडीज कौंसिल में पेश किया गया और उस ने कहा कि मैं जो कुछ कहता हूं ठीक ही है। जब दिन निकला तो यूनानियों ने देखा कि स्थल विभाजक के किनारे किनारे सामने बहुत से जहाज खड़े थे, जो सीधे हाथ और बायें हाथ की ओर बहुत दूर तक विस्तृत थे और भागने के मार्ग को रोके हुए थे। एटिका के किनारे जहाजों के पीछे फारिस की फौज जमी हुई थी और सेना के बीच में एक ऊंचा तख्त गड़ा हुवा था जिस पर बैठे बैठे जरक्षिस युद्ध देखता था। फारिस वालों ने जहाज आगे को बढ़ाये और यूनानियों ने घबड़ा कर जहाजों के किनारे की ओर को धकिआया। परंतु भागना तो असंभव था इसलिये साहस कर के फिर आगे को बढ़े। जहाज एक दूसरे के पास को बढ़े और फारसी तथा यूनानी जहाजों में टक्करें हुईं। पहिली झोक ही देखने से, यूनानी लोग फारिस की जलसेना और जहाजों पर विजय सी पाते जान पड़ते थे। जब यूनानी लोगों की चलती रही तो फारिस वालों के जहाजों की अधिक संख्या ही फारिस वालों के नाश का कारण हुई। क्योंकि उस संकुचित स्थान में वे आपुस में टकरा कर टूटने लगे। वे जहाज जो टूट गये थे या आयोग्य हो गये थे उन के बीच में होने के कारण: काम के जहाज भी कुछ कर न सके। जरक्षिस के देखते देखते २०० जहाज नष्ट हो गये

और शेष स्थल विभाजक से इसलिये बाहर निकाल दिये गये जिस में उन का भी नाश न हो जाय। सूर्यास्त के समय तक लड़ाई समाप्त हो गई, और यूनानी दूसरे दिन के युद्ध की तैयारी करने लगे।

२८—जरक्षिस का पलायमान् होना—परंतु जरक्षिस की हिम्मत टूट गई, और यद्यपि अभी उस के पास आठ सौ जहाज बचे हुए थे किंतु वह लड़ाई देख नहीं सका। वह मार्डोनियस के सेनापतित्व में तीन लाख सिपाहियों को यूनान में छोड़ गया और शेष सेना के साथ स्वयं उसी मार्ग से एशिया को लौट गया जिस मार्ग से पहिले आया था। उस ने अपने सब जहाजों को पुलों पर भेज दिया कि जब तक मैं न आऊं वहां ही रहना, क्योंकि वह यह डरता था कि यूनानी हेलेस्पन्त के पुलों को तोड़ न देवे। थ्रेस में हो कर लौटते समय उस की सेना के सहस्रों मनुष्य रोग तथा बुभुक्षार्त हो कर यमलोक सिधारे।

२९—सिसिली में बिजय—जिस दिन सलामिस का युद्ध हुवा था उसी दिन यूनानी जाति के मनुष्यों ने अपने ऊपर आक्रमण करने वालों पर दूसरी विजय प्राप्त की थी। यूनान को विध्वंस करने के लिये कार्थेज फारिस से मिल गया था, और कार्थेज की एक बड़ी सेना ने सिसिली के उत्तर के हिमिरा नामक स्थान का अवरोध किया। साइरेक्यूज का 'जेलन' नामक टाईरेंट पचास हजार सेना को साथ ले कर हिमिरा को बचाने को गया और कार्थेज को ऐसा धक्का पहुंचाया कि उस ओर की कलोनियों को फिर कोई भय नहीं रहा।

३०—प्लेटिया का युद्ध—क्योंकि उत्तरीय यूनानी फारिस वालों के आज्ञाकारी अभीतक बने हुए थे, सो मार्डोनियस सेना सहित शीत काल में थिसिली में चुप चाप पड़ा रहा। जब ग्रीष्म ऋतु हुई तो उस ने ऐटिका की ओर प्रस्थान किया। सलामिस के युद्ध के बाद एथेंस निवासी अपने उजड़े हुए नगर में पुनः आ गये और शहर फिर कुछ कुछ बन चुका था। मार्डोनियस के पास आने पर एथेंनियनों को यह आशा थी कि स्पार्टा से सहायता मिलेगी, किंतु सब आशा व्यर्थ निकली और कोई नहीं आया, और एथेंस फिर छोड़ दिया गया और विध्वंस हो गया। परंतु अंत में स्पार्टानों ने सब जोर लगा दिया। उन्हों ने सब सहायकों की जल सेना जोड़ी और मार्डोनियस से लड़ने एक लाख दस हजार मनुष्य चले। ल्योनिदास के छोटे लड़के का संरक्षक पौसानियाज इनका सेनापति था (ईसा मसीह से ४७९ वर्ष पूर्व) मार्डोनियस की ठहरने की मुख्य जगह थेविज थी और थेवियनों में एथेंस के विरोधी होने का कारण फारिस की फौज में खूब काम किया पौसानियाज बोशिया में गया और प्लेटिया के निकट दस दिन तक संग्राम होता रहा। ग्यारहवें दिन यूनानियों को पानी नहीं मिला। बहादुर बहादुर कप्तान तो लड़ने को बेचैन थे, परंतु पौसानियाज का यह साहस न हुवा कि फारिस वालों पर ही आक्रमण कर दें जहां पर वे थे, सो रात होने पर उस ने सेना को आज्ञा दी कि पीछे हटो, किसी अच्छे स्थान पर जमेंगे। पीछे हटने से सेना का क्रम बिगड़ गया, और वह तीन हिस्से जिन में वह बटी हुई थी एक दूसरे से बहुत दूर हो गये। दूसरे दिन मार्डोनियस ने

यूनानियों को पीछे हटा हुवा देख कर आक्रमण की आज्ञा दी। स्पार्टा और तिजिया निवासियोंने फारिस की सेना के अगले दल का सामना किया, एथेंस वाले उन से कुछ दूर हट कर बाईं ओर थे, और तीसरा भाग इतने पीछे हट गया था कि युद्ध में भाग नहीं ले सका फारिस वाले तीर की पहुंच तक बढ़ आये थे और अपनी ढालों को टट्टी की भांति आगे रख स्पार्टनों पर तीर बरसाने लगे। युद्ध करने से पहिले वलिदान करने की स्पार्टनों मे प्रथा थी और बलिदान भी शकुन होने पर किया जाता था। बाणों के आ आ कर सेना में गिरते रहने पर भी पौसानियाज वलिदान ही करता रहा। शकुन बुरे पड़ रहें थे अतः वह आगे बढ़ते डरता था। स्पार्टा वाले अपनी २ ढालों के पीछे साष्टाङ्ग दडंवत करे हुए पड़े थे, परंतु तीर उन को वेध रहे थे, और बड़े बड़े बीर पुरुष बड़े शोक से मरे, वह शोक मृत्यु के लिये नहीं था वरन् इसलिये कि वे बिना चोट किंये ही मर गये। ऐसी विपत्ति की दशा में पौसानियाज ने हीरा देवी का स्मरण किया। इधर वह तो पूजन ही में लगा था कि तिजिया निवासी आगे को बढ़े और फौरन शकुन अच्छे होने लगे। अब क्या था स्पार्टा वाले भी उछल कर शत्रुओं पर जा कूदे। और एशिया निवासी तीर कमान को एक ओर फेंक कर खड्ग और कटारों से बड़ी बीरता से हथेली पर जान रख कर लड़े। परंतु उन के पास शरीर रक्षा को धातु के कवच नहीं थे; और यूनानियों ने एक दूसरे की ढाल से ढाल मिला कर और बर्छियों को जकड़ कर आक्रमण कर कर के मैदान साफ कर दिया। फांरिस वालों ने पीठ दिखाई और

अपने सुदृढ़ स्थान को ताबड़ तोड़ भागे। स्पार्टनों ने इस जगह को भी घेरा किंतु क्योंकि वे किलों को जीतने में कच्चे थे इसलिये फारिस वाले तब तक उन के मोर्चे को रोके रहे जब तक एथेंस वाले थेबीस वालों को जीत कर नहीं लौटे। तब सब ने मिल कर भीतर अधिकार कर लिया और जो फारिस वाले वहां भगा दिये गये थे उन के काट कर टुकड़े टुकड़े कर दिये गये। इस से अधिक पूर्ण विजय कभी नहीं मिली थी, फारिस वालों की सेना पूर्णतया नष्ट कर दी गई थी और चढ़ाइयें समाप्त हो गईं। लूट के बहुत से माल में से दशम् भाग देवताओं की भेंट किया गया। वीरता का पारितोषिक प्लेटिया वालों को मिला, मृतकों की कबरों की रक्षा करना उन्हें सौंपा गया था, और पौसानियाज ने उन की रियासत को, जहाँ युद्ध हुवा था, यह घोषणा कर दी कि यह सदा पवित्र समझी जायगी (ऐसा होने से कोई यूनानी उस पर आक्रमण नहीं करता था)।

३१—**माईकली का युद्ध**—जिस दिन प्लेटिया के युद्ध में यूनान पर चढ़ाई करने वालों का नाश हुवा था, उसी दिन एशिया माइनर के तट पर की एक लड़ाई से आयोनिया से फारिस का अधिकार जाता रहा। यूनानी जल सेना जहाजों पर समुद्र पार कर एशिया को गई और यहां माइलेटस के पास माईकली स्थान पर उस को फारिस का बेड़ा मिल गया। फारिस वाला कप्तान समुद्र में लड़ना नहीं चाहता था। उस ने सेना को भूमि पर उतार दिया और किनारे पर जहाज खड़े कर दिये और स्थल पर जो सेना थी उस में जा मिला। यूनानियों में अधिकांश एथेंस निवासी थे जो

जितने जल में लड़ने को उद्यत थे उतने ही स्थल पर भी। उन्हीं ने किनारे पर फारिस की सेना पर धावा मारा और केवल पूर्णतया विजय ही नहीं पाई वरन् जहाजों में आग भी लगादी और उन को सत्यानाश कर दिया। आयोनियां वाले फारिस वालों की ओर से लड़ने को बाध्य किये गये थे, परंतु युद्ध आरंभ होते होते वे यूनानियों में मिल गये और आयोनिया उस दिन से स्वाधीन हो गई।

३२—**यूनान को किसने बचाया**—फारिस वालों को, जिन्होंने इतना बड़ा राज्य जीता था, यूनान के एक छोटे से हिस्से ने हरा दिया, जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं। इस बात को हम को भी मानना पड़ेगा कि यूनानियों की इस विजय का कारण कुछ कुछ फारिस के सरदारों की चूकें भी थीं, और युद्ध में बहुत सी बातें ऐसी भी थीं कि जिन से यूनानियों की कुछ नामवरी नहीं हो सकती,—बहुत सी रियासतों ने बहुत ही सहज में जरक्सिस की अधीनता स्वीकार कर ली, कुछ पहिले ही से उस की ओर थीं और तो और उन रियासतों में भी, जिन्हों ने बहुत दृढ़ संकल्प से युद्ध किया था, प्रायः कोई न कोई दल ऐसा होता था जो उस की अधीनता स्वीकार करने को तैयार होता था। जैसा प्रायः देखने में आता है, यूनानी अपने आप का अधिक ख्याल रखते थे और सब के लाभ का बहुत ही थोड़ा। यद्यपि स्पार्टा ने प्लैटिया पर फारिस को ऐसी चोट पहुंचाई कि वह उठ न सका, तथापि यदि उस को यूनान का नेता मान कर देखिये तो वह विश्वासनीय और देर न करने वाला नहीं था। परंतु कोई रियासत एथंस से अधिक साहस, चुस्ती और

संकल्प की दृढ़ता नहीं दिखा सकती। उस में यह तीनों गुण आरंभ ही से तथा युद्ध के अंत तक रहे। यह एथेंस की काम करने की शक्ति, और पेलापोनिस की रियासतों के स्पार्टा के नीचे एकता से काम करने के स्वभाव ही का फल था कि जिस से आयोनिया की अपेक्षा युरोपीय यूनान पर बिजय पाना टेढ़ी खीर हो गया।

❀ पांचवां पाठ ❀

एथेंस राज्य और पेलोपोनिसस की लड़ाई।

१–एथेंस और पिरियस के चारों ओर दीवारें बनाई जाना

प्लेटिया के युद्ध के उपरान्त एथेंस निवासी फिर अपने उजड़े हुए घरों को लौट आए, और एक बार फिर नगर को बनाया। परंतु पुरानी दीवार बनाने के बदले थेमिस्टाक्लिस ने उन से कहा कि बड़े घेरे की दीवार बनाओ, जिस में यदि पुनः युद्ध हो तो गांव वाले अपना माल असबाब ले आकर उस के भीतर अपनी प्राण रक्षा कर सकें। पड़ोस की रियासतों को, जिन में कोरिंथ और इजीना मुख्य थीं एथेंस की शक्ति देख कर जलन हुई और जब उन्हों ने थमिस्टाक्लिस को ऐसी दृढ़ दीवार बनवाते देखा तो उन्होंने स्पार्टा को हस्तक्षेप करने और बन बाना रुकवाने को भड़काया। परंतु थेकिस्टाक्लिस ने एक ऐसी चाल चली जिसके कारण स्पार्टा वाले तब तक कुछ न कर सके जब तक कि दीवार इतनी ऊंची बन गई कि वह शहर को बचा सके। परंतु तब स्पार्टा वाले कर ही क्या सकते थे, सो उन्हें अपना क्रोध छिपाना पड़ा एथेंस के चारों ओर की दीवार बन कर ठीक होगई और पिरियस के चारों ओर इस से भी दृढ़ दीवार बनाई गई।

२—पौसानियाज—माईकली के युद्ध के उपरांत यद्यपि आयोनिया स्वाधीन हो गयी थी, परंतु थ्रेस और एशियामाईनर के तट पर अब भी बहुत से स्थान ऐसे थे जो फारिस वालों के अधिकार में थे । इन में से मुख्य बिजैंशियम था, जिस को कुस्तुन्तुनिया (कांस्टेंटिनोपिल) कहते हैं । जब तक बिजैंशियम फारिस वालों के हाथ में रहता तब तक वे वहां के जहाजघर से जहाज भेज कर यूनानी जहाजों को नष्ट करा सकते थे और सहज में पुनः युरोप पर चढ़ाई कर सकते थे । अतः यूनानियों ने पौसानियाज के सेनापतित्व में विजशियम का अवरोध कियाँ । नगर ले लिया और जराक्षस के थोड़े से कुनबेवाले पौसानियाज के हाथ में पड़ गये । पौसानियाज को अब एक दगा बाजी सुझी । विजन्शियम और प्लेटिया में विजय पाने से उस ने फारिस के राजाओं के ठाठ देखे थे, और क्योंकि अब उस को फारिस का अधिक हाल मालूम हो गया था सो उस ने देखा कि पूर्व की बड़ी रियासत से मिलान करने में स्पार्टा तथा और यूनानी रियासतें बिलकुल ही हेच हैं क्यों कि वे धन और विस्तार में बहुत बड़ी थीं । हो असंतुष्ट हुआ सोचने लगा कि मैं भी पूर्वीय बादशाहो की भांति बड़ा बादशाह होऊंगा । इस अभिप्राय से विजैंशियम जीतने पर उसने जराक्षस के कुनबे वालों को बिना कुछ कष्ट पहुचाये हुए छोड़ दिया और जराक्षिस को एक पत्र लिखा कि तुम अपनी लड़की से मेरा बिवाह कर दो और बदले में मैं सब यूनान तुम्हें जीत देऊंगा । वह अभी से ऐसे रहने लगा कि जैसे पहिले से ही फारसी सत्रप होवे, फारिस के से व्यसन करने लगा और जो यूनानी उस के नीचे काम करते थे

उन का अपमान करने लगा । उस के राज विद्रोह की खबर स्पार्टा पंहुची और वह बुलाया गया । यह हाल देख कर उन आयोनियन जहाजी नौकरों ने, जो पौसानियाज की धृष्ठता से रुष्ट हो गए थे, एथेंस के जल सेना के सेनापति को यूनानी बेड़े को स्पार्टनों के बदले अधिपत्य लेने को बुलाया । एथेंस वालों ने ऐसा ही किया और जब पौसानियाज की जगह पर स्पार्टा से भेजा हुआ दूसरा मनुष्य आया तो उस ने देखा कि कोई मेरी आज्ञा नहीं पालेगा सो वह लौट गया ।

२ डिलास की गोष्ठी—फारिस वालों के साथ जो युद्ध हुआ था उस में जितनी युनानी रियासतें लड़ी थीं उन सब ने स्पार्टा को नेता स्वीकार कर लिया था, परंतु इस से आगे को दो गोष्ठियां हो गई जिन में एक का नेता स्पार्टा और दुसरे का एथेंस था । पेलोपोनिसस की रियासतें तो स्पार्टा की अनुचर रही किन्तु एशिया-माइनर तथा थ्रेस के तट के बहुत से द्वीप और नगर एथेंसे की गोष्ठी में मिले । यह गोष्ठी डेलासी की गोष्ठी कहाती थी क्योंकि इसके प्रति निधि डेलास द्वीप के एपालो के मंदिर पर जुड़ते थे और इस का कोश भी यहां ही रहता था । इस गोष्ठी का अभिप्राय यह था कि इजियन सागर से फारिस वाले बाहर रक्खे जावें । प्रत्येक नगर को चंदे में कुछ जहाज और सेना अथवा कुछ निश्चित धन देना पड़ता था, और इस धन अथवा जहाजों की संख्या को निश्चय करने को, जो कि प्रत्येक को देना चाहिये था, ईमानदार अरिस्टाइडीज था । यही जल सेना का नेता था । स्पार्टा तथा एथेंस की गोष्ठियों में आरंभ से ही दो भेद थे । (१)—स्पर्टा की सहायक रियासतें

स्थल की सेना देती थीं, और एथेंस की गोष्ठी की रियासतें जहाज और जहाजी सेना देतीं। (२)—स्पार्टा सर्वत्र 'आलिगर्की' (दूसरा पाठ देखिये) शासन स्थापित करना चाहता था, और एथेंस प्रजासत्ता (Democracy) स्थापित करना चाहता था। सो एक ही नगर में अमीर लोग स्पार्टा के पक्षपाती थे, तथा सर्व साधरण एथेंस के। डेलास की गोष्ठी में सब से बड़ी यह भूल थी कि थोडी सी रियासतों को जहाज के बदले धन देने की मंजूरी दी गई थी। इस का यह फल हुआ कि और रियासतों ने भी, जो पहिले से जहाज देती चली आई थीं, बदले में रुपिया देने का प्रबंध किया कि जिस में जल सेना में काम करने के भय और कष्ट से बच जांय। इस से स्वाधीन मित्र राजा होने के बदले वे एथेंस के अधीन हो गये। जब तक वे अपने जहाजों को रखते तब तक उन के पास एक ऐसा शस्त्र था जिस से वे एथेंस से, यदि वह उन्हें हानि पहुंचाता, अपनी रक्षा कर सकते थे; परंतु जब वे जहाजों के बदले धन भेजने लगे तब एथेंस पर से उन का सब जोर उठ गया और यह धन गोष्ठी की सर्व साधारण की चीज होने के बदले एथेंस को दिये जाने वाले शुल्क की भांति हो गया। कुछ काल उपरांत प्रतिनिधियों की सभा भी जाती रही; कोष डेलास से एथेंस को उठा दिया गया, और अधिकांश धन सरकारी नौकरों के वेतन देने में और एथेंस की सुन्दरता बढ़ाने में लगाया जाने लगा। यह परिवर्तन धीरे धीरे हुआ। पहिले पहल छोटी छोटी रियासतों को शिकायत करने का कोई कारण नहीं था। फारिस से लड़ाई होती रही और इजियन सागर के इधर

उधर जितनी जगहं फारिस वालों के हाथ में अब भी रह गई थीं वे एक एक करके जीत ली गईं। और ईसा मसीह से ४६६ वर्ष पहिले एथंस के सेनापति ने, एशिया-माइनर के दक्षिण तट पर यूरीमीदन नदी के मुहाने पर फारिस वालों पर, स्थल और जल दोनों पर विजय पाई। इस सेनापति का नाम साईमन था। एथंस की ओर से और रियासतों में असंतोष के चिन्हं पहिले इसी साल दिखाई दिये थे। नैक्षास ने गोष्ठी से संबंध तोड़ लिया परन्तु उस को फिर उस में शामिल होना पड़ा।

४—पौसानियाज़—जब पौसानियाज़ स्पार्टा पहुंचा तो उस पर राज विद्रोह का अभियोग चला, परंतु वह दोषी नहीं ठहरा और दंड से बच गया। और एशिया माइनर में रियासतों को भड़काने लगा कि जिस में वे उस की तर्कीबों पर चलें। स्पार्टा वालों ने फिर उस को वहां से बुला लिया और यहां आ कर वह स्पार्टा की गवर्मेंट को उखाड़ देने को हेलट लोगों के साथ साज़िश करने लगा। एक दिन जब वह अपने एक गुलाम से बात चीत कर रहा था तो यफरांने (दूसरा पाठ—अ. ५—देखिये) किसी विधि से उस की बात सुन ली और उन को उस के राज बिद्रोही होने का निश्चय हो गया। वह मन्दिर में जा छिपा और वहां भूखों मर गया (ईसा मसीह से ४६७ वर्ष पहिले)।

५—थेमिस्टाक्लिस—यफरां को पता चल गया कि पौसानियाज की साजिश में थेमिस्टाक्लिस भी सना हुआ था। यद्यपि थेमिस्टाक्लिस की मानसिक शक्ति बहुत ही बिचित्र थी, तथापि उस को इज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं था। जब

तक उस का स्वार्थ साधन हुआ जाता था तब तक वह वह चिंता नहीं करता था कि मैं जो कुछ कर रहा हूं ठीक है या बेइमानी की बात है । और जब युद्ध समाप्त हो गया तो उसने अपने बड़े पराक्रम से निर्बल राज्यों से रुपिया वसूल करना आरंभ किया । उस के दर्प और अन्याय से मनुष्य (एथेंस निवासी) उस से घृणा करने लगे और ईसा मसीह से ४७१ वर्ष पहिले उस को देश निकाला दिया गया और वह रहने को अर्गास चला गया । जब उस को यह मालूम हुआ कि पौसानियाज वाली मेरी साजिश का हाल खुल गया तो वह बहुत सी विपत्तियां झेलता हुआ भाग कर फारिस राष्ट्र की राजधानी सूसा पहुंचा । जराक्षिस उसी समय मरा था और आर्टाजरक्षिस, जो उस का पुत्र था, गद्दी पर बैठा था। थेमिस्टक्लिस ने आर्टाजरक्षिस को पत्र लिखा जिस में यह लिखा था कि यद्यपि जराक्षस को सब से अधिक हानि मैं ही ने पहुचाई है परंतु मैं फारिस के लिये उतना ही लाभ भी पहुंचा सकता हूं । राजा ने प्रसन्नता से उस का स्वागत किया और उसे बहुत धन द्रव्य दिया । यह आशा की जाती थी कि थेमिस्टाक्लिस जिस काम को हाथ में लेता था वह काम हो ही जाता था अतः वह फारिस वालों को यूनान पर विजय दिला देगा, परंतु वह बिना प्रयत्न किये ही चल बसा । वह निर्वासित और फारिस वालों का किराये का टट्टू होकर मरा, क्योंकि वह न्याय और देश प्रेम, से धन और शक्ति को अधिक समझता था । परंतु थेमिस्टाक्लिस से अधिक किसी भी अकेले मनुष्य ने एथेंस जैसी छोटी रियासत को बड़ा नहीं बना पाया ।

६—एथेंस में दल—जब एथेनियनों ने अपना नगर छोड़ दिया (चौथा पाठ--अ. २६--देखिये) तो अमीर गरीब जितने भी योग्य मनुष्य थे सब ने सलामिस में जहाज के बेड़े में काम किया था। इस बड़ी बिजय के पाने में जो निर्धन मनुष्यों ने भाग लिया था इस से वे समझने लगे कि एथेंस के हित के लिये जितना अमीरों ने परिश्रम किया है उतना हम लोगों ने भी किया है तो वर्त्तमान शासन पद्धति के अनुसार जो हम को सरकारी नौकरियां नहीं मिलती हैं सो मिलनी चाहियें। अरिस्टाइडीज ने जो अमीरों और मुसाहबों के दल का नेता था देखा कि शासन पद्धति बदलनी पड़ेगी । यह अमीर लोग पुरानी ही मारामार किये जाना चाहते थे। परंतु अरिस्टाइडीज ने वह परिवर्तन स्वयं पेश कर दिया कि जिस में कोई जल्दबाज मनुष्य इस काम को अपने हाथ में न लेले । अब गरीब से गरीब पुरवासी आर्कन चुना जा सकता था और दूसरी पदवियां भी प्राप्त कर सकता था अतः एथेंस में पहिले की अपेक्षा अधिक सर्व साधारण तन्त्र स्थापित हो गया । अरिस्टाइडीज की मृत्यु के उपरान्त मुसाहबों के दल के नेता मिल्टाइडीज का पुत्र साइमन हुआ (पांचवां पाठ अ० ४) यह बहुत ही उत्तम सैनिक था और बड़ा ईमानदार मनुष्य था। वह और उस के अनुचर स्पार्टा से बहुत मित्रभाव रखते थे और यह चाहते थे कि स्पार्टा और एथेंस तथा इन दोनों की गोष्ठी वाले परस्पर मेल रखकर फारिस के विरुद्ध लड़ने जांय और स्पार्टा या एथेंस एक दूसरे को हानि न पहुंचावें ।

७—पेरिक्लीज—दूसरे दल का नेता पेरिक्लीज था, जो कि अलकमियानोडी के कुल का था। परिक्लीज ने सोचा कि फारिस

वालों से युद्ध होने के उपरांत युग ऐसा पलट गया कि कुछ वर्ष पहिले जो शासन ठीक था वही अब ठीक नहीं रह गया। उन दिनों में तो एथेंस समुद्र से दूर पर का एक साधारण शांतिपूर्ण नगर था, जहां के निवासी सीधे सादे किसान थे और शहर को बहुत कम आते थे, और यदि अमीर लोग उन्हें सूद पर गुजर करने वालों के हाथ से बचाए रहते तो वे प्रसन्नता पूर्वक शासन उन्हीं के लिये छोड़ देते। परंतु अब एथेंस बड़ा व्यवसायी नगर हो गया था, और समुद्र के किनारे एक और ही नगर बन गया था, जो कि बड़े और बुद्धिमान् व्यापारियों से भरा पड़ा था। एथेंस के सौदागरों के जहाज संसार भर में सब से अधिक शक्तिवाले थे और इजियन सागर के पास की जितनी रियासतें थीं उनकी गोष्ठी का यही प्रधान स्थान था। अथेंस एक हुकूमत करने वाला नगर हो गया था। अतः परिक्लीज ने सोचा कि यहां के निवासियोंको ऐसा होना चाहिये कि वे राज्य को और अपने आप को शासन में रख सकें। उस ने सोचा कि साधारण प्रजा भी शिक्षा से, सभाओं के भाषण सुनने से, अभियोगों में जूरी का काम करने से, और उन सहवासियों के जीवन को देखने से जिन में कि प्रत्येक गुण हैं, तीव्र बुद्धि और समझदार हो सकती है। उस ने यह भी सोचा कि यदि अच्छे राजनैतिज्ञ अधिकांश प्रजा को मार्ग दिखाते रहें तो वह अथेंस की भलाई की बातें थोड़े से अमीरों या मुसाहबों की अपेक्षा अच्छी तरह से निश्चय कर सकती है। वह यह भरोसा नहीं रखता था कि अमीर लोग अथेंस को इसके नवीन महत्व में 'स्थिर रखना चाहते हैं या यह जानते हैं कि इसका नवीन महत्व कैसे स्थिर रहे। उन की पुरानी बातों की प्रीति उसको उन्नति दिलाने में

सहायक होने के बदले उन्नति के पथ से पीछे हटाने वाली जान पड़ती थी और स्पार्टा का लिहाज विपत्ति का मूल जान पड़ता था। उसको यह स्पष्ट दिखाई देता था कि स्पार्टा सदा ही अथेंस का शत्रु रहेगा और उसको देख देख कर जलेगा। और यद्यपि उसकी यह इच्छा नहीं थी कि आंख मीच कर अभी स्पार्टा से युद्ध ठान लिया जाय, परंतु वह यह जानता था कि स्पार्टा से मित्रता रखने के लिये साइमन का प्रयत्न निष्फल जायगा। इसलिये वह चाहता था कि युद्ध आरंभ हो जाने से पहिले अथेंस का जितना ही बलवान हो जाना संभव हो वह उतना बलवान हो जाय।

९—अथेंस में परिवर्तन—पहिले तो साइमन और उस के दल की जीत रही। ईसा मसीह से लगभग ४६२ वर्ष पहिले स्पार्टा में एक भूकम्प हुआ और हेलट लोगों ने हड़ताल कर दी। स्पार्टा वालों ने अथेंस से सहायता मांगी, और वे बहुत घबड़ाए हुए थे। साइमन ने लोगों को समझाया कि तुम लोग मुझको एक बड़ी सेना के साथ स्पार्टा की सहायता करने को भेज दो। परंतु कुछ समय उपरांत स्पार्टनों को यह संशय हुआ कि अथेंस वाले दगा कर रहे हैं और इस लिये उन लोगों ने उन्हें लौटा दिया। इस परिभव से अथेंस वाले स्पार्टनों से बिगड़ गए। स्पार्टा के मित्र साइमन की सब शक्ति निकल गई और परिक्लीज के दल का प्रभाव जम गया। परिक्लीज के दल वालों ने परिओपैगस महासभा से, जिस में मुसाहबों की बहुत चलती थी, कानूनों के पास होने के रोकने का अधिकार निकाल लिया। वे प्रजा के साथ हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते थे। उन्हों ने यह प्रबंध भी किया कि जो: पंचायेत के बाजार में लगती थी

उसके सभासदों और जूरी में बैठने वालों को वेतन मिलता रहे, जिसमें निर्धन मनुष्य भी अपना समय इन कामों में लगा सके और शासन सम्बन्धी सब काम प्रजा ही सदा से अधिक करे। स्पार्टा की मित्रता की संधि तोड़ दी गई और उसके शत्रु अर्गास से मित्रता कर ली गई। और ईसा मसीह से ४५९ वर्ष पहिले साइमन भी देश से निकाल दिया गया।

९ **लड़ाइयां**—अथेंस ने मिगारा से भी मित्रता कर ली क्योंकि वहां के पहाड़ों में पेलोपोनिसस की आई हुई सेना का मुकाबला किया जा सकता था। इनके ऐसा करने से कोरिंथ और इजीना ने इन पर युद्ध बोल दिया। अथेंस ने जल-विजय पाई और इजीना को घेर लिया। उन्हीं दिनों में अथेंस की एक बड़ी सेना मिश्र देश में फारिस वालों से लड़ रही थी और कोरिंथ वालों ने यह जान कर कि अथेनियन सेना लड़ाई में लगी हुई है और खाली नहीं है मिगारा पर चढ़ाई कर दी। अथेंस के उन 'लड़कों और बुड्ढों ने' जिनकी अवस्था सेना में काम करने योग्य नहीं थी और जो इस कारण घर पर ही थे कूच कर दी और कोरिंथ वालों को पूर्णतया पराजित किया। एक शिलालेख का कुछ भाग अब तक मौजूद है जिसमें कि उन अथेनियनों के नाम हैं जो युद्ध में मारे गए थे। इस वर्ष में वे साइप्रस, मिश्र, फिनिशिया, मिगारा, इजीना के निकट और पेलोपोनिसस के तट पर लड़े। यह फल फारिस पर विजय पाने ही का था कि अथेंस वालों में ऐसा विचित्र साहस और युद्ध कुशलता आ गई। वे समझते थे कि हमारे लिये कोई कार्य बहुत कठिन नहीं है।

१०—**बोशिया**—वह गोष्ठी जिस का मुखिया थेविस था उस में

बीशिया के बहुत से नगर सम्मिलित थे। प्रुटिया सदा से इस गोष्ठी से पीछा छुड़ाने को हाथ पैर पटक रहा था और अन्त में एथेंस से मित्रता कर के वह अब सफलमनोर्थ हुआ। इस कारण तथा और बहुत से कारणों से थेविस भी अथेंस का कट्टर शत्रु हो बैठा। थेविस में आलिगर्की शासन था और फलतः उसकी गोष्ठी तभी स्थिर रह सकती थी जब वह और रियासतों में आलिगर्की शासन स्थापित कर देता। थेविस वालों को ऐसा करने में सहायता देने को स्पार्टा ने वीशिया में ईसामसीह से ४५७ वर्ष पूर्व एक सेना भेज दी और ऐसा होने से आलिगर्की शासन के पक्षपाती अथेंस निवासियों को स्पार्टा से साजिश करने का अवकाश मिला। स्पार्टा की सेना का विचार था कि एक साथ धोखे में वीशिया से लौटती समय अथेंस पर जा कूदेंगे और शासन मुसाहबों को दे देंगे। परंतु अथेंस वालों को यह भेद विदित हो गया और उन्होंने स्पार्टनों से लड़ने के लिये सेना भेज दी। तनगुड़ा में समर हुआ और यद्यपि स्पार्टा की जय हुई किंतु उनका अथेंस में घुसने का साहस नहीं हुआ। दो महीने उपरांत अथेनियन लोग वीशिया में घुस गए और थेविस वालों को पराजित करके वीशिया में जितनी आलिगार्कियें थीं उन को विध्वंस कर के उन की जगहों में सर्व साधारण सत्ताएं स्थापित करते गए। ये सर्वसाधारण सत्ताएं वास्तव में अथेंस के अधीनस्थ रियासतों की भांति थीं और फोकिस और लोकिस में भी यही हाल था। फलतः असल में अथेंस का अधिकार थर्मापाइलो तक विस्तृत हो गया। ईसा मसीह से ४५५ वर्ष पहिले इजीना ले लिया गया और उस से शुल्क वसूल किया जाने लगा।

११—लम्बी लम्बी दीवारें—अब दो बड़ी बड़ी दीवारें ४ मील से अधिक दूरी तक बनाई गईं जो एक दूसरे से लगभग २०० गज के अंतर पर थीं। इन दीवारों से अथेंस की शक्ति और भी बढ़ गई, क्योंकि ऐसा हो जाने से यह असंभव हो गया कि कोई स्थल सेना भी अथेंस को इस प्रकार घेर ले कि जिस से नगर में रसद न पहुंच सके। जब तक यह दीवारें न ले ली जातीं तब तक अथेंस से पिरियस तक एक सुरक्षित मार्ग मौजूद था। जब तक अथेंस का समुद्र पर अधिकार रहता; तब तक जहाजों द्वारा वे पिरियस को अन्न ला सकते थे, और यदि स्थल की ओर सेना अथेंस को घेरे रहतीं तब भी वे पिरियस से उस अन्न को अथेंस ला सकते थे। ईसा मसीह से ४५२ वर्ष पहिले स्पार्टा से पांच वर्ष के लिये शांति की संधि कर ली गई; और इस समय अथेंस की शक्ति बहुत चढ़ी बढ़ी थी। ईसा मसीह से ४४७ वर्ष पहिले उन अमीरों ने, जिन्हें अथेंस ने निकाल बाहर किया था, पुनः शक्ति प्राप्त की और अथेनियनों को करोनिया पर हराया। अथेंस का फोकिस, लोक्रिस और बीओशिया पर से सब अधिकार उठ गया और इसी समय यूबिया और मिगारा बिगड़ बैठे। पांच वर्ष की संधि समाप्त हुई और स्पार्टन ने एटिका पर चढ़ाई कर दी। अथेंस बड़ी विपत्ति में पड़ा, परंतु पेरिक्लीस ने घूस दे कर स्पार्टा के सरदारों को लौट जाने के लिये ठीक कर लिया और इस प्रकार अथेंस की रक्षा की और यूबिया को भी अधिकार में कर लिया। (ईसा मसीह से ४४५ वर्ष पूर्व) स्पार्टा से तीस वर्ष की संधि कर ली गई इस संधि के अनुसार अथेंस ने बीओशिया तथा और दूसरी समुद्र से दूर पर की रियासतों पर से अपना अधिकार उठा लिया, और

अब उसकी अधीनस्थ तथा सहायक रियासतें समुद्र के पास की ही रह गईं। इसी समय के लगभग फारिस की लड़ाई भी समाप्त हो गई।

१२—पेरिक्लीज के समय में एथेंस की दशा—इसके उपरान्त पेरिक्लीज दस वर्ष तक स्ट्रेटजस के पद पर रह कर राज्य के काम को चलाता रहा। उस ने टाइरेंट की नाईं नियमों से अधिक अधिकारों का उपयोग नहीं किया और न लोगों से बलपूर्वक आज्ञा का पालन कराया वरन् एक साधारण नगर निवासी की भांति रह कर भी वह अपने प्रियभाषण और बुद्धिमत्ता और सब से बढ़कर अपनी पूर्ण भलमनसाहत से, लोगों पर शासन करने में समर्थ हुआ। एथेंस से अपनी सहायक रियासतों के साथ अधीनस्थ रियासतों का सा वर्ताव कराने और लोगों को पब्लिक के कामों में सम्मिलित होने में वेतन देने में उस की गलती थी। उस का यह भरोसा भी ठीक नहीं था कि लोग स्वयं बुद्धिमान नेता को छांट कर उसके पैरों पर पैर रक्खेंगे और मूर्ख के अनुचर नहीं होंगे। परंतु किसी मनुष्य ने कभी भी देशसेवा के लिये अपने जीवन को ऐसा उच्च हृदय और स्वार्थरहित हो कर पेरिक्लिज से अधिक अर्पण नहीं किया। इस देश सेवा, बड़ी बुद्धिमत्ता और प्रायः प्रबंध में सफल होने से, और इस से भी अधिक उसके सब एथेंस वासियों की मानसिक उन्नति करने तथा अच्छी बातों में उन की रुचि प्रवृत्त करने के उच्च विचार से, वह प्रायः सब यूनानियों में उत्तम राजनीतिज्ञ समझा जाता था। पेरिक्लीस का एक काम ऐसा था जो सब कालों में लाभदायक है। आज कल के इङ्गलैंड तथा अन्य स्वतंत्र देशों के सब से अच्छे

मनुष्यों के विचार प्रजावर्ग के विषय में पेरिक्लीस के से ही हैं। वे सब पेरिक्लीस की भांति चाहते हैं कि लोगों को शासन में यथायोग्य भाग अवश्य मिले चाहे वे धनवान हों या निर्धन और राज काज की बातों के देखने का उन्हें शौक हो। उन का यह विश्वास है कि और चीजों की अपेक्षा लोगों की उन्नति और विद्या प्रचार पर ही देश का सुख अधिक निर्भर है। वे साधन जो पेरिक्लीज द्वारा प्रजा की उन्नति के लिये काम में लाए गए थे ऐसे नहीं थे जैसे कि इङ्गलैंड में काम आते हैं जैसे स्कूल और क्लब जो एक दूसरे की सहायता करते हैं। यूनानी लोग उन्हीं बातों का प्रयोग करते थे जो उन्हें बहुत स्वाभाविक जान पड़ती थीं। पेरिक्लीज ने और सब मनुष्यों से अधिक परिश्रम करके एथेंस वासियों में विद्या, कविता, तथा कला कौशल का प्रेम उत्पन्न कर दिया, और ये गुण उन में तब भी रह गए थे जब कि उन का युद्ध करने का महत्व जाता रहा था। उन्हीं गुणों से एथेंस अपने रण कौशल की अपेक्षा संसार के अधिक काम आया। उन दिनों में पुस्तकें बहुत कम पढ़ी जाती थीं इस लिये पेरिक्लीज ने लोगों को पुस्तकों की विद्या नहीं पढाई बल्कि वह उन के प्रति दिन के जीवनों को आलसी तथा उद्देश्य रहित होने के बदले काम करने वाला और चुस्त बना कर उन की सब योग्यताओं को बढ़ाना चाहता था, तथा उन बातों को, जिन में सब मनुष्य शामिल होते थे, जैसे देवताओं का पूजन, अथवा सर्व साधारण के आनंद मनाने के समय—अधिक आकर्षक और उत्तम बना कर भी वह यह काम निकाला चाहता था। उसके कथनानुसार मन्दिर तथा मूर्त्तियां, जिन से यूनानियों का देवताओं के

विषय में ध्यान जमता था, सुंदर सजीली और शान्तिस्वरूप बनाई गई। अथेन्स की ओर से सर्वसाधारण स्थानों में देवताओं के काम करते हुए चित्र बनाए गए, और बड़ी बड़ी घटनाओं के चित्र एथेंस के इतिहास में बने। लाखों मनुष्यों के सामने बड़ी बड़ी खुली हुई जगहों म राज्य के व्यय से बड़े बड़े कवियों के बनाए हुए नाटक खेले जाते थे। दुःखान्त नाटकों का कोई दुःखमय किस्सा होता था, और हर्षयुक्त सुखांत नाटकों में, वर्त्तमान समय की बातें होती थीं। इन नाटक के खेलों से मनुष्यों को केवल आनन्द की प्राप्ति तथा मूर्खतायुक्त भोंड़ी बातों से घृणा ही नहीं होती थी, वरन् पुस्तक पढ़ने से जैसे मनुष्य बातों को विचारते हैं वैसे ही इन नाटकों से भी उन के हृदय में विचार उत्पन्न होते थे। सब से अच्छा ट्रैजेडी नाटक लिखने वाला इस्कीलस था, जो मराथान रणस्थल में लड़ा था। उसके खेल बहुत गम्भीर हैं, उन में पात्र बहुत थोड़े हैं और उस ने बहुत ही उत्तम भांति से लिखा है। दूसरा दुःखान्त नाटक लिखने वाला सफाक्लिस था। इसके खेलों में बहुत चमत्कार है, पात्रों का वार्तालाप और उन के कार्यों के पढ़ने से ऐसा चित्र खिंच जाता है मानो पात्र वास्तविक मनुष्य हों। इस के उपरांत यूरिपिडीज हुआ। यह दुःखान्त नाटक लेखकों में बहुत ही उत्तम हुआ है। यूरिपिडीज के कुछ काल उपरान्त अरिस्टा फैनिस हुआ, जो कमेडी नाटक लिखने में सर्वोत्तम लेखक हुआ है। इसके खेल चित्त को बहुत हर्ष देने वाले हैं। वह एथेंस के नए परिवर्त्तनों को अच्छा नहीं समझता था और नए ढंग के नीतिज्ञों की हंसी उड़ाया करता था। एथेंस में प्रकृति की सृष्टि पर भी विचार होने लगे थे। ये प्रकृति सम्बन्धी विचार

कुछ काल से आयोनियां में होते आए थे किन्तु अब अथेंस में बड़ी तेजी से सुविज्ञ लोग इकट्ठ होते जा रहे थे। साधारण लोग प्रकृति के विषय में विचार करना पाप समझते थे क्योंकि उन के विचार ऐसे थे कि वे सूर्य को देवता मानते थे। अनेक्सागोरस नामी एक व्यक्ति का प्राण, जो कि परीक्लीज का शिक्षक और मित्र था, यह कहने ही से बड़े संकट में फस गया कि सूर्य भी पृथ्वी ही की भांति पत्थरों का बना हुआ है। अतएव विज्ञान की खोज का युग अथेंस में अब आरम्भ ही हुआ था और लोग अब भी पुरानी ही लकीर के फकीर थे। यह सब होने पर भी पेरीक्लीज के समय की कविता और कला कौशल मानव जाति की सुन्दरता के नमूने हैं।

१३—अथेंस और स्पार्टा का फरक—पेरीक्लीज अथेंस को सजाता जाता था किन्तु स्पार्टा अब भी बिना इमारतों का कोरा गांव ही सा था और इन दोनों के निवासियों में भी उतना ही भेद था जितना कि इन दोनों राज्यों के स्वरूप में था। अथेंस निवासियों के जीवन कई ढंग के थे, तेजी और वाणिज्य-प्रेम उनकी रगों में बस गया था। इसके प्रतिकूल स्पार्टा वाले अभी सैनिक ही बने हुए थे और अपने पुराने ढर्रे पर चले जा रहे थे। उन में शिक्षा बहुत कम थी और अच्छे सिपाही बनने के अतिरिक्त उन की और कोई अभिलाषा भी नहीं होती थी।

१४—पेलोपोनिसस की लड़ाइयां—ईसा मसीह से ४३१ वर्ष पहले अथेंस और पेलोपोनिसस की समिति से लड़ाई छिड़ गई। यह लड़ाई अथेंस का सर्वनाश कर के सत्ताईस वर्ष पीछे समाप्त हुई। इसकी जड़ यह हुई कि कोरिंथ और

कर्सीरा किसी बात पर लड़ पड़े जिसमें कि अथेंस ने कर्सीरा का पक्ष लिया। स्पार्टा में एक महासभा हुई जिसमें कि कोरिंथ आदि ने अथेंस के काम की शिकायत की और इस पर अथेंस से युद्ध करना निश्चित हुआ। किन्तु इस युद्ध का असली कारण यह था कि स्पार्टा और उसकी मित्र रियासतें अथेंस की बढ़ती हुई शक्ति से डाह खाती थीं। इस युद्ध में इतनी यूनानी शक्तियां सम्मिलित हुईं जितनी कि पहिले किसी युद्ध में कभी नहीं हुई थीं। वे शक्तियें भी जो फ़ारस के युद्ध में दूर रही थीं इस लड़ाई में किसी न किसी ओर से लड़ीं। स्पार्टा आलिगर्की का पक्षपाती था और इसलिये अमीर लोग उस के हितैषी थे। अथेंस प्रजातन्त्र का पक्षपाती था और इसलिये सामान्य लोग उस के मित्र थे। अतः यह युद्ध यूनान के लोगों में आपस में इन श्रेणियों का सा युद्ध था। इस युद्ध में प्रायः एक ही नगर के रहने वाले अमीरों और सर्वसामान्य लोगों ने एक दूसरे पर छापा मारा जिसमें अमीर लोग स्पार्टा के और सर्वसामान्य अथेंस के प्रतिनिधि थे।

१९—एथेन्स और स्पार्टा की शक्तियां—जब युद्ध आरम्भ हुआ तो स्पार्टा की ओर सब पेलोपोनिसस था। केवल अर्गास और एकिया उसके पक्ष में नहीं थे। तथा फोकिस, लोक्रिस और उन के पश्चिम की रियासतों को छोड़ कर थेबिस के आधीन की आलिगर्की शासन की बीसिया की सब गोष्ठी थी। उन की स्थल की शक्ति बहुत उत्तम थी परंतु जहाजी बेड़ा केवल कोरिन्थ वालों ही का अच्छा था। कुछ दिनों के उपरान्त स्पार्टा की ओर साइरेक्यूज़ आ मिला था जिसका बेड़ा बहुत अच्छा था। लगभग सब ईजियन सागर के द्वीप तथा तटस्थ नगर

कर्सीरा और थोड़ी सी यूनान के पश्चिम की रियासतें थीं। एथेन्स वालों ने थ्रेस के सीतलकेस के बार्बेरियन (पहिला पाठ ३ देखिये) राजा से मेल कर लिया। एथेन्स की जल शक्ति स्पार्टा से कहीं चढ़ी बढ़ी थी, परन्तु स्थल शक्ति स्पार्टा की सी ही थी। परन्तु उस का कोष बहुत था और कर भी मिलता था। किन्तु स्पार्टा की गोष्ठी के पास बहुत थोड़ा धन था, या यों कहिये कि बिलकुल नहीं था। एथेन्स वालों की उन के रहन सहन के ढंग के कारण चढ़ बनती थी, क्योंकि वे सब काम करने को उद्यत रहते थे और प्रत्येक मौके से लाभ उठाते थे, किन्तु स्पार्टा वाले आलसी थे और पुराना ढर्रा नहीं छोड़ना चाहते थे। किन्तु इस के साथ यह बात है कि स्पार्टा के साथी अपनी अपनी इच्छा से उस की ओर से लड़ रहे थे और एथेन्स के बहुत से नाम मात्र के सहायक वास्तव में उस के सहायक तो बिलकुल न थे बल्कि उसके आधीन थे, और इस कारण से स्पार्टा का कुछ पल्ला जीतता हुआ था। यद्यपि प्रत्येक नगर में साधारण मनुष्य एथेंस के पक्षपाती थे, परन्तु अमीर लोग उसके विरुद्ध विद्रोह करने को बेचैन थे। स्पार्टा वालों ने यह घोषणा कर दी कि एथेन्स से टाइरंटों का जुल्म उठा देने को ही हम ने युद्ध किया है और हम यूनान की सब रियासतों को स्वतंत्र कर देंगे।

१६—पेरिक्लीज और स्पार्टा के मंसूबे—स्पार्टा की शक्ति बहुत अधिक थी, और एथेंस की जलशक्ति भी अधिक थी। अतः पेरिक्लीज ने एथेंस वालों को समझा दिया कि तुम स्थल पर कभी मत लड़ना और यदि स्पार्टा एटिका पर चढ़ाई करे तो एथेंस में ही प्राण रक्षा करना और उस के देश में

लूट कर देना, और लम्बी लम्बी दीवारों के कारण तुम समुद्र द्वारा एथेंस में अन्न लाने को समर्थ होगे, और स्पार्टनों के समस्त अन्न की उपज नष्ट कर देने से कोई बड़ी हानि नहीं होगी और फिर हम तुम समुद्र द्वारा पेलोपोनिसस पर चढ़ दौड़ा करेंगे, जिस से स्पार्टा को इतनी हानि पहुंचेगी जितनी कि वह हम को नहीं पहुंचा सकेगा। पेरिक्लीज स्पार्टा से इसी भांति लड़ना चाहता था, और उसने अथेन्स वालों से कह दिया कि हम लोगों को द्वीपों के अधिकार ही पर सन्तुष्ट रहना चाहिये और समुद्र से दूर दूर के स्थानों को जीतने का लोभ नहीं करना चाहिये। परन्तु स्पार्टा वाले एथेंस को और ही भांति से ठीक किया चाहते थे। वे सोचते थे कि एथेंस को प्रति वर्ष लूटा करेंगे और एथेंस की प्रजा को भड़का कर उन को उस धन से भी वञ्चित कर देंगे जो उन्हें कर में मिलता है।

१७—एटिका पर चढ़ाई, प्लेग (महामारि)—ईसा मसीह से ४३१ वर्ष पहिले ग्रीष्म ऋतु में स्पार्टा वालों ने एथेंस पर चढ़ाई की और फ़स्लों को नष्ट कर दिया, परंतु युद्ध नहीं हुआ। दूसरे वर्ष पुनः उन्होंने चढ़ाई की, और जब एथेंस की चार दीवारी के भीतर बहुत भीड़ हो गई तो प्लेग फूट निकला और बहुत मनुष्य मर गए। एथेंस का बल थोड़े दिनों के लिये कुछ किरकिरा हो गया और यह भी हो सकता है कि इस प्लेग ने पेरिक्लीज द्वारा शिक्षित बहुत से मनुष्यों को हड़प तो कर ही लिया था, इस कारण उसने एथेंस के भविष्यत इतिहास पर असर किया हो। इन मनुष्यों ने पेरिक्लीज़ के बनाए हुए अच्छे नियमों पर रियासत को चलाया होता। स्पार्टावालों ने अगले पांच वर्ष में एटिका पर तीन बार चढ़ाई की।

१८ पेरिक्लीज की मृत्यु—ईसामसीह से ४२९ वर्ष पूर्व पेरिक्लीज़ मर गया। उस की मृत्यु के कुछ पहिले से एथेंस वाले उसके विरुद्ध हो गए और अन्याय से उस पर एक भारी जुर्माना लगा दिया। किंतु फिर उन्हें पाश्चात्ताप हुआ। पेरिक्लीज़ पुनः रियासत का कर्ता धर्ता बना दिया गया। उस के मरने के उपरांत उस जैसा कोई मनुष्य राज्य में नहीं रहा। डेमेगागस (Demagogues) उठ खड़े हुए। इन लोगों को वास्तविक ज्ञान तो होता नहीं था, परंतु प्रजा के नेता हो बैठते थे और प्रभावशाली भाषण दे दे कर अपना कार्य साधन करते थे। पेरिक्लीज़ प्रजा की बातों का विरोध भी करता था और निडरपन से उनको कहने देता था यद्यपि उन का कहना ठीक भी हो। परंतु डेमेगागसों का हिसाब ही दूसरा था। वे प्रजा की कृपा पर ही निर्भर थे, तथा वैसी ही बात कहा करते थे जिन को वे समझते थे कि प्रजा को अच्छी लगेगी। इन डेमेगागस में क्लीयन नामक रंगसाज मुख्य था। अमीर लोग अपने लिये सभा समितियें खोल रखते थे, जिन के द्वारा वे रियासत की रास अपने हाथ में रखने का प्रयत्न करते थे, और डेमेगागस इन सभाओं के विरोधी मनुष्यों के स्वाभाविक नेताओं की भांति थे।

१९–प्लेटिया अवरोध (ईसामसीह से ४२७ वर्ष पूर्व तक)–यद्यपि पौज़ानियाज ने इस बात की शपथ कर ली थी कि प्लेटिया पर चढ़ाई नहीं की जायगी [पांचवां पाठ अ. ३०] तथापि एथेंस के साथ युद्ध आरंभ होने से तीसरे वर्ष स्पार्टा के राजा आर्किडेमस ने बड़ी सेना ले जा कर प्लेटिया का अवरोध किया, क्योंकि प्लेटिया थेबियों के बीओशिया की रियासतों*

पर अधिकार चलाने के प्रयत्न का विरोध करता रहता था और एथेंस से उस ने इस लिये संधि कर रक्खी थी कि जिस में थेविस द्वारा आक्रमण होने पर उसकी रक्षा होती रहे। उस समय किले में केवल ४०० सिपाही और ८० एथेनियन थे, परंतु उन्होंने ऐसी वीरता की कि आर्किडमस की यह आशा जाती रही कि मैं घेर घेरे प्लेटिया को ले लूंगा। अतः उसने नगर के चारों ओर दोहरी दीवाल बना दी कि जिस में नगर निवासी भूखों मर जायं। जब अवरोध को पड़े एक वर्ष हो गया और भोजन की कमी होने लगी तो कुछ मनुष्यों की सलाह हुई कि बाहर निकल कर स्पार्टा वालों को चीरते हुए निकल जायं। एक दिन रात में जब आंधी चल रही थी वे नगर के फाटक से चुपचाप बाहर निकले और सीढ़ियें साथ में लिये हुए स्पार्टनों की बनाई दीवाल तक बिना किसी से देखे हुए चले गए। सीढ़ियें लगा कर वे दीवाल पर चढ़ गए और दीवाल पर जितने संतरी थे एक साथ उन के सिर पर पहुंच कर उन का काम समाप्त कर दिया और स्पार्टा वालों के बीचोबीच हो कर निकल भागे। केवल एक मनुष्य पकड़ कर कैद कर लिया गया। इस वीरता के काम से किले के बचे हुए मनुष्य कुछ दिनों मुकाबला करते रहे किंतु अंत में खुराक चुक गई और उन्हें आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। स्पार्टा वालों ने थेविस निवासियों को प्रसन्न करने के हेतु उन सब को मार डाला और नगर को तहस नहस कर डाला।

२०—फारसियों की विजय—यूनान के पश्चिम में एथेंस के भी सहायक थे और पेलोपोनिस के भी थे। ईसामसीह से ४६२ वर्ष पहिले हेलटों की हड़ताल के उपरांत [पांचवां पाठ ८

देखिये), एथेंस वालों ने मसेनियां के निवासियों के एक दल को, जो स्पार्टा के बड़े कट्टर शत्रु थे, कोरिंथ की खाड़ी के किनारे नोपेक्टिस में बसा दिया था और नौपैक्टिस की बंदर-गाह के कारण एथेंस का एक जहाजी बेड़ा इस खाड़ी में रहता था और पश्चिम को हट कर अकारनेनिया एथेंस का सहायक था तथा अम्प्रेकिया स्पार्टा का। स्पार्टा वालों ने अकारनैनिया पर जल और स्थल दोनों मार्गों से चढ़ाई करने की तयारी की। स्थल द्वारा चढ़ाई निष्फल गई और नौपेक्टस के अथेनियन बेड़े के कप्तान फार्मियों ने पेलोपानिसस की जल सेना पर दो बहुत बढ़िया विजय पाई। पहिले जल युद्ध में फार्मियों ने २० जहाजों से ४७ पेलोपोनिसियन जहाजों पर जय पाई, दूसरे में पेलोपानिसियनों के ७७ जहाज थे और फार्मियों के वेही २० जहाज जो पहिले थे। फार्मियो बहुत अच्छा सरदार था, उस ने पीहली विजय जहाजों को तेजी से चक्कर दे कर पाई। एथेंस के जहाज भी एसे अच्छे और जहाजी लोग ऐसे शिक्षित थे कि वे ऐसे ऐसे काम कर सकते थे जिनका पेलोपेनिसस वालों को ध्यान भी नहीं हो सकता था। यह हाल देख कर दूसरी जल की लड़ाई में पेलोपानिसस वालों ने यह कोशिश की कि अथेंस के जहाजों को ढकेल कर किनारे के पास ले जायं जिसमें फार्मियो की योग्यता से कुछ न हो सके। पेलोपोनासियनों की यह युक्ति काम कर गई और २० जहाजों में नौ छिक कर जुदे ही गये, परंतु शेष ११ बंदर में चले गए और फिर एकाएक विजयी और पीछा करनेवाले पेलोपोनियन जहाजों की ओर मुड़ कर उन के प्रत्येक समूह को पराजित किया, और उन के जहाजों को पकड़ लिया और अपने नौ जहाजों को

जो समुद्र में हाथ से निकल गए थे, पुनः छीन लिया (ईसा मसीह से ४२९ वर्ष पहिले)।

२१—माइटिलीन का विद्रोह—ईसामसीह से ५२८ वर्ष पूर्व लेसवास और विशेषतः वहां के मुख्य स्थान माइटिलीन ने अथेंस का अधिकार हटाने के लिये विद्रोह किया। अथेंस वालों ने जल और स्थल दोनों मार्गों से माइटिलीन को घेर लिया। स्पार्टा वालों से सहायता भेजने में ढील हो गई और माइटिलीम को हार माननी पड़ी। क्लियन ने अथेनियनों को यह समझाया कि एक आज्ञा पत्र भेज देना चाहिये कि युवा पुरुष मार डाले जायं। दूसरे दिन उन्हें अपनी निर्दयता पर पछतावा हुआ और दूसरा आज्ञापत्र भेज दिया गया जो माइटिलीन वालों की रक्षा को ठीक समय पर पहुंचा। तब तक अथेनियनों ने लगभग एक सहस्र मनुष्य मरवा डाले थे।

२२—डेमास्थिनीज—नॉपैक्टस के मेसेनियनों के पड़ोस में इटेलियन लोग रहते थे और उन के शत्रु भी थे। सो उन्होंने एथेंस के एक सरदार डेमास्थिनीज़ को इन इटेलियनों के देश पर चढ़ाई करने को कहा। डेमास्थिनीज़ जो बड़ा साहसी और बहादुर था उस ने केवल इटेलिया ही जीतने की आशा नहीं बांधी वरन् यह सोचा कि पूरब को बढ़ता चला जाऊंगा और कोरिंथ की खाड़ी के उत्तर किनारे नॉपैक्टस और एटिका के मध्य के सब राज्यों को जीत लूंगा। परंतु इटेलिया की भूमि ऐसी ऊंची नीची थी कि उसमें सेना नहीं जा सकती थी और डेमास्थिनीज़ बहुत से मनुष्यों को हाथ से खो कर लौट आया। किंतु उसने शीघ्र ही इस अदूरदर्शिता का बदला चुका दिया क्योंकि जब स्पार्टा और अम्ब्रेकिया ने मिल कर अकार्नेनिया पर स्थल

द्वारा फिर चढ़ाई की तब डिमास्थिनीज ने एम्प्रेकिया वालों को यूनान की इतिहास विदित पराजयों में से एक बड़ी सर्वनाशिनी पराजय दी और स्पार्टनों को उस प्रान्त से युद्ध उठाने के लिये बाध्य किया (ईसा मसीह से ४२६ वर्ष पूर्व) ।

२३-स्फैक्टेरिया—इसके अनन्तर शीघ्र ही डिमास्थिनीज ने प्रदेश लूटने और हेलट लोगों को विद्रोह करने के लिये भड़काने के उद्देश्य से मेसेनिया के पश्चिमी तट वाले पथरीले और पाइलस नामक उभड़े हुए अन्तरीप पर अधिकार जमा लिया और वहां पर दुर्ग बना लिया (ई० म० से ४२४ वर्ष पूर्व) । इस का यह परिणाम हुआ कि स्पार्टनों ने पाइलस को घेरा और पासही के स्फैक्टेरिया नामक द्वीप पर कुछ सेना नियुक्त कर दी । परन्तु एक बड़ा जहाजी बेड़ा डिमास्थिनीज की सहायता को चला आया और उसने स्पार्टा के जहाजों को पीछे हटा कर किनारे पर कर दिया जिससे कि स्फैक्टेरिया वाली सेना को निकल भागने का कोई उपाय नहीं रह गया और वह बीच में फंस रही । इस सेना में बहुत से बड़े ऊंचे घराने के स्पार्टन थे । अब उनके बचने की कोई संभावना नहीं रह गई थी । इस बात ने स्पार्टा में ऐसी निराशा फैला दी कि यफर लोग शांति करने को राजी हो गए किन्तु क्लियन के कहने में आकर अथेन्स वालों ने अनुचित शर्तें ठहरानी चाहीं । इसके अनन्तर क्लियन को ही सेनापति बनाया गया । वह स्फैक्टेरिया के बन्दियों को अथेन्स में लाया यद्यपि यह सब कार्य डिमास्थिनीज ही का किया हुआ था । इस आत्मसमर्पण से स्पार्टावालों के यश को बड़ी ठेस पहुंची क्योंकि लोगों का यह विश्वास चला आता

था कि स्पार्टन सैनिक आत्मसमर्पण के बदले मृत्यु ही को स्वीकार करेंगे। कुछ ही समय पीछे निकियस की अध्यक्षता में अथेन्स वालों ने साइथीरा द्वीप को जीत लिया जोकि पेलोपोनिसस का अग्निकोण का सिरा है। इस को अधिकार में रखने से वे स्पार्टा के समुद्रतट को अपनी इच्छानुसार लूट सकते थे।

२४-कर्सीरा का मनुष्यसंहार—कर्सीरा में प्रजातन्त्र शासन था। वहां के अमीरों ने प्रजातन्त्रसत्ता को नष्ट करके अथेन्स से संधि तोड़नी चाही। उन्होंने सामान्य प्रजा के नेताओं को मार डाला और जहाजों के खड़े होने के डकों और तोपखानों को ले लिया। किन्तु प्रजावर्ग ने उन पर आक्रमण करके उनको हराया और सात दिन बराबर जनसंहार और प्रत्यपकार होता रहा। किसी प्रकार से पांच सौ अमीर निकल भागे और नगर के बाहर एक पहाड़ी को सुरक्षित करके पड़ाव डाल दिया। जनता ने वहां भी उनको घेरा और अथेन्स वाले जनता की सहायता कर रहे थे। तब उन लोगों ने इस ठहराव पर अन्त में आत्म-समर्पण कर दिया कि वे अथेन्स को दोष की जांच के लिये भेजे जायं। परन्तु ऐसा होने के बदले वे मार डाले गए। युद्ध की बदौलत यूनानी नगरों के भिन्न भिन्न दलों में जो परस्पर घृणा उत्पन्न हो गई थी उसका यह सब से बुरा दृष्टान्त है।

२५-विथ्रशिया और थ्रेस-ब्रैसिडास;-स्फैक्टेरिया में विजय पाने से अथेन्स वाले मिथ्याभिमान से भर गए

और अब उनको प्रधान भूमि पर पुनः उसी प्रकार का अधिकार जमाने की धुन लगी जैसा अधिकार कि उनका खीष्टाब्द ४५० से पूर्व से खीष्टाब्द से ४४० वर्ष पूर्व तक था। पेरिक्लीज तो पहिले ही इस अधिकार के लिये चेष्टा करने को मना कर गया था, किन्तु अथेनियनों ने अब विओशिया पर चढ़ाई कर ही डाली (ई० मसीह से ४२४ वर्ष पूर्व) और डेलियम पर बड़ी भारी हार भी खाई। उसी समय में स्पार्टा के एक सरदार ब्रेसिडास ने थ्रेस में गमन किया और ऐम्फिपालिस और अन्यान्य तटस्थ नगरों को अथेन्स के विरुद्ध विद्रोह करने को भड़काया। ब्रेसिडास सामान्य स्पार्टा के सैनिकों से कहीं अधिक बढ़ चढ़ कर था। उसमें स्पार्टनों का सा आलस्य या सुधार से भयभीत होने का अवगुण नहीं था। वह फुर्तीला और साहसी था। केवल यही नहीं उसमें विश्वासपात्र और प्रेमपात्र बन जाने का भी बड़ा गुण था। व्याख्यान देने की शक्ति और स्पार्टनों में नहीं थी पर ब्रेसिडास में वह शक्ति भी थी और उसके शब्दों और कार्यों ने मिलकर थ्रेस वालों को अथेन्स के विरुद्ध विद्रोह करने को भड़का ही दिया। डेलियम की पराजय और इन नगरों के हाथ से जाते रहने से युद्ध की गति का वह पासा अथेन्स वालों के विरुद्ध घूम पड़ा जो अभी तक उनके पक्ष में था। ऐम्फिपालिस पर पुनः अधिकार करने को क्लियन भेजा गया। वहां ब्रेसिडास और क्लियन का सामना हुआ जिसमें क्लियन और ब्रेसिडास दोनों मारे गये (ई० मसीह से ४२२ वर्ष पूर्व)।

२६–निकियस की संधि–क्लियन उस दल का नेता

था जो बड़े उत्साह से युद्ध के पक्ष में था। इसलिये क्लियन के मर जाने से शांति होना सहज हो गया। ईसा मसीह से ४२१ वर्ष पूर्व शांति हो गई और प्रत्येक ओर से यह निश्चित हुआ कि एक पक्ष दूसरे पक्ष के जीते हुए स्थानों और बन्दियों को लौटा दे। साथ ही में स्पार्टावालों ने अथेन्स के पास उन स्थानों को रहने दिया जो बिना भय दिलाये अपने आपही अथेन्स की अधीनता में चले गए थे। स्पार्टा की इस चाल से कोरिंथ तथा और दूसरी वे रियासतें बहुत भड़कीं और बिगड़ीं जिनके हाथ से ये स्थान निकल गए थे। उन्होंने संधि स्वीकार करने से नाहीं कर दी। पक्षान्तर में अथेन्स को ऐम्फिपालिस नहीं मिला। अतः यह सन्धि जिस के करने में अथेन्स के निकियस नामक सरदार ही का अधिक हाथ था, निकियस की संधि कहलाती है। इस युद्ध से स्पार्टा को कुछ भी लाभ नहीं हुआ और अथेन्स की रियासत से केवल ऐम्फिपालिस निकल गया। शेष कोई कमी उसमें नहीं हुई।

२७–ऐल्किवियाडीज़, मैण्टिनिया–उस दल का सरदार जो युद्ध चला कर नई जगहें जीतना चाहता था ऐल्किवियाडीज़ था। ऐल्किवियाडीज़ एक युवा अमीर था। वह बहुत साहसी और बुद्धिमान था किन्तु उसका एक मात्र उद्देश्य संसार में प्रसिद्धि पाने का था। सुन्दरता और बुद्धिमत्ता के कारण खुशामदें करके लोगों ने उसके स्वभाव को ऐसा बिगाड़ दिया था कि वह बिल्कुल अनियंत्रित बन गया था। यदि किसी बात के कर डालने को उसका मन होता तो वह कानून व्यवस्था का कुछ भी ध्यान न करके उस

को कर डालता था। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के अभिप्राय से ऐसी धृष्टता से झूठ बोलता और लोगों को धोखा देता था कि जिसका सहज में अनुमान नहीं हो सकता। परन्तु बुद्धिमत्ता के बल से उसने अथेन्सवालों को बहुत कुछ वश में कर रक्खा था और आगे जिन घटनाओं के घटने का वृत्तान्त आप पढ़ेंगे वे सब उसकी ही सलाह से हुई थीं। पेलोपोनिसस की कुछ रियासतें स्पार्टा से असंतुष्ट होने के कारण अपना एक भिन्न संगठन बना रही थीं। इसका मुखिया आर्गस था। ऐल्किबियाडीज ने अथेन्सवालों को इस आर्गस वाले संगठन में मिलने को प्रस्तुत कर दिया और अब अथेन्स पेलोपोनिसस वाली रियासतों में हस्तक्षेप करने लगा। स्पार्टा के साथ वाली संधि शीघ्र ही टूट गई और अथेन्सवाले आर्केडिया पर चढ़ाई करने के लिये आर्गसवालों के साथ हो गए। स्पार्टा के राजा ऐजिस ने मैंटिनिया में उनका सामना करके उन्हें बड़ी लड़ाई में हराया। इससे आर्गस का संगठन टूट गया और स्पार्टा का यश फिर से स्थापित हो गया (ईसा मसीह से ४१८ वर्ष पूर्व)।

२८-मेलास—अब इजियन द्वीपों में केवल मेलास नामक द्वीप ही शेष रह गया था जो कि अथेन्स के अधीन था। अथेन्सवालों ने बिना किसी स्वत्व के केवल मात्र यह बहाना करके मेलास को अधीनता स्वीकार करने को ललकारा कि मेलास का हमारे राष्ट्र में होना आवश्यक है। जब मेलासवालों ने इसे स्वीकार नहीं किया तब उन्होंने द्वीप को जीत लिया। उन्होंने पूरी अवस्था के लोगों को मार

डाला और स्त्रियों और बच्चों को दासों की भांति बेच डाला (ईसा मसीह से ४१८ वर्ष पूर्व) ।

२६–सिसिली पर चढ़ाई–अथेन्स वाले कुछ समय से सिसिली के यूनानी नगरों की बातों में हस्तक्षेप करने लग गए थे और ईसामसीह से ४१६ वर्ष पूर्व इगिस्टा नगर ने अथेन्सवालों से साइरेक्यूज़ के विरुद्ध पक्ष लेने की प्रार्थना की । एल्किबियाडीज़ ने अथेन्सवालों को सिसिली में नया राज्य स्थापित करने की आशा उत्पन्न की और निकियस इस प्रकार के निष्फल उद्योगों में हाथ डालने के विरुद्ध व्यर्थ ही कहता रहा । एक बड़ा जहाजी बेड़ा भेजना निश्चय हुआ और निकियस, एल्किबियाडीज और लेमेकस उसके सेनापति नियुक्त किए गए । पेरिक्लीज की मृत्यु के उपरान्त अथेन्स के नगर-वासियों में निकियस ही का सर्वोपरि सम्मान था । वह बड़ा धनाढ्य था तथापि बड़े शुद्ध हृदय से प्रजा का कार्य करता था । युद्ध चलाने में पेरिक्लीज़ की नीति का अवलम्बन वही सब से अधिक करता था और अदूरदर्शिता की सलाहों पर ध्यान नहीं देता था । वह बड़ा न्यायशील और धर्मात्मा था किन्तु उस समय के धर्म में बड़ी अज्ञानता भी हुई थी और हम आगे चल कर देखेंगे कि निकियस के धर्मात्मा होने से ही इस युद्ध में ऐसा बुरा परिणाम निकला ।

निकियस कई बार सेना का अधिकारी बन चुका था। वह बहादुर था और उधर युद्धों में सफलता भी प्राप्त करता आया था । किन्तु यद्यपि सामान्य रणों में उसने अच्छे हाथ दिखलाए थे तथापि वह इतने बड़े सेनापतित्व के योग्य

नहीं था जितना कि अब उसको सौंपा गया था । वह आवश्यकता से भी अधिक आगा पीछा करने वाला और फूंक फूंक कर पैर रखने वाला था और ऐसे समय को भी ढीलेपन में हाथ से निकाल देता था जिसका एक पल भी खोना हानिकर होता था तीसरा सेनाधिपति लेमेकस था किन्तु वह इतना निर्धन था कि उस की कोई सुनता ही नहीं था ।

३०–हर्मी का अंग भंग होना—अथेनियन प्रजातंत्र के रक्षक तथा अधिष्ठातृ देवी हर्मी की मूर्ति (कमर से ऊपर की मूर्त्ति) अथेंस की सब सड़कों पर रक्खी थी । युद्ध को जानेवाली सेना के कूंच करने से कुछ दिवस पूर्व एक दिन प्रातःकाल जागने पर लोगों ने इन सब मूर्त्तियों को अंगभंग पाया । इस से नगर भर में भीषण आतंक बैठ गया क्योंकि इस कार्य से केवल देवता का ही अपमान नहीं हुआ था वरन् प्रजातंत्र पर भी विपत्ति की आशंका थी। अन्य लोगों के साथ ही साथ इस अपराध का करनेवाला अल्किबियाडीज भी समझा गया । उसने लोगों से प्रार्थना की कि उसके दोषी या निर्दोष होने का निर्णय सेना के भेजने से पूर्व ही करा लिया जाय । किन्तु उसके विद्वेषियों ने इस बात के विचार को इस अभिप्राय से टलवा दिया कि जिसमें पीछे से उन्हें दोषारोपण करने का अवसर हाथ लगे ।

३१–धावा—ईसा मसीह से ४१५ वर्ष पूर्व अथेन्स से साइरेक्यूज के विरुद्ध १००० त्रिरमियों का एक बेड़ा चला। कर्सीरा में आकर उसको सहायकों की सेना मिली ।

अब सब बेड़ा १३४ त्रिरमियों और ५०० सामान्य जहाजों का हो गया, जिसमें कि पांच सहस्र लोग भली भांति से शस्त्र सज्जित थे । इनके अतिरिक्त न्यून सज्जित और गोफन चलाने वाले भी थे। लैमेकस की इच्छा थी कि एक साथ साइरेक्यूज पर चढ़ दौड़ा जाय जिस में कि वहां वाले आत्मरक्षा के लिये तैयार न हो सकें । किन्तु ऐसा करने के बदले सेनापति लोग सहायकों और मित्रों को सिसिली के नगरों में खोजने लगे । ये लोग तो इधर इस धंधे में जुटे हुए थे और उधर अल्किबियाडीज़ एक नये अपराध के उत्तर देने के लिये अथेन्स को बुला लिया गया । वह स्पार्टा को भाग गया और अथेन्स का बड़ा कट्टर शत्रु बन बैठा। पतझाड़ के मौसिम भर में कुछ भी नहीं किया गया और निकियस ने सेना को सिसिली के नैक्सास में जाड़ों भर हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहने दिया। इसी बीच में साइरेक्यूज वालों ने अपने दुर्गों को दृढ़ कर लिया और यूनान से सहायता मांगी । यह स्मरण करके कि थ्रेस में ब्रेसिडास ने क्या क्या किया था उन्होंने अपनी प्रार्थना में स्पार्टा वालों पर इस बात का सब से अधिक आग्रह किया था कि सेनापतित्व के लिये कोई स्पार्टा ही का वीर दिया जाय । अल्किबियाडीज़ स्पार्टा में था ही उसने अथेन्स से घृणा रखने के कारण स्पार्टा वालों को समझा बुझा कर इस बात पर राजी कर दिया कि वे साइरेक्यूज का कहना करें ।

६२–अवरोध—सिसिली भर में साइरेक्यूज सब से अधिक बड़ा और बलवान नगर था। वह समुद्र के तट पर

था और उसके पिछवाड़े पृथ्वी ऊंची थी । निकियस की ढील के कारण साइरेक्यूज़ वालों को अपने दुर्ग दृढ़ करने का अवसर मिल गया । इस से अब आक्रमण करके नगर को ले लेने की आशा नहीं रही थी । अब अथेन्स वालों के हाथ में केवल यही उपाय शेष था कि वे साइरेक्यूज़ वालों के पास स्थल तथा जल द्वारा रसद जाना बन्द कर दें जिस से नगर वासी भूखों मर जायं । इसलिये उन्होंने ईसामसीह से ४१४ वर्ष पूर्व बसंत ऋतु में स्थल पर नगर के चारों ओर दोहरी दीवार बनाना आरम्भ कर दिया और इस भांति से कार्य किया कि साइरेक्यूज़ के जाते रहने में संदेह नहीं रहा । साथ ही साथ जल की ओर से भी साइ-रेक्यूज़ पर धावा हो गया । किन्तु शीघ्र ही लेमेकस मारा गया और सेना संचालन के लिये निकियस अकेला रह गया । दीवार के पूर्ण होने से कुछ ही पूर्व गिलिप्पस नामक एक स्पार्टन सरदार कोई तीन सहस्र सेना लेकर जिसमें स्पार्टन और साइरेक्यूज़ वाले दोनों ही थे, आ पहुंचा और निकियस की बेपरवाही से साइरेक्यूज़ में उसका प्रवेश हो गया । इस घटना से सब बात उलट गई । गिलिप्पस ने सब से नई आशा भर दी । नगर के पीछे वाली ऊंची भूमि पर उसने अथेनियनों को पराजित किया और उसने एक ऐसी तिर्छी दीवार बनाई कि जब तक अथेन्सवाले उसको नहीं ले पाते तब तक उनकी दीवार पूर्ण नहीं हो सकती थी । अब अवरोध रोक दिया गया और अथेनियन सेना को अपनी बनाई हुई दीवार के पास में ही लगे रहना पड़ा । उनके जहाज मरम्मत के बिना सड़े जा रहे थे

और जहाजों को खेने वाले दास और अधीन राज्यों की प्रजा के लोग साथ छोड़ कर भागते जा रहे थे। साथ ही साइरेक्यूज वाले भी जो पहिले जलशक्ति में अथेनियनों की अपेक्षा अपने को निर्बल समझते थे अब बन्दरों में जहाजों को जलसेना से भरते जा रहे थे और समर का अभ्यास कर रहे थे। निकियस ने अथेन्स को और सेना भेजने को लिखा और सेनापतित्व से इस्तीफा दिया (ईसा-मसीह से ४१४ वर्ष पूर्व) क्योंकि वह बड़े दुःखद रोग से पीड़ित था पर अथेन्सवाले मूर्खता वश उसके कार्य करते रहने पर आग्रह करते रहे। ईसामसीह से ४१३ वर्ष पूर्व गिलिप्पस ने अथेन्सवालों पर समुद्र द्वारा चढ़ाई की। पहिली लड़ाई में उसकी हार हुई। इधर जहाजों में तो लड़ाई छिड़ रही थी और उधर गिलिप्पस की स्थलसेना ने समुद्रतट के अथेनियनों के जल सेना के डेरे और भाण्डार पर अधिकार कर लिया। दूसरी झोंक में अथेनियन बेड़े की बड़ी हार हुई और साइरेक्यूज वाले अब अथेन्स वालों के सर्वनाश को बचाने लगे।

३३--डिमास्थिनीज—अथेन्सवालों पर साइरेक्यूज वाले विजय पाकर निश्चिन्त ही थे कि उन्हें हैरानी में डालने वाला अथेन्स का और एक बेड़ा उनके बन्दर में घुस आया। अथेन्स वालों ने जी तोड़ परिश्रम किया था और ७५ और त्रिरमियें भेजी थीं जिनमें डिमास्थिनीज के आधिपत्य में एक और नई सेना थी। अथेन्स के वीरों में डिमास्थिनीज सबसे अधिक साहसी और दृढ़ था। डिमास्थिनीज ने एक साथही समझ लिया कि जब तक साइरेक्यूज वालों की आड़ी दीवार नहीं ली जायगी तब तक साइरेक्यूज लेना असम्भव है। सामने से

एक आक्रमण में अकृतकार्य रहने से उसने अपनी सेना को कुछ चक्कर दिलवा कर बिना किसी के जाने हुए ऊँची पृथ्वी पर चढ़ा दिया और गिलिप्पस पर अँधेरे में आक्रमण कर दिया। पहिले डिमास्थिनीज की जीत हुई किन्तु अँधेरे के कारण उसकी सेना में खलबली पड़ गई। ये एक दूसरे को मारने लगे और युद्ध का बड़ा नाशक फल हुआ।

३४-अथेन्सवालों का नाश—जब डिमास्थिनीज की दीवार छीन लेने की चेष्टा विफल हुई तब उसने जान लिया कि अथेन्स नहीं लिया जा सकता और उसने निकियस से आग्रह किया कि अब किसी बुराई में फस जाने से पूर्व हट कर चल देना ही उचित होगा। निकियस बहुत समय तक तो इन्कार ही करता रहा। फिर पीछे से वह राजी हो गया और दूसरे ही दिन प्रस्थान की आज्ञा दे डाली (ई० स० से ४१३ वर्ष पूर्व की २७ अगस्त को)। किन्तु उसी दिन रात्रि को चन्द्रग्रहण हुआ और ज्योतिषी लोगों ने ऐसे चिन्हों के विश्वासी निकियस से कह दिया कि एक मास तक सेना नहीं हटाई जानी चाहिये। इधर साइरेक्यूज वालों को भी निकियस के भागने के विचार का पता चल गया और उन लोगों ने ठानली कि अथेन्स वाले बच कर न जाने पावें। उन्होंने उस समस्त बन्दर को घेर लिया जहां पर कि अथेन्स वालों का बेड़ा था। इस से निकल भागने की केवल यही सूरत शेष रह गई कि वे शत्रु के बेड़े के जहाजों के बीच से रास्ता करके निकल जांय। जब पूरी तैयारी हो गई तब अथेन्स का बेड़ा बढ़ा और युद्ध आरम्भ हुआ। साइरेक्यूज के सब निवासी समुद्र के तट पर समर देखने को जुड़

आए और बन्दर की दूसरी ओर अथेन्स की स्थलसेना सजी खड़ी थी। यह समस्त भीड़ अपने अपने मित्रों और शत्रुओं की जय और पराजय को देखकर अवसर के अनुसार हर्ष किंवा शोक से चिल्लाती और शरीर के अंगों को हिलाती थी। यह युद्ध जीवन मृत्यु का संग्राम था। अथेन्सवाले जान पर खेलकर बड़ी वीरता से लड़े किन्तु सब व्यर्थ हुआ। उनकी हार हुई और वे ढकेले जाकर बन्दर के तट पर कर दिए गए। अब उनको केवल स्थल द्वारा किसी मित्र राज्य में भाग जाने का उपाय शेष रह गया। अपने मरे हुए और घायलों को छोड़ कर और स्वयम् घोर विपत्ति में फंस कर वे लोग, जिनकी संख्या ४0000 बताई जाती है, टापू के भीतर को भाग निकले। वे भूख और प्यास से मरते जा रहे थे और साइरेक्यूज वाले उनका पीछा करते और आक्रमण करते थे। इस भांति से छः दिन पीछे जो मरने या शत्रु से मिलने से बच रहे थे वे बन्दी कर लिए गए। साइरेक्यूज वालों के तमाशे के लक्ष्य बनने से बच जाने के लिये निकियस और डिमास्थिनीज ने विष खा लिया। शेष सब कैदी दास बना लिए गए। इस प्रकार इस बड़े बेड़े का दुखजनक अन्त हुआ। यूनान के किसी राज्य ने भी कभी इतना बड़ा बेड़ा लड़ने के लिये नहीं भेजा था।

३५ अथेन्स को भय—डेकेलिया;-सिसिली की चढ़ाई में सर्वनाश हो जाना एक ऐसी विपत्ति थी जिससे अधिक कभी किसी जाति पर नहीं पड़ी थी। यदि स्पार्टा वाले मुस्तैदी से काम करते तो वे अथेन्स को एक बार ही नष्ट

कर सकते थे किन्तु उन्होंने अवसर को हाथ से निकाल दिया तथा अथेन्स वाले विचित्र साहस से लड़ते रहे। सचमुच उन पर बड़ा संकट था। अल्किबियाडीज़ के कहने से स्पार्टा के राजा एजिस ने डिकेलिया नामक एक सुदृढ़ स्थान पर अधिकार कर लिया जो कि ऐटिका के मध्य में है। वहां पर स्पार्टा की सेना का एक अंश दुर्ग में स्थायी रूप से रहने लगा। यह देश में सब और लूट पाट करता था जिससे फसलें नहीं बोई जाती थीं। गाय बैलों का नाश कर दिया जाता था और दास स्पार्टा वालों के पास भाग गए तथा सड़कों का चलना बन्द हो गया। अथेन्स को खाने पीने के पदार्थों का आना भी केवल जहाज़ ही द्वारा संभव रह गया जो कि मुख्य रूप से यूबिया और कालेसागर के तटस्थ देशों से आते थे।

३७-स्पार्टा और टिसाफर्निस का मिलना—एशिया माइनर के मध्य के फारिसी प्रान्त के अधिपति टिसाफर्निस की अथेन्स राज्य को उलट देने की बड़ी प्रबल इच्छा थी क्योंकि अथेन्स ने अयोनिया को फारिस के अधीन नहीं होने दिया था। इसलिये उसने स्पार्टा वालों से मेल कर लिया और कहा कि तुमलोगों ने अयोनिया को जो सेना भेजी है उसका वेतन मैं दूंगा और स्पार्टा वाले भी नीचता से एशिया माइनर के समस्त यूनानी नगरों को फारिसवालों के हाथों जाने देने को राजी होगए। किन्तु अथेन्स ने अब नई जलसेना की रचना करली थी। इसलिये उन्होंने पेलोपोनीसस और

फारिस दोनों की इकट्ठी जलसेना को माइलेटस पर पराजित किया और यदि साइरेक्यूज से एक और बेड़ा न आ गया होता तो माइलेटस का भी अवरोध हो जाता।

३६-किआस का विद्रोह—अल्किबियाडीज ने स्पार्टा वालों को एक जहाजी बेड़ा बनाने और उसको एशिया भेज कर आयोनिया वालों को भड़काने की सलाह दी। वह स्वयं कुछ जहाज लेकर समुद्र पार करके विद्रोह का आरंभ कराने को चला गया था। किआस का शासन अमीरों के हाथ में था और इन लोगों ने अथेन्स की ऐसी सेवा की थी कि अथेन्स ने वहां की शासन-पद्धति के रूप को प्रजातन्त्र नहीं किया। किन्तु अब उन्होंने विद्रोह कर दिया (ई० म० से ४१३ वर्ष पूर्व)। यह अथेन्स को बड़े हानि की बात थी क्योंकि आयोनिया सम्बन्धी रियासतों में किआस बड़ा शक्तिमान था और उसके विद्रोही होने से और रियासतों के विद्रोही बन बैठने का बड़ा भय था। ईसामसीह से ४१२ वर्ष पूर्व माइलेटस और लेस्वास ने भी विद्रोह कर दिया। सेमास के अमीरों ने भी विद्रोह करने की तैयारी की किन्तु वहां की जनता अथेन्स के पक्ष में थी इस से वह अमीरों के विरुद्ध खड़ी हो गई और उसने दो सौ अमीर मार डाले और चार सौ को देश निकाला दे दिया। इस बात के होने के पीछे अथेन्स ने सेमास को अपने अधीन देश के बदले स्वाधीन और बराबर का मित्र कर दिया और अथेन्स की जल तथा स्थल सेना का प्रधान अड्डा सेमास ही हो गया।

३८-अल्किवियाडीज का स्पार्टा परित्याग—स्पार्टा वालों में अल्किवियाडीज़ के वैरी हो गए और जब वह कुछ काल के लिये एशियामाइनर में चला गया तो स्पार्टा से उसके मार डालने के लिये एक आज्ञा निकली। वह टिसाफर्निस को भाग गया और टिसाफर्निस और स्पार्टा के मेल को तुड़ाकर उसने अथेन्स के फिर से भले बन बैठने का संकल्प किया। उसने तनख़्वाह की दर पर दोनों का झगड़ा करा देने का दांव खेला और टिसाफर्निस को यह सुझा दिया कि फारिस के लिये सब से लाभदायक बात यह है कि वह स्वयं किसी को भी बिना सहायता दिए हुए स्पार्टा और अथेन्स को परस्पर जूझने और थक बैठने दे। इसीलिये टिसाफर्निस ने स्पार्टा वालों को महीनों तक हाथ पर हाथ रक्खे बैठाल रक्खा और सदा यही कहता रहा कि सहायता को अभी बेड़ा भेजता हूं। अल्किवियाडीज ने इधर अथेन्स की सेमास में पड़ी हुई सेना को एक झूठा सम्वाद भेज दिया कि वह अथेन्स को टिसाफर्निस द्वारा सहायता दिला सकता है यदि उसको स्वदेश को फिरने की अनुमति दे दी जाय। किन्तु उसने साथही में यह भी कहला भेजा कि प्रजातंत्र शासन रहते उसका लौटना न होगा इसलिये यदि अथेन्स फारिस की सहायता लेना चाहे तो शासन पद्धति को बदल ले और धनाढ्यसत्ता स्थापित करले (ई० स० ४१२ वर्ष पूर्व)।

३९-चारसौ,—सेमास वाली सेना में बहुत से ऐसे धनवान लोग थे जो अथेन्स में धनिकतंत्र का स्थापित हो

जाना और स्पार्टा के साथ संधि का होना चाहते थे। धनियों को युद्ध के व्यय के लिये बड़ा चन्दा देना होता था। महासभा और जूरी में बैठने के लिये लोगों को बुलाने में राजकोष समाप्त हो चुका था और निकियस तथा और दूसरे विचारशील लोगों की अनुमति के विरुद्ध सिसिली पर धावा करवा कर प्रजातंत्र वैसे भी बदनाम हो चुका था। इसलिये सेना के अधिकांश लोगों के प्रजातंत्रवादी रहने पर भी कुछ शक्तिमान और प्रभाव शाली लोग अल्किबियाडीज के परामर्श के अनुसार शासन पद्धति के बदलने को राजी हो गए। अथेन्स के धनी लोगों की मंडली को इस प्रयोजन के लिये छिपे छिपे कार्य करने की शिक्षा देने के लिये पिसेन्द्र नामक एक षड्यन्त्र-कारी भेजा गया। इन मंडलियों द्वारा प्रजातंत्र को उखाड़ने की चेष्टा कराने का चक्र रचा गया। जो लोग प्रजा-तंत्र के कट्टर पक्षपाती थे वे गुप्त रीति से मारवा डाले गए। शहर भर में दहल हो गई क्योंकि षड्यंत्र करने वालों के अतिरिक्त और किसी को भी यह पता नहीं था कि कौन षड्यन्त्र वाले हैं और कौन नहीं। अंत में कुछ जबर्दस्ती के पीछे महासभा को प्रजातंत्र और मजि-स्ट्रेटों को दूर कर देने को बाध्य होना पड़ा और रियासत का भार अमीरी दल के ४०० लोगों के हाथों सौंपना पड़ा। दिखावे के लिये पांच हजार लोगों की महा-सभा भी रही किन्तु भला वह ४०० मनुष्य उसकी बैठक क्यों कराते। उन लोगों ने अब अपने और बहुत से

शत्रुओं को भी मरवा डाला और स्पार्टा से संधि की बात चीत करने लगे।

४०-सेमास को भेजी हुई सेना—जब सेना ने सेमास में अथेन्स की घटनाएं सुनीं तो उन्हें साज़िश करने वालों पर बहुत क्रोध आया और उन्होंने शपथ की कि अथेन्स में सर्वसाधारणतंत्र रक्खेंगे। उन्होंने यह खुल्लम खुल्ला कहा कि जो लोग अथेन्स में थे उन्होंने प्रजासत्ता उखड़ जाने दी इस लिये अथेन्स के सच्चे निवासी हम ही हैं। उन्हों ने सर्वसाधारण की बड़ी पंचायत जोड़ी और मेजिस्ट्रेट निर्वाचित किए। प्रजापक्ष-वादी सेनानायकों ने अल्किबियाडीज से मित्रता करली और उसने उसी समय ४०० मुसाहबों से सम्बन्ध तोड़ लिया और सेना का सरदार बना दिया गया। अल्कि-बियाडीज ने अपने देश को बड़ी घोर हानि पहुंचाई। गिलिप्पस उसीकी बदौलत साइरेक्यूज़ भेजा गया; डेसेलिया में एजिस का दखल उसी की कृपा से हुआ; तथा साइरेक्यूज़ में विद्रोह भी उसी के कारण हुआ। परन्तु सिपाहियों को निश्चय था कि वह टिसाफर्निस की सहायता दिला सकता है और उसको इस लिये क्षमा कर दिया।

४१-चार सौ मुसाहब दूर किए गए। इन चार सौ मुसाहबों में परस्पर फूट पड़ गई। जो उन में नरम थे वे कहते थे कि ५००० मनुष्यों वाली पंचायत होने देनी चाहिये और कुछ उदारता करनी चाहिये और जो अधिक कट्टर थे वे किसी न किसी प्रकार अपने सब

अधिकार रखना चाहते थे और उन्हों ने स्पार्टा वालों से कहला भेजा था कि हम तुम को पिरियम में घुस आने देंगे। स्पार्टा वालों ने यह अवसर खो दिया और लोग ४०० मुसाहबों के शासन को अब सहन न कर सके। पुरानी शैली (Democracy) स्थापित कर दी गई अंतर यही रहा कि केवल वे मनुष्य ही पंचायत में वोट (सम्मति) दे सकते थे जिनके पास कुछ नियमित जायदाद होती थी और जूरी और पंचायत वालों का वेतन दूर कर दिया गया। एक नियमबद्ध मुकद्दमा चलाया गया और मुसाहबों के बहुत से नेता मार डाले गए। परन्तु लोगों ने बड़ी शांति और नर्मी से काम लिया और कर्सीरा या दूसरी रियासतों का सा अन्धाधुन्ध नहीं हुआ (ई० म० से ४११ वर्ष पूर्व)। इसी अवसर पर यूबिया वाले विद्रोह कर बैठे और स्पार्टा वालों से मिल गए। अथेन्स को इस से भारी ठेस लगी। एटिका में अन्न बोया नहीं जा सका था इस लिये अब वह केवल यूबिया से आने वाले अन्न ही से वंचित नहीं रह गया वरन् यूबिया और उस के बंदरों पर अधिकार कर लेने से अब स्पार्टा वाले अन्यान्य स्थानों से अन्न लाने वाले ऐटिका के जहाजों पर भी आक्रमण कर सकते थे।

४२-हेलेस्पान्त की अथेन्स वालों की विजयें- स्पार्टा वाले जो पहिले केवल स्थल द्वारा लड़ते थे अब जल में लड़ने वाले भी हो गये और एशिया माइनर के पास अथेन्स के जहाजी बेड़े से लड़ने को तैयार होने लगे। जब उन्होंने देखा कि टिसाफर्निस हम को

वास्तव में सहायता नहीं दिया चाहता है तो उन्होंने आयोनिया से हटा कर हेलेस्पन्त में अपना जहाजी बेड़ा खड़ा किया कि जिसमें एशिया माइनर के उत्तरीय भाग का सत्रप फर्नेविज़स सहायता करे और इस प्रान्त के नगरों को, जो अथेन्स से विरोध कर चुके थे, सहायता पहुंच सके। स्पार्टा के नौ विभाग का सेनापति मिंडेरास आशा करता था कि वास्परस तथा हेलेस्पान्त के पास के समुद्र पर हम अधिकार करलेंगे क्यों कि ऐसा करने से अथेन्स कालेसागर के किनारे के नगरों से छिन जायगा और इन्हीं पर अथेन्स अनाज के लिये निर्भर था। अथेन्स के सेमास वाले बेड़े ने मिंडेरास को उत्तर की ओर खदेड़ा और हेलेस्पान्त पर दो लड़ाइयें हुईं जिन में अथेन्स ही की जीत रही। ईसामसीह से ४१० वर्ष पूर्व फरवरी मास में अल्किबियाडीज़ की चतुरता से स्पार्टा का वह जहाजी बेड़ा जो सिज़िसस को घेरने वाला था अथेनियनों द्वारा घेर लिया गया। मिंडेरास जहाजों को भूमि पर खींच लाया और स्थल पर लड़ा। स्पार्टा की पूरी हार हुई; मिंडेरास मारा गया और पूरा बेड़ा हाथ से निकल गया। यह ऐसा धक्का पहुंचा कि उन्हों ने संधि करने को कहला भेजा; परन्तु अथेन्स वालों ने मूर्खता से नाहीं कर दी। इसके उपरांत दो वर्ष तक अल्किबियाडीज़ खूब अथेन्स की सेवा करता रहा और वास्परस के आस पास के विद्रोही नगर जीत लिए गए।

४३—लिसैंडर और काईरस। इजास पोटेमी— फारिस के राजा ने अथेन्स को पुनः शक्ति वाला होते

देख कर और यह जान कर कि यदि अथेन्स युद्ध से विजयी लौटा तो फारिस वाले आयोनिया नहीं पा सकेंगे अब वास्तव में स्पार्टा को सहायता देने की ठानी और अपने कनिष्ठ पुत्र काईरस को स्पार्टा की धन से सहायता करने को समुद्र के किनारे भेजा। लिसैंडर नामक स्पार्टा की जलसेना का नया सरदार अत्यन्त चतुर और व्यवस्थापक था। उसने काईरस से ऐसी गाढ़ी मित्रता करली कि उसने केवल सेना वालों को उतना ही वेतन नहीं दिया जितना कि कहा था, बल्कि उस से भी अधिक। और यह इस फारिस के दिये हुए वेतन ही का फल था कि अन्त में स्पार्टा ने अथेन्स को धर दाबा। युद्ध बराबर होता रहा और अथेन्स ने कई विजयें भी पाईं। अन्त में ईसामसीह से ४०५ वर्ष पूर्व लिसैंडर ने हेलेस्पान्ट में इजासपोटेमी पर अथेन्स के बेड़े पर एक साथ धावा कर दिया। अथेन्स वाले तैयार नहीं थे और उन के सब जहाज पकड़े गये।

४४-अथेन्स का पतन—जहाजी बेड़ा हाथ से निकल जाने पर अथेन्स वालों के पास अथेन्स के अतिरिक्त और कुछ न रहा। एशिया माइनर के नगरों ने एक एक कर के लिसैंडर की अधीनता स्वीकार करली केवल सेमास ने सिर नहीं झुकाया। ईसामसीह से ४०५ वर्ष पूर्व नवंबर मास में लिसैंडर ने पिरियस को अपने बेड़े से घेरा और स्पार्टा की सेना ने एजिस के सेनापतित्व में स्थल द्वारा अथेन्स को घेर लिया। अब बड़ी बड़ी दीवारें व्यर्थ थीं क्यों कि लिसैंडर ने समुद्र पर अधिकार

कर लिया था और भोजन की सामग्री लेकर जहाज पिरियस के पास हो कर नहीं निकल सकते थे। चार महीने बाद नगर दुर्भिक्ष से आधीनता स्वीकार करने को बाध्य हुआ (ई० म० से ४०४ वर्ष पूर्व मार्च मास में) संधि के ये नियम थे कि अथेन्स को सब राष्ट्र छोड़ना होगा, और पिरियस की लम्बी लम्बी भीतें खसा दी जायंगी। अथेन्स की चड़क भड़क का यह अन्त हुआ।

४५-तीस जालिम—लिसेण्डर ने अब बहुत जोशीले मुसाहबों को सर्वसाधारण तंत्र उखाड़ने में सहायता देना आरंभ किया और ३० मनुष्यों का शासन स्थापित हुआ। इन सब में क्रिटियस मुख्य था। इन तीस मनुष्यों ने जो दुष्टतायें की हैं वह यूनान के इतिहास भर में सब से बुरी हैं। उन्हों ने बिना जिज्ञासा के ही सैकड़ों नगरवासियों को मरवा डाला और इतनी दुष्टता निर्दयता और अंधेपन से काम किया कि वे पीछे से 'तीस जालिम' कहाने लगे। उनकी रक्षा के लिये अथेन्स में स्पार्टा की एक सेना रहा करती थी। परन्तु आठ महीने उपरान्त वे नगर निवासी जो निकाल दिए गए थे अथेन्स में आ गए। खूब लड़ाई हुई और अंत में स्पार्टा ने उन तीस व्यक्तियों की रक्षा करना बंद कर दिया। ईसामसीह से ४०३ वर्ष पूर्व बसंत ऋतु में प्रजासत्ता पुनः स्थापित हो गई। प्रजासत्ता ने कितनी ही मूर्खता भी क्यों न की हो, परन्तु इन ४०० अथवा तीस मनुष्यों की आलिगर्की शासन के जैसे दुष्ट कर्म उसने नहीं किए थे।

४६-नास्तिकता; सुकरात—इतने नगरों में लड़ाई होने से अमीरों और साधारण मनुष्यों में जो कट्टर विरोध और झगड़ा हो गया था उसके कारण मनुष्य अपने दल के स्वार्थ के सिवाय और सब बातें भूल गए। विरोधी दलों की घृणा के कारण मनुष्य राज्य के काम ही का ध्यान छोड़ बैठे। कानूनों, रीतियों और भलाइयों के बदले दल का स्वार्थ ही दिखाई देने लगा। इस कारण तथा और और कारणों से पढ़े लिखे यूनानियों का विश्वास अपने धर्म्म से और पुरानी अच्छी बुरी बातों की पहिचान से जाता रहा। लड़ाई होने से सब जगह उद्दण्डता फैल गई; मनुष्य समझने लगे कि जिस की लाठी उस की भैंस, और बहुत से मनुष्य तो इस बात की शिक्षा ही देते थे। इन बुरे दिनों में अथेन्स में सुकरात नामी एक मनुष्य हुआ जिस के सत्य और भलाई के विषय में ऐसे विचार थे कि जैसे उससे पहिले किसी यूनानी के नहीं थे। वह कहता था कि किसी को हानि पहुंचाने से हानि सहना उत्तम है और देवता चाहते हैं कि मनुष्य बल शक्ति और त्योहार आदि की रसमें बनाने के बदले वे औरों की भलाई करके हमारा सन्मान करें। वह मनुष्यों को प्रश्नोत्तर की भांति व्याख्यान देता था और दिखा देता था कि वे लोग कितने अनजान थे। मनुष्य उसके कथन का और ही अर्थ लगाते थे और उस पर "मनुष्यों का देवताओं से विश्वास हटाने" का अभियोग लगा और उसे प्राणदण्ड दिया गया। जब वह बन्दीगृह में था

तो उसको भाग जाने का अवसर था किन्तु वह भागा नहीं । सुकरात का सत्य के हेतु मरना यूनान के इतिहास में नई बात थी । अपने देश के लिये वीरता से बहुत से मनुष्य मरे, परंतु सुकरात शहीद या धर्म फैलाने वाले की भांति मरा था । जो मनुष्य उसको जानते थे उनके चित्त पर उसके जीवन तथा मरण दोनों का प्रभाव पड़ा, और उस समय से मनुष्य सत्यमार्ग की खोज में अपना जीवन व्यतीत करने लगे ।

छठा पाठ ।

स्पार्टा, थेबिस, मक़दुनिया ।

१- स्पार्टा का राज्य—अथेन्स के अधीन जितनी रियासतें थीं अब उन सब पर स्पार्टा की हुकूमत हो गई । अब लिसैण्डर नगरों में घूम फिर कर दस कम नगर निवासियों और एक स्पार्टा के हाकिम के शासन की आलिगर्की पद्धति को, जो स्पार्टा को अच्छी लगती थी, स्थापित करने लगा । यह स्पार्टा का हाकिम 'हार्मोस्ट' या प्रबन्ध करनेवाला कहाजाता था । स्पार्टा के हार्मोस्टों का शासन अथेन्सवालों से अधिक जुल्म से भरा होता था और इस कारण यूनान की सब रियासतें स्पार्टा से घृणा करने लगीं । स्पार्टा के मुख्य मुख्य मनुष्य बहुत धनवान हो गए और स्पार्टा के हाल चाल में बड़ा अन्तर हो गया (दूसरा पाठ ४ देखिए) । इस समय स्पार्टा के थोड़े से नगर निवासी बड़े प्रभावशाली और

धनाढ्य थे और शेष प्रजा दिन दिन निर्धन होती जाती थी और असन्तोष फैल रहा था ।

२–दस सहस्र का युद्ध से भागना–(ई० स० से ४०१ वर्ष पूर्व)–आर्टा जरक्सिस उस काइरस का भाई जिसने लिसंडर को सहायता दी थी अपने बाप की गद्दी पर बैठा । काइरस ने सोचा कि इसके बदले फारिस की गद्दी पर मैं बैठूं और दस सहस्र यूनानियों को किराये करके उनके साथ फारिस राष्ट्र के भीतर घुसा । बाबुल के पास सिनैक्सा पर एक युद्ध हुआ और साइरस काम आया । शत्रु के राज्य के केन्द्र में होकर समुद्र के किनारे की ओर यूनानियों को आना पड़ा । उनका लौटना दस सहस्र का भागना कहाता है और उनके सेनापति ज़ेनाफन ने इस पलायन का इतिहास लिखा था जो अब भी वर्त्तमान है । उनके लौट आने से यूनानराज्य की कमज़ोरी ज्ञात होती है क्योंकि यदि वहां के राजा की सेना किसी काम की होती तो इतने मुट्ठी भर यूनानियों को इतनी लम्बी राह में उसने नष्ट कर दिया होता ।

३–स्पार्टा का फारिस से लड़ना–स्पार्टावालों को एशिया में फारिस पर चढ़ाई करने को सेना देने की लज्जा हुई और अब उन्होंने फारिस वाले एशिमाइनर के हाकिम पर लड़ाई बोल दी (ई० स० से ३९८ वर्ष पूर्व) यूनानियों के राजा 'एजिसीलाउस को कुछ सफलता हुई; और फिर बड़ी सेना के साथ फारिस पर चढ़ाई करने की तैयारी होने लगी । फर्नाबैजस ने (पांचवां पाठ–४२–) फेने

शिया का एक बेड़ा सजवाया और अथेन्स के जहाजी सरदार कानन को सेनापति बनाया। रोडेज के पास नाइडस में कानन को स्पार्टा का बेड़ा मिला, जिसको उसने पूर्णतया हराया (ई० म० से ३९४ वर्ष पूर्व)। इसका यह फल हुआ कि एशिया माइनर के नगर स्पार्टा के हाथ से निकल गए, क्योंकि समुद्र में चलती होने ही से उसका उन पर बश चल जाता था। स्पार्टा के हार्मोष्ट (हाकिम) निकाल दिए गए और समुद्र उतर कर कानन ने शहरपनाह सुधार ली और पिरियस की लम्बी दीवारें बना लीं।

४–स्पार्टा का यूनानी रियासतों से लड़ना– फ़ारिसवालों ने भी यूनानी रियासतों को स्पार्टा से लड़ जाने के लिये भड़काया। थेबिस जो अथेन्स का कट्टर शत्रु था, इस समय स्पार्टा के विरुद्ध अथेन्स से जा मिला कोरिंथ और आर्गस भी इन में मिल गए। स्पार्टावालों को अपनी रक्षा के लिये अपने राजा एजिसीलाउस और सेना को एशिया से वापस बुलाना पड़ा। कोरिंथ की हद्द (सीमा) में स्पार्टा और उसके विरुद्ध जो रियासतें मिली थीं उनमें कुछ काल तक युद्ध होता रहा और उसी समय अथेन्स ने हेलेस्पन्त को एक बेड़ा भेज दिया जिसमें अपनी जलशक्ति पुनः स्थापित कर दे।

५–अण्टेल्किडास की सन्धि (ई० म० से ८७ वर्ष पूर्व)–स्पार्टावालों को फ़ारिस के साथ मैत्री करना आवश्यकीय जान पड़ा। उन्होंने एक लज्जाजनक सन्धि करली

जो अंटैल्किडास की सन्धि कहलाती है। इसके द्वारा एशिया के नगर फ़ारिस को दे दिए गए और फ़ारिस के राजा को यह अधिकार हो गया कि वह यूनानियों पर हुकुम चलावे, एक दूसरे में संधि करावे और संधि पत्र के नियम नियत करदे—जैसे कि वह उनका स्वामी और वे उसकी प्रजा हों। यह स्पार्टा और एथेन्स के परस्पर के विरोध, और दोनों का फ़ारिस से सहायता लेने का फल हुआ। सब यूनानी रियासतों ने यह संधि स्वीकार कर ली। थेबीस के आधीन जो बोशिया के नगरों की गोष्ठी थी वह टूट गई और उन सब में स्पार्टा को प्यारी आलिगर्की स्थापित हो गई; और किसी किसी में तो स्पार्टा की थोड़ी थोड़ी सेना भी रहने लगी।

४—स्पार्टा और थेबीस—थेबीस में एक ऐसा दल था जो स्पार्टा का पक्षपाती था। जब बोशिया में स्पार्टा की एक सेना जा रही थी, तो उस दल ने दगाबाजी से थेबीस का कैड्मिया नाम का क़िला उनको सौंप दिया और पन्द्रह सौ लैसिडेमोनियन सिपाही वहां रख दिए गए (ई० स० से ३८२ वर्ष पूर्व)। तीन वर्ष तक स्पार्टा वाले थेबीस के मालिक बने रहे, परन्तु ईसा मसीह से ३७९ वर्ष पूर्व कुछ स्पार्टनों ने उनके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और इस साजिश का मुखिया पेलापिदास था। स्पार्टा की सेना के सरदार मार डाले गए और कैड्मिया पुनः थेबीस के हाथ आगया। इससे स्पार्टा का बल बहुत घट गया और उसके शत्रुओं का साहस घट गया।

७-अथेन्स की नई समिति—अथेन्सवाले ईजियन सागर के ७४ नगरों की उसी भांति की समिति स्थापन करने में सफल हुए जैसी कि उनकी डेलास की समिति पहिले थी। इन नगरों की जैसी शासन-पद्धतियें पहिले थीं वैसीही अब रहीं और वह चन्दा जो उन्हें देना होता था उसका नाम बदल दिया गया कि जिस में यह समिति पुनः स्थापित अथेन्स के राष्ट्र की भांति न समझी जाय। थेबीस भी इस गोष्ठी में था और स्पार्टा से जल तथा स्थल द्वारा लड़ाई होती रही। थेबीस वालों का यह अभिप्राय था कि स्पार्टा प्रवासी बीशिया के उन उन स्थानों से निकाल दिए जांय जहां उनकी सेना नियुक्त थी और बीशिया की गोष्ठी स्थापित होजाय और थेबीस उस गोष्ठी का मुखिया रहे। ईसामसीह के ३७४ वर्ष पूर्व के लगभग यह कार्य भी सिद्ध होगया। वह गवर्नमेंट जो स्पार्टा को पसन्द थी उलट दी गई, स्पार्टा की सेना निकाल दीगई और बीशिया की गोष्ठी स्थापित होगई। अब अथेन्स और थेबीस एक दूसरे से डाह करने लगे और ईसामसीह से ३७१ वर्ष पूर्व अथेन्स ने स्पार्टा से मेल कर लिया और थेबीस को लड़ने के लिये अकेला छोड़ दिया।

८-इपैमिनंदास-ल्यूक्ता—स्पार्टावालों ने तुरन्त बीशिया पर चढ़ाई की परन्तु थेबीस की पैदल सेना यूनान भर में सब से बढ़ कर हो गई थी और उनका सेनापति इपैमिनन्दास उस समय का सब से बढ़ कर सरदार था। स्पार्टा की सेना इपैमिनन्दास को ल्यूक्ता में मिली और

उसने इस सेना को ऐसा हराया कि सारा यूनान यह समझने लगा कि स्पार्टा की शक्ति की इति श्री हो चुकी है। परन्तु इपैमिनन्डास को पेलोपोनिसस के बाहर स्पार्टा का मानभंग करके सतोष नहीं हुआ। पेलोपोनिसस ही में उसकी शक्ति विध्वंस करने तथा शत्रुओं से उसे दिखाने को उसने आर्केडिया को मिलाने का विचार किया जिस में बहुत दिनों से बहुत से भिन्न भिन्न और सम्बन्ध रहित नगर चले आते थे। उसने मेसेनिया को भी स्वतंत्र करने की सोची जो कि तीन सौ साल से स्पार्टा के आधीन थी। क्योंकि अर्केडिया के नगर एक दूसरे से इतनी डाह रखते थे कि एक दूसरे को अपना नेता नहीं देख सकता था। अतः इपैमिनन्डास ने एक नया नगर बसाया और उसका नाम मिजालोपालिस (बड़ा नगर) रक्खा। और और रियासतों के प्रतिनिधि वहां जुड़ते थे और 'मेसेनी' नामक एक नया नगर मेसेनिया का केन्द्र होने को बनाया गया (ई० म० से ३६९ वर्ष पूर्व)। इपैमिनन्डास ने यूनान की दशा को बिल्कुल बदल दिया। उसने स्पार्टा को नीचा दिखाया, जोकि सैकड़ों वर्ष से यूनान के एक बड़े भाग का नेता चला आया था, उसे एक साधारण रियासत की भांति बना दिया और कुछ काल के लिये थेब्रीस को चढ़ा दिया। यदि हम उसके किए हुए वास्तविक परिवर्तनों की ओर दृष्टिपात करें तो थेमिस्टाक्लिस को छोड़कर इपैमिनन्डास को यूनानी राजनीतिज्ञों में सब से बड़ा मानना होगा। परन्तु थेमिस्टाक्लिस का काम टिकाऊ था और इपैमिनन्डास का चलताऊ।

९–मैंटिनिया, इपैमिनन्दास की मृत्यु—अर्केडिया की नई गोष्ठी में शीघ्रही फूट फैल गई। इस गोष्ठी का कुछ भाग, जिसमें मैंटिनिया मुख्य था, स्पार्टा की ओर था और शेष थेबीस के पक्ष में। ईसामसीह से ३६२ वर्ष पूर्व स्पार्टा ने अर्केडिया में एक सेना भेजी; इपैमिनन्दास ने इस सेना का सामना किया और मैंटिनिया के पास एक युद्ध हुआ। इस में थेबीस की जीत हुई परन्तु इपैमिनन्दास मारा गया। वह इपैमिनन्दास ही था जिसने थेबीस को बहुत शक्तिशाली बना दिया था। थेबीस में उसके समान अब कोई नहीं रहा था और उसकी शक्ति जाती रही।

१०–मकदुनिया—यूनान की रियासतों ने एक दूसरे से लड़ कर अपनी शक्ति गंवा दी थी, और अब वे मकदुनिया के आधीन होने ही वाली थीं, जिसका अभी तक यूनान के इतिहास में हाल भी नहीं आया है। मकदुनिया वाले यूनानी नहीं माने जाते थे। संभवतः वे मिली हुई यूनानी और इलिरियन जाति के थे। परन्तु केवल इसी कारण से वे यूनानी न गिने जाते हों ऐसा नहीं था, क्योंकि बहुत सी कलोनियों के रहने वाले, जो यूनानी कलोनियें कहाती थीं मिली हुई जाति के थे। वरन् उनके यूनानी न समझे जाने का यह कारण था कि वे यूनानियों की भांति नहीं रहते थे वे प्रायः नगरों में नहीं रहते थे बल्कि गांवों में रहते थे और यूनानियों की बड़ी पहिचान यह थी कि वे छोटी रियासत के होते थे जहां के सब निवासी मिलकर राज्य का कारबार करते थे। परन्तु मक-

दुनिया एक देश होने पर भी एकही राजा के राज्य में थी। उनके यहां पढ़ाई लिखाई या कला कौशल इत्यादि कुछ नहीं थे। वे अपने जीवन को कृषि, मृगया और साधारण गंवारू जीवन में व्यतीत करते थे। अतः यूनानियों और मकदुनिया वालों की गवर्नमेंट ही केवल भिन्न प्रकार की नहीं थीं वरन् पढ़े लिखे यूनानी को एक मकदुनिया निवासी ऐसा गंवार जान पड़ता था कि वह उसको यूनानी स्वीकार ही नहीं कर सकता था। परन्तु मक़दुनिया के राजा यूनानी माने जाते थे और वे ओलिम्पिया के खेलों में भाग ले सकते थे। बहुत दिनों से अपने और अपने दरबार को वे भर सक यूनानियों की भांति बनाने का प्रयत्न करते थे। आर्किलास ने जो ईसामसीह से लगभग ४०० वर्ष पूर्व मकदुनिया का राजा था, मकदुनिया में यूनानी कवि और कारीगर बुलाए थे। उसने नगर और सड़कें भी बनवाई थीं कि जिसमें प्रजा अधिक शांतिमय और सुखी हो जाय। सो जब यूनानी रियासतें परस्पर लड़ते लड़ते शिथिल होगई थीं तो ठीक उसी समय से मकदुनिया अधिक शक्ति वाला होने लगा था। प्रजा परिश्रमी, बहादुर और आज्ञानुकूल चलने वाली थी। अब ऐसा हुआ कि जब इपेमिनन्दास की मृत्यु से थेब्रीस बिना किसी नेता के रह गया तो मकदुनिया में फिलिप नामक राजा शासन करता था, जो उन दिनों के सब यूनानियों से बढ़कर था। युवावस्था में फिलिप तीन वर्ष तक थेब्रीस में रह चुका था और उसने इपेमिनन्दास से सब से अच्छी सेना का बनाना, तथा अपने देश को सर्वोपरि शक्तिमान बनाना और शत्रु को

निर्बल करना दोनों सीख लिया था। उसने नियमबद्ध सेना बनाई, जैसी किसी भी यूनानी रियासत में नहीं थी; और स्वयं अपना राज्य बढ़ाने और यूनान का मुखिया और नेता बनने में लग गया।

११-ओलिंथस—फिलिप के राष्ट्र और समुद्र के मध्य में चाल्किडाइस नामक जिला था, जिस में कई यूनानी नगर थे। इन नगरों में एक का नाम ओलिंथस था। यह बहुत शक्ति वाला हो गया था और इनसे आस पास के नगरों की एक समिति का अपने आप को मुखिया बना लिया था। यह समिति ओलिंथ की समिति कहलाती थी। इस से आगे बढ़ कर पूर्व में ऐम्फिपोलिस नाम का विख्यात नगर था जो पेलो-पोनिसस की लड़ाई में अथेन्स से निकल गया था (पांचवां पाठ—२५) और फिर उनके हाथ तब से नहीं आया था। परंतु यहां के समुद्र तट के और स्थान अब भी अथेन्स ही के हाथ में थे और इस कारण से फिलिप की कार्रवाई में अथेन्स का पहिले ही से सम्बन्ध था। फिलिप ने इस बहाने अथेन्स से मित्रता करली कि हम तुमको ऐम्फिपोलिस जीत देंगे; परंतु जब उस को जीत लिया तो अथेन्स को न देकर उसे अपने अधिकार में रक्खा और फिर ओलिंथस वालों को एक नगर देकर इस लिये अपना मित्र बना लिया कि जिस में अथेन्स और ओलिंथस उसके विरुद्ध न मिल जायें (ई० म० से ३५७ वर्ष पूर्व)। तदुपरांत स्ट्रोमान नदी उतर कर उसने पश्चिमी थ्रेस को जीत लिया, जहां बहुत सी सोने की खानें थीं; और वहां फिलिप्पी नामक नगर बसाया।

१२-पवित्र युद्ध—डेल्फी के मन्दिर के सम्बन्ध में एक युद्ध हो रहा था, जिसके कारण फिलिप को मुख्य यूनान की बातों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला। ल्यूक्ट्रा के युद्ध के उपरांत थेबीस ने फोकिस को जीत लिया था, परंतु फोकिस वाले जानदार मनुष्य थे और उन्हों ने फोकिस के शासन को उखाड़ फेंका। तब थेबीस ने पड़ोसियों की पंचायत बैठाई कि जिस में वह फोकिस के विरुद्ध लड़ें और क्रारहा (दूसरा पाठ—१३—) के मैदान को जोतने का दंड उसे दें। यह बात देख कर फोकिस वालों ने डेल्फी के मन्दिर ही को ले लिया (ई० म० से ३५५ वर्ष पूर्व) और उस के धन से वे सेना एकत्र करने योग्य हो गए, जिससे कि वे थेबीस और लाक्रिस के विरुद्ध लड़ते रहे। अथेन्स और स्पार्टा ने फोकिस की सहायता की। थिसिली के कई टाइरेण्टों ने भी फोकिस ही का पक्ष लिया। किन्तु इस के विरुद्ध थिसिली के अमीरों ने फिलिप की सहायता मांगी। थिसिली में फोकिस वालों और फिलिप में बड़ी लड़ाई हुई। फिलिप की जय हुई और वह थिसिली भर का मालिक बन बैठा (ई० म० से ३५२ वर्ष पूर्व)। तब उसने फोकिस के जीतने का विचार किया और जब वह थर्मापाईली पहुंचा तो वहां उस को एक मजबूत यूनानी सेना मिली और वह लौट आया।

१३-डेमास्थिनीज—अथेन्स पुनः ईजियन सागर के द्वीपों की समिति का नेता बन गया और यदि वह इस समय वीरता और चतुरता से काम लेता तो उसने फिलिप की बढ़वार रोक दी होती, परंतु अब वहां वालों की पुरानी जीवट जाती रही थीं और वे केवल दिखावे और आनंद उड़ाने की चिन्ता

करते थे। धनाढ्य मनुष्य राज्य के हित के लिये कुछ भी व्यय करने में हिचकते थे और कर भी देना नहीं चाहते थे। प्राय: सबही अथेन्स निवासी, जिनके, पूर्वज सब जगह जाने को उद्यत रहते थे और अथेन्स के हित के लिये सब काम करते थे, सेना के काम को कायरता वश इतना नापसंद करते थे कि ऐसे सिपाहियों को नौकर रखना आवश्यक हुआ जो कि बिलकुल अथेन्स से बाहर के थे। ईसा मसीह से ३५८ वर्ष पूर्व अथेन्स और उसकी सहायक रियासतों के बीच लड़ाई हो पड़ी। इसमें अथेन्स की हार हुई और बड़े बड़े नगर उसके हाथ से निकल कर स्वाधीन हो गए। केवल छोटे छोटे नगर उसकी समिति में रह गए। परंतु अथेन्स में डिमास्थनीज़ नामक एक ऐसा सुभाषक मनुष्य था जो कि अथेन्स के महत्व के दिनों में होने के योग्य था—डिमास्थिनीज ने देखा कि फिलिप यूनान का स्वामी बन बैठना चाहता है, और यद्यपि बहुत से मनुष्यों का विचार था कि फिलिप से मित्रता रक्खी जाय, तथापि डिमास्थिनीज को यह निश्चय था कि यदि फिलिप न रोका जायगा तो अथेन्स की स्वतंत्रता सदा के लिये जाती रहे गी। उसने अथेन्स वालों को विपत्ति से होशियार करने का प्रयत्न किया और भड़का कर उन में पूर्वजों का सा साहस उत्पन्न करने की चेष्टा की जिस से वे तुरंत दृढ़ता से काम करने लगें, और चुपचाप बैठे हुए जो कुछ हो उसे केवल देखते न रहें। डिमा-स्थिनीज की शक्ति उस के उत्तम व्याख्यान देने ही में थी, और वह यूनानी मात्र में सर्वोच्च वक्ता था। फिलिप द्वारा थिसिली जीते जाने ही पर डिमास्थिनीज ने फिलिप के विरुद्ध पहिला व्याख्यान दिया था जो कि पहिला फ़िलिप्पिक कहाता है (ई० म० से ३५२ वर्ष पूर्व)।

१४-फिलिप का ओलिंथस को जीतना— थिसिली के जीते जाने पर ओलिंथस ने देखा कि अब हमपर चढ़ाई होगी अत एव अथेन्स से सन्धि की बात चीत उठाया। डिमास्थिनीज ने भी अथेन्स वालों पर ज़ोर डाला कि तुम लोग मेल कर लो। अस्तु मेल हुआ और युद्ध प्रारंभ किया गया। परंतु अथेन्स ने ओलिंथस को इतनी थोड़ी सहायता दी कि फिलिप ने एक एक करके ओलिंथस के मेल के सब नगर ले लिये और अन्त में ओलिंथस को भी ले लिया (ईसामसीह से ३४८ वर्ष पूर्व)। कहा जाता है कि फिलिप ने पूर्णतया तीस नगर नष्ट कर दिये और जितने ओलिन्थस निवासी उसके हाथ लगे उन सब को दासों की भांति बेंच दिया। इस प्रकार से सब चिल्किडाइस फिलिप के आधीन हो गया।

१५-फिलिप का पवित्र युद्ध को समाप्त करना— पवित्र युद्ध अभी तक चला ही जा रहा था। फिलिप ने नीति बल से फोकिस को छोड़ कर शेष सब रियासतों से मेल कर लिया, और इस भांति जब उस ने फोकिस वालों को सब प्रकार की सहायता से वंचित कर दिया तो उसने उसपर भी चढ़ाई कर उसे जीत लिया। उसने वहां वालों का ऐसा नाश किया और उनपर ऐसी विपत्ति डाली जैसी कि यूनानियों ने कभी नहीं देखी थी। उसने डेल्फी को छीन लिया और उसके प्रबंधकर्ताओं को सौंपा और पड़ोसियों की पंचायत बैठाई। इस पंचायत ने निश्चय कर दिया कि फोकियन नगर नष्ट कर दिये जांय और वे लोग केवल गांव में रहें। इस पंचायत में पहिले जितने फोकियनों को वोट (सम्मति) देने का अधिकार

था उतनी ही वोटों का अधिकार फिलिप को दिया गया और वह डेल्फी के पिथियन खेलों का प्रधान बनाया गया। इस भांति फिलिप ने अपने लिये पड़ोसियों की पञ्चायत (Amphictionic Council) से अपने लिये एपालो देवता का (पहिला पाठ—१४—देखिये) रक्षक होना स्वीकार करा लिया और अब उसको यह अधिकार हो गया कि जब कभी वह देवता या मन्दिर को हानि पहुंचती देखता तो यूनान की बातों में हस्तक्षेप कर सकता था।

१६—**पेलोपोनिसस**—पेलोपोनिसस की अधिकांश रियासतों में ऐसे दल थे जो एक दूसरे से शत्रुता रखते थे। फिलिप ने इस से भी अपना काम निकाला और जहां जहां हो सका वहां वहां के एक एक दल को अपनी ओर फोड़ लिया। विशेषतः उसने इपैमिनंडास की बनाई हुई रियासतों से मेल किया क्योंकि यह स्पार्टा से डरकर विदेशियों की शरण में आना चाहती थीं। फिलिप की तर्कीबों की जड़ काटने के लिए डेमास्थिनीज अथेन्स के एक एलची के साथ पेलोपोनिसस की उन रियासतों को स्वयं गया जो फिलिप से मिल गई थीं और उनको यह समझाने का प्रयत्न किया कि वे यूनान भर के शत्रु से मिल रही थीं। इस यात्रा का कुछ फल नहीं हुआ, परंतु डेमास्थिनीज की सूचना स्पष्ट भांति से सबको विदित हो गई। उसने कहा कि "फिलिप सब यूनान भर का एकसा शत्रु है। वह राजा है और यदि विजयी हुआ तो यूनानियों को अपनी प्रजा बना लेगा। अतः यूनानियों को आपस का झगड़ा मिटा उस स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिये जो उनके जन्म से ही रही है तथा

एका कर इस भांति रक्षा करनी चाहिये जिस में वे उस ज़ालिम के साथ न लगें जो उन सबको दास बनाना चाहता है"। अस्तु डेमास्थिनीज केवल अथेन्स ही के लिये नहीं वरन् यूनान भर के लिये लड़ रहा था।

१७–अथेन्स और बिज़ैंशियम–पहिले तो अथेन्स वालों ने डेमास्थिनीज़ की बात सुनी अनसुनी करदी, परंतु ज्यों ज्यों समय बीतता गया और उसकी फिलिप सम्बन्धी बातें सच्ची निकलती गई और लोगों को विदित हुआ कि उसने विजय करना ठान लिया है त्यों त्यों उसके पास अधिक मनुष्य उसके मित्र होने लगे। अंत में अथेन्स ने मुस्तैदी से काम प्रारंभ किया। पहिला पवित्र युद्ध समाप्त करने पर फिलिप ने थ्रेस के पूर्वीय भाग को जीतना आरंभ किया। अभी तक अथेन्स से उसकी लड़ाई नहीं हुई थी परंतु थ्रेस के तट पर अथेन्स के एक सरदार और मक़दूनिया की सेना में छिड़ गई थी। फिलिप ने इस बात की शिकायत अथेन्स को लिख भेजी और मित्रता अधिक बढ़ाने को भी लिखा। डेमास्थिनीज ने लोगों को भड़काया कि फिलिप की बात अस्वीकार कर दो और बिज़ैंशियम को सहायता भेजो, जिस पर कि फिलिप चढ़ाई कर रहा है। अथेन्स से बिज़ैंशियम को सहायता भेजी गई, जो कि निष्फल नहीं हुई और फिलिप को अवरोध से हटना पड़ा। (ई० म० से ३४१ वर्ष पूर्व)। इस जीत से अथेन्स में डेमास्थिनीज का प्रभाव बढ़ गया, जिससे कि वह ऐसे नियम बनाने को समर्थ हुआ कि जिनसे सर्कारी धन का मेलों आदि में व्यर्थ व्यय होना कम हो गया और एक

लड़ाई का फंड खुल गया । उसने धनाढ्य मनुष्यों से भी जहाज़ों का बेड़ा बनाने को उचित धन दिलवाया, जिसके बल पर फिलिप को विजय करना अधिक निर्भर था ।

१८-किरोनिया—अथेन्स तथा यूनान की और और रियासतों में भी फिलिप के मित्र तथा उससे घूस पाने वाले बहुत थे । अथेन्स में ऐसे लोगों का मुखिया इस्काई-नीज़ था, जो डेमास्थिनीज के अतिरिक्त अन्य लोगों की अपेक्षा उत्तम व्याख्यान देता था, परंतु नगर निवासियों के हिसाब से वह ऐसा था कि अथेन्स में आज तक कोई इतना बुरा मनुष्य नहीं उत्पन्न हुआ । इस्काइनीज़ अथेन्स का ऐम्फिक्ट्रियोनिक कौंसिल का प्रतिनिधि था । उसने ईसा मसीह से ३३८ वर्ष पूर्व एक छोटी सी बात पर पड़ोस के ऐम्फिसा नगर और कौंसिल में इस लिए लड़ाई करा दी कि जिस में फिलिप सेनापति होने के लिए बुलायाजाय (छठा पाठ—१५—) । फिलिप बड़ी सेना के साथ दक्षिण की ओर चला । एथन्स में तुरन्त यह समाचार पहुंचा कि फिलिप ने ऐम्फिसा पर चढ़ने के बदले फोकिस के पूर्व इलेटीया नामक नगर को लेलिया जोकि बीशिया और एटिका के मध्य आने जाने का द्वार था । ऐम्फिसा का केवल बहाना था, और इलेटीया चले जाने का यह अभिप्राय था कि फिलिफ जभी चाहता अथेंस के फाटक पर पहुंच सकता था । सर्व साधारण की सभा की गई और सब मनुष्य भय अथवा घबराहट से चुप थे उस समय डेमास्थिनीज ने चिल्ला कर कहा कि एथेन्स को थेबीस से मेल कर बीरता के साथ फिलिप से लड़ना चाहिए । ऐसा ही किया गया और ईसा मसीह से ३३८ वर्ष पूर्व सात अगस्त को बीशिया

के किरोनिया नाम के स्थान पर एथेन्स और थेबीस की सेना और फिलिप में युद्ध हुआ और फिलिप यूनान का स्वामी हो गया।

१६—फिलिप की मृत्यु—अब फिलिप ने सब यूनानी रियासतों की कांग्रेस कोरिंथ में की। फारस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की गई और फिलिप सब यूनान भर की सेना का सेनापति बनाया गया। वह एशिया की चढ़ाई की तैयारी करने को घर लौटा। परन्तु उसके सौभाग्य की पूर्णमात्रा के दिनों में जब कि वह इपाइरस के राजा के साथ अपनी बेटी के विवाह में लगा था, उसको मक़दुनिया के एक मुसाहब ने मार डाला और उसकी गद्दी उसके पुत्र अलक्षेन्द्र (सिकंदर) को मिली (ई० स० से ३३६ वर्ष पूर्व)।

सातवां पाठ

सिकंदर का राष्ट्र

१—यूनान का स्वामी सिकंदर—जब सिकंदर गद्दी पर बैठा तो फारिस पर चढ़ाई करने की सब तैयारियें उसको ठीक मिलीं। क्योंकि फिलिप की मृत्यु के उपरांत थोड़ी सी यूनानी रियासतों में स्वाधीन बनने को कुछ हल चल मच रही थी अतः सिकंदर तुरन्त एक बड़ी सेना के साथ पेलोपोनिसस में अपने बल का उदाहरण देने गया। पहिले की भांति पुनः कोरिन्थ

में कांग्रेस हुई और यद्यपि सिकन्दर केवल बीस वर्ष का था, किन्तु वह यूनान का प्रधान और सेनापति स्वीकार कर लिया गया। तब वह मकदुनिया लौट आया और ईसा मसीह से ३३५ वर्ष पूर्व वसंत ऋतु में उसने मकदुनिया के उत्तरी जातियों पर चढ़ाई की। पहिले तो वह लड़ता हुआ थ्रेस से डैन्यूब नदी तक पहुंचा फिर उसके पार जाकर गेटी जाति को हराया और फिर नैऋत्य कोण की ओर घूम कर मक़दुनिया के पश्चिम में इलिरियन जाति (छठा पाठ—१०—देखिये) को पराजित किया। उसकी अनुपस्थिति में उसकी मृत्यु का झूठा समाचार यूनान में पहुंचा, और थेबीस वालों ने विद्रोह कर दिया और उसकी कैडमिया की सेना को घेर लिया। सिकंदर बड़ी ही फुरती के साथ इलिरिया से आया और थेब्रीस को ले लिया। नगर मिट्टी में मिला दिया गया और उसके सब निवासी दासों की भांति बेंच दिए गए। इस भांति उस रियासत (जो कि कुछ ही पहिले यूनान की मुखिया रह चुकी थी) उसके पूर्णतया नष्ट होने से और राज्य भी दहल गए; और सिर उठाने के सब विचार शान्त हो गए।

२—मक़दुनिया की सेना-फैलेंक्स—वह सेना जो फिलिप ने तैयार की थी और जिससे सिकंदर ने फारिसराष्ट्र विध्वंस किया था इस भांति सजाई गई थी कि बहुत बड़ी न होते हुए भी ऐसी सेना कभी नहीं देखने में आई। इस सेना की असली जान 'फैलेंक्स' थी। फैलेंक्स पैदल दल था, जिसके सिपाहियों के पास सात सात गज के भाले थे और यह १६ क्यारियों में बांटे जाते थे। प्रत्येक क्यारी, अगली

क्यारी से एक गज की दूरी पर रहती थी और सिपाही भालों को नोक से १६ फीट पर और दस्ते से पांच फीट पर पकड़ते थे। अतः अगली पांच क्यारियों के भाले पहिली क्यारी से पंद्रह, बारह, नौ, छः और तीन फीट की दूरी तक नम्बरवार निकले रहते थे। साधारण यूनानी भाले केवल दो गज (६ फीट) निकले रहते थे, अतः किरोनियामें जब थेब्रीस वाले फैलेंक्स पर आक्रमण करते थे तब उनको अपने नेज़े मक़दुनिया वालों के पास पहुंचाने के लिये नेज़ों की तीन क्यारियों को चीरना पड़ता था। फैलेंक्स में एक यह दोष था कि वे शीघ्रता से घूम नहीं सकते थे और इस कारण यद्यपि वह सुशस्त्र सेना का ज़बरदस्त हिस्सा था और यूनान में इतनी बलवान सेना तब से नहीं देखनें में आई तथापि पहिले छोटा नेज़ा फेंकने और फिर खड्ग से लड़ने की रूमी विधि फैलेंक्स से भी बढ़ कर निकली; क्योंकि इसमें कोई बात ऐसी नहीं थी कि जिससे सिपाहियों के किसी ओर भी घूमने में बाधा पड़े। प्रत्येक मनुष्य आत्मरक्षा करते हुए लड़ सकता था और उंची नीची भूमि परभी खड्गको वैसे ही काम में ला सकता था जैसे कि चिकनी और समथर भूमि पर। परंतु ऐसा दृष्टांत कहीं नहीं मिलता है जहां छोटे छोटे हथियारों का प्रयोग करने वाली सेना ने सामने से आक्रमण करके बराबर भूमि पर फैलेंक्स को हरा दिया हो। जब फैलेंक्स और रूमियों का मुकाबला हुआ था तो रूमियों ने पहाड़ी भूमि पर दोनों बगलों से आक्रमण करके जहां कि नेज़े क्रम में नहीं रह सकते थे, फैलेंक्स पर जय पाई थी। सिकंदर कभी भी केवल फैलेंक्स को

काम में नहीं लाता था, वरन् युद्ध अन्य दल से आरम्भ करता था और अन्त में जोर शोर का आक्रमण करके फैलेंच द्वारा युद्ध समाप्त करा देता था।

३-तोगलक् और घुड़सवार-फैलेंच में सब सैनिक केवल मकदुनिया निवासी ही थे। मकदुनिया निवासियों से रक्षकों का काम भी लिया जाता था। ये पैदल होते थे और इनके पास साधारण यूनानी बर्छियें और ढालें होती थीं। और दो दल घुड़सवारों के होते थे जिन में से एक दल कवच और छोटी सी मोटी मोटी बर्छियों से युद्ध में लड़ने को सुसज्जित होता था। दूसरा दल कवच इत्यादि से रहित होता था और उस दल के सिपाहियों के पास लम्बी लम्बी हल्की बर्छियें होती थीं। यह दल देश की छान बीन करने और शत्रु का पीछा करने को होता था। राजा के साथ मक़दुनिया के युवा भी होते थे जोकि 'पेज' कहलाते थे। इसके उपरान्त इनको ऊंची श्रेणी में चढ़ा दिया जाता था और यह चुना हुवा दल शरीर रक्षक (Bodyguard) कहलाता था। इन्हीं में से राजा अपने बड़े बड़े अफ़सर या सरदार चुनता था।

४-और सेना—सेना के इन दलों के अतिरिक्त, जो कि केवल मकदुनियावासियों ही के बने हुए होते थे, अन्य पल्टनें भी थीं। जो पैदल व घुड़सवार दोनों भांति की थीं। और मकदुनिया के आस पास के निवासियों की पल्टनें भी थीं, जिनके पास धनुष, खड्ग अथवा ऐसे ही और हल्के हल्के शस्त्र होते थे। इनको छोड़कर सेना के अन्य भाग भी थे जो समर और अवरोधों में कलों द्वारा पत्थर फेंकते थे। ये कलें उस समय कुछ वैसा ही

काम देती थीं जोकि अब तोपें देती हैं। पिछली यूनानी लड़ाइयों में दीवारें गिराने के लिये यह काम में आया करती थीं। सिकन्दर ही ने पहिले पहल सफलता से इनसे युद्ध में काम लिया और इतिहास के पिछले हिस्से में एक ऐसे समर का दृष्टान्त है कि जिस में युद्ध का फैसला इन्हीं तोपों के कारण हुआ था।

५-सैनिक राज्य—यद्यपि मकदुनिया की सेना संख्या में चालीस सहस्र से अधिक नहीं थीं तथापि उसकी पल्टनें और शस्त्र इत्यादिक ऐसे थे कि जो सर्वत्र काम दे सकते थे। यह सेना वास्तव में यूनानी से बहुत ही भिन्न भांति की थी। यूनानी सेना में नगर वासी ही सिपाही होते थे, और जब युद्ध समाप्त हो जाता था वे अपने कारबार में लग जाते थे। इनके सरदार भी नगर वासी ही होते थे तथा सर्वसाधारण द्वारा चुने जाते थे। परन्तु मकदुनिया की सेना में राजा ही कर्ता धर्ता होता था। सिपाही यह नहीं जानते थे कि नगर वासी किस प्रकार का कार्य करते हैं। उनको कानून और स्वतंत्रता का भाव नहीं था और उस राजा से प्रेम रखते थे जो उनको अपने साथ में लड़ने को ले जाता था और साथ ही साथ लड़ता था। सरदार और सेनापति राजाके पेजों में से चुने जाते थे। तदनन्तर वे उनके शरीर रक्षक बनादिये जाते थे और उनकी उन्नति राजा के उन पर प्रसन्न होने ही से होती थी। ऐसी रियासत में, जहां कि सेना सिकन्दर, सीज़र या नैपोलियन के जैसे एक मनुष्य के हाथ में हो, भला स्वतंत्रता का विचार ही कैसा। परन्तु राजा को अच्छा सेनापति समझकर सेना पर उसका प्रभाव स्वाभाविकरूपेण पड़ता है। क्योंकि सिपाहियों को अपने सेनापति

के प्रति इतना प्रेम होता है जितना कि किसी मनुष्य को हो सकता है, और इस कारण से वे वीरता और सहनशीलता के विचित्र विचित्र खेल दिखाते हैं और दूसरी बात यह है कि जब केवल एक उत्तम सेनापति उनको चलाता है तो वे उत्ते उत्तम काम दिखा सकते हैं। बहुत सेनापति होने से और जनता को हस्तक्षेप करने का अधिकार होने से ऐसा उत्तम प्रकार से युद्ध सम्बन्धी कार्य्य नहीं हो सकते। सिकन्दर, जो फिलिप से निर्माणित सर्व श्रेष्ट सेना का पूर्णरूपेण स्वामी था स्वयं भी लड़ने में बहुत विचित्र और तीव्र बुद्धि का मनुष्य था। सिकन्दर की सेना इन सब कारणों से ऐसी उत्तम थी कि उस समय के इतिहास में वर्णित सेनाओं में इसके समानता का उदाहरण नहीं मिलता। यह भयङ्कर सेना थोड़े ही श्रम से विजय कर सकती थी।

४-सिकंदर का चालचलन—सिकंदर की 'महान्' की पदवी उसके सेनापतित्व के विचित्र गुणों और मनुष्यों पर स्वाभाविक प्रभाव के कारण से सार्थक है। किसी मनुष्य ने ऐसा रणकौशल नहीं दिखाया। कूंच में उसके साथ के मनुष्य और घोड़े प्रायः थकावट से मर जाते थे परन्तु वह मुंह नहीं मोड़ता था। जो कार्य्य उसे करना होता उसे वह बड़ी तेज़ी से करता था। सरदार और सिपाही का विश्वास था कि हमारा सेनापति ऐसा है कि जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता है। उसके सैनिक युद्ध के लिये सदा व्यूह-बद्ध रहते थे। उनके आज्ञानुसार वे बड़े ही शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक चले जाते थे जिसे विचार कर विस्मय होता है।* जिस-जिस कार्य को करने के लिये उसने उद्योग किया उन सब मे सदा उसने सफलता

प्राप्त किया। इन सब बातों से प्रतीत होता है कि वह अनुपम सेनानायक था। रूम के सरदार जो कि इस विषय पर भली भांति विचार कर सकते थे सिकंदर को कार्थेज के हैनिबाल नामक सरदार के अतिरिक्त सबसे बड़ा समझते थे। वीरता, दृढ़ता और जीवट में कोई भी उससे बढ़कर नहीं था। परन्तु जब हम सिपाहीपन से आगे दृष्टिपात करते हैं और सिकंदर का पेरिक्लीज़ आदि वास्तविक सच्चरित्र मनुष्यों से मिलान करते हैं तब वह कुछ भी बड़ा नहीं निकलता है वरन् अपमाननीय जान पड़ता है। वह केवल अपने कैदियों पर ही छुरी चलवाता तो उसके चाल चलन पर धब्बा नहीं लगता क्योंकि उन दिनों में यह साधारण चाल थी, किन्तु सिकंदर ने एक सेनापति को, जिसने वीरता से उसका विरोध किया था, अपने रथ के पीछे बांध कर घसीटा। उसने अपने घुड़सवारों के सेनापति फिलोटस को केवल शङ्का के कारण से मारडाला और अन्त समय तक ऊपरी रूप से अपने को उसका मित्र ही कहता रहा। उसने उसी शङ्का में अपने एक बड़े पुराने सरदार फार्मेनिओ को मारडाला, जो कि फिलोटस का पिता था। उसने अपने सब से पुराने मित्र क्लाइटस को राजा हो जाने पर मदिरा के नशे में मारडाला। उसने एक यूनानी सुलेखक कैलिस्थिनीज पर षड्यन्त्र रचने के निमित्त दोष लगाकर उसे बड़ा कष्ट देकर मारा। परन्तु कैलिस्थिनीज को मारने का मुख्य कारण यह था कि उसने सिकंदर को देवता की भांति पूजने से इन्कार किया था। कभी कभी मनुष्य सिकंदर को यूनान का रक्षक कह बैठते हैं, परन्तु सच तो यह है कि उसमें यूनानीपन तो था ही नहीं और वास्तव में परदेशी राजा सा था। उसके जीवन के पिछले दिनों की विजयों

में उसके स्वभाव की कपटता और जंगलीपन भली भांति प्रकट हुआ और यदि उसको यूनानी माना जाय तो उसके बहुत से काम बुरे से बुरे ज़ालिमों के से थे। वह पेरिक्लीज़ और इपैमिनन्डास जैसे मनुष्यों से बिलकुल उलटे स्वभाव का था, क्योंकि ज्यों ज्यों उनकी शक्ति बढ़ती थी त्यों त्यों वे अपने को अधिक संयमपूर्वक रखते थे और दूसरों के स्वत्वों की रक्षा की अधिक चिन्ता करते थे।

७-एशियामाइनर का जीतना—ईसामसीह से ३३४ वर्ष पूर्व सिकन्दर हेलेस्पन्त के उस पार गया। फारसवालों की जो सेना उससे लड़ने आयी थी उसमें अच्छे से अच्छे सिपाही वे थे जिनको फारिसवालों ने किराये कर लिया था और इनका सरदार रोडिस का रहनेवाला मेम्नन था जो युद्ध की नीतियें भली भांती से जानता था। मेम्नन ने फारिस के सत्रप (सूबेदार) से कहा कि सिकंदर से खुले मैदान जमकर समर नहीं करना चाहिये बल्कि पहाड़ों के मार्गों की रक्षा करनी चाहिये जिनमें होकर नगरों को आने जाने का स्थान हैं, और फेनेशिया का बेड़ा जो सिकंदर के बेड़े से बढ़कर है उसको यूनान भेजना चाहिये कि जिसमें वह यूनानियों को मक़दुनिया के विरुद्ध भड़कावे और उनसे मक़दुनिया पर भी चढ़ाई करवावे। परन्तु सत्रपों ने मेम्नन की एक न सुनी और हेलेस्पट में ग्रेनीकस नदी पर समर हुवा जिस में सिकंदर को बहुत परिश्रम करने पर विजय प्राप्त हुई। फारिस के राजा दारा ने अब मेम्नन को सेनापति बनाया। मेम्नन अब जल-समर की तैयारी करने लगा और इजियन समुद्र के उसने बहुत से द्वीप पुनः जीत लिये परन्तु थोड़े ही दिनों के उपरान्त वह बीमार पड़ कर मर गया। सिकंदर ने एशिया माइनर में दखल जमाया और दारा ने मेम्नन की रणनीति छोड़ दी और एक बहुत बड़ी सेना

जोड़ने लगा कि जिसमें जमकर सिकंदर से युद्ध करें। किलिसीया और सीरिया के सीमा पर इसस के निकट युद्ध हुआ। दारा बड़ी लज्जाजनक कायरता से भाग गया और फारिसवालों के बीरता से लड़ने पर भी सिकंदर की पूर्ण विजय हुई और दारा का कुनबा सिकंदर के हाथ लगा (ई० म० से ३३३ वर्ष पूर्व)।

८—फेनेशिया का जीतना—दारा युफ्रेतिस नदी के उस पार भाग गया परंतु उसका पीछा करनेके बदले सिकंदर दक्षिण की ओर फेनेशिया को चला। दमस्क लेलिया गया और टाइर को छोड़ कर शेष सब बन्दरगाहों ने सिकंदर की आधीनता बिना लड़े ही स्वीकार की। टाइर नगर भूमि से आधे मील पर समुद्र के एक टापू में था और उसके चारो ओर एक बहुत ही दृढ़ चहार दीवारी थी। टाइरवालों के पास जहाज़ थे परन्तु सिकंदर के पास कुछ नहीं था सो वे लोग समझते थे कि इस द्वीप के नगर में बैठे बैठे हम सिकंदर का सामना कर सकते हैं। परंतु सिकंदर ने सूखी भूमि पर होकर टाइर में जाने का प्रण कर लिया था सो उसने उस आध मील के समुद्र पर ठोस पत्थर का दो सौ फीट चौड़ा बंद बांधना निश्चय किया। बंद बांध दिया गया परंतु जब बनते बनते बंद शहर की दीवार के पास पहुंचे तो वहाँ वाले उसको नष्ट भ्रष्ट कर देते थे। अन्त में उस बंद की रखवाली करने को सिकंदर को फेनिशिया के दूसरे नगरों से जहाज़ी बेड़ा मांगना पड़ा। बंद पूरा हो गया, चढ़ाई अंजन उसपर होकर ढुलकाये गये और दीवार भी तोड़ दी गई। बड़े घोर समर के अनन्तर टाइर जीत लिया गया। छः मास तक युद्ध लगातार हुआ। सिकंदर का आक्रमण और टाइरवालों का आत्मरक्षा व स्वतन्त्रता के लिये लड़ना दोनों ही बातें

इतिहास में बहुत विख्यात हैं (ईसा मसीह से ३३२ वर्ष पूर्व)।

९–मिश्रदेश-सिकन्दरिया—सिकंदर फेनिशिया से मिश्र में गया। वहां वाले उससे बिलकुल नहीं लड़े। फारिसवालों ने मिश्रवालों के पशुओं की मूर्तिधारी देवताओं का अपमान किया था जिससे मिश्रवाले क्रुद्ध हो गये थे। परन्तु ऐसा करने के बदले सिकंदर ने उन देवताओं को बलिदान चढ़ाये कि जिसमें मिश्री तथा और जातियें यह देख लें कि सिकंदर हमारे धर्मों का सम्मान करता है और यह देख कर फारिसवालों के बदले सिकंदर का शासन स्थापित करें। नील नदी के मुहाने पर उसने सिकंदरिया (अलतेन्द्रिया) नामक नगर बनाया। सिकंदर को इसकी क्या ख़बर थी कि बाद को रोम को छोड़कर यह नगर संसार के सब नगरों से अच्छा होगा। कदाचित् सिकंदरिया नगर बनाने से उसका यह अभिप्राय था कि मिश्र को शेष राष्ट्र से मिला लूं और समुद्र के तटपर एक व्यापारी नगर बनाऊं जिस में मिश्री और यूनानी बसें और जिस से यह एक नवीन राजधानी स्थापित हो।

१०–अर्बेला और सिकंदर के कूंच—मिश्र के पश्चिम में रेगिस्तान में एम्मन के मन्दिर में दर्शन करके सिकंदर सिरिया में होकर ईशानकोण को चला और युफ्रेटीज़ और टिइग्रिस पार कर निनिवह से थोड़ी ही दूर पर अर्बेला के पास दारा और उसकी बड़ी सेना से लड़ा। दारा लड़ाई देखते ही डर से भागा और सिकंदर ने पूर्ण विजय प्राप्त की (ईसामसीह से ३११ वर्ष पूर्व)। सिकंदर अब फारिस राष्ट्र के स्वामी का काम करने लगा और उसने सत्रप (सूबेदार) चुने। वह बाबुल में बड़े समारोह

से घुसा और वहां के लोगों और पुजारियों को उसने वहां देवमन्दिरों में बलिदान करके प्रसन्न किया और फारिसवालों के नष्ट किये हुए मंदिरों को उसने बनवा दिया। अब उसने सेना को एक मास का विश्राम दिया और तदुपरान्त सूसा और पार्सिपालिस गया। पार्सिपालिस अग्निकोण में फारिस की प्रसिद्ध राजधानी थी। पार्सिपालिस में बहुत द्रव्य निकला, और यहां वाले यद्यपि लड़े नहीं थे परंतु डेढ़ सौ वर्ष पूर्व की यूनान की चढ़ाई का बदला लेने को सिकंदर ने नगर जला दिया और सिपाहियों से वहां के कतिपय निवासियों को कत्ल करा दिया (ई० म० से ३३० वर्ष पूर्व)।

११-दारा की मृत्यु—दारा अर्बेला से मिदिया में एकबेटना को भागा और सिकंदर उसके पीछे उसको पकड़ने को चला। जब सिकंदर उसके पास पहुंचा तो वह पूर्व की ओर कैस्पियन सागर के दक्षिणी सिरे के पहाड़ों में होकर भागा। सिकंदर दिन रात पीछा करता गया और जब दारा दिखाई देने लगा था तभी उसको बेसियस नामी एक अमीर ने मार डाला कि जिसमें वह सिकंदर की शरण में न चला जावे।

१२-सिकंदर का कास्पियन के उस पार जाना—कास्पियन से दक्षिण की भूमि को जीत कर सिकंदर पूर्व और दक्षिण को चला जिनको अब फारिस और अफ़गानिस्तान कहते हैं। राह में उसने सिकंदरियाएरियन नाम की नई बस्ती बसाई जिसको अब हिरात कहते हैं और जो अफ़गानिस्तान की पश्चिमी सीमा पर एक नामी फौजी जगह थी। इससे थोड़ी दूर को हट कर दक्षिण की ओर प्राप्थेसिया (फरा) नामक स्थान पर वह दो मास ठहरा और फिलोटस यहां ही मारा गया था

(ईसामसीह से ३३० वर्ष पहिले)। यहां से वह पूर्व को चला और उसने एक नगर बसाया जिसको कि लोग वर्त्तमान कंदहार कहते हैं। तब वह उत्तर को मुड़ा और हिंदूकुश पर्वत को पार कर वर्त्तमान काबुल के पास एक बस्ती बसाई। बेसियस ने वक्त्रिया में सिकंदर का मुकाबला करने का विचार किया था, परन्तु फिर उत्तर की ओर भागा और पकड़े जाने पर मार डाला गया। सिकंदर उत्तर की ओर बढ़ता ही गया और उसने बुखारा की राजधानी करकेन्द (आधुनिक समरकंद) को जीता (ई० म० से ३२९ वर्ष पूर्व) तदुपरान्त अरल सागर में गिरनेवाली यक्सरती नदी (जो सर नदी कहलाती है) के पार उतरा और वहां सिथियनों को पराजित किया परंतु उनके देश में अधिकार नहीं जमाया। उसका विचार यक्सरती नदी को अपने राज्य की उत्तरीय सीमा बनाने को था और उसने वहां सिकंदरियायशाती नामी बस्ती की नींव डाली। सोग्दियान (बुखारा) के जीतने में सिकंदर को बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी और वहां ढाई वर्ष के लगभग लगे।

१३–भारतवर्ष में सिकंदर—ईसामसीह से ३२७ वर्ष पूर्व सिकंदर वक्त्रिया जीतकर भारतवर्ष जीतने को चला और अटक के पास सिंध नदी उतर कर पूर्व की ओर पंजाब में को कूच किया। पंजाब के राजा पुरु ने झेलम नदी के पार उसका सामना किया परंतु रण में उसकी पराजय हुई। सिकंदर ने उसका राज्य उसके ही पास रहने दिया और उसको आधीन राजा बना लिया। और पूर्व को बढ़ कर वह सतलज नदी के पास पहुंचा और सिकंदर के विनय करते रहने पर भी सिपाहियों ने आगे बढ़ने को साफ इनकार कर दिया। अतः सिकंदर को लौटना पड़ा और

जब वह झेलम नदी के पास पहुंचा तो कुछ सेना तो उसने नावों में लाद दी और शेष को नदी के किनारे किनारे चलने की आज्ञा दी। झेलम बह कर चिनाव नदी में मिली है और चिनाव सिन्ध में। चिनाव और सिन्ध के संयोग पर एक नगर और जहाजों का गोदाम बनाया गया और सेना और बेड़ा सिन्ध में होकर उसके मुहाने पर पहुंचा और उन्होंने भारतीय सागर देखा (ई० म० से ३२५ वर्ष पूर्व)। यह प्राय: प्रथम अवसर था कि किसी यूरप के निवासी ने भारतीय सागर देखा हो। और जहां आंगलदेशियों ने ईसा के उन्नीसवीं शताब्दी में रेल बनाना आरम्भ किया उस स्थान का दो सहस्र वर्ष पूर्व सिकंदर ने पूर्णतया अनुसन्धान किया था। यहां यह लिख देना उचित है कि जब सिकंदर भारत में था उस समय यूबिया भी विद्रोह करके स्पार्टा से मिल गया। इससे अथेन्स की बड़ी हानि हुई। ऐटिका में तो अन्न उपजने ही नहीं पाता था और इस घटना के उपरान्त जो कुछ अन्न यूबिया से आता था वह तो बंद होही गया और इसके अनन्तर स्पार्टा वाले यूबिया तथा उसके भागों में रहकर दूसरे स्थानों से अन्न लाते हुए अथेन्स के जहाजों पर टूट पड़ सकते थे।

१४-न्यारकस की जलयात्रा—सिकन्दर को विजय करने की जितनी उत्कण्ठा थी उतनी ही नये नये स्थानों को जानने की भी थी। जलसेना के सरदार न्यारकस के अधिपत्य में उसने बेड़ा लौटा दिया और आज्ञा दिया कि समुद्र के किनारे किनारे युफ्रेटिस नदी के मुहाने पर को जाओ, और स्वयं बिलूचिस्तान के रेगिस्तान में होता हुआ पश्चिम की ओर चला। भूख, प्यास, थकावट और बीमारी आदि कठिनाइयें सहता हुआ सेना को पर्सिपालिस में फिर ले आया (ईसामसीह से ३२४ वर्ष पूर्व)।

पर्सिपालिस से वह सूसा में गया और वहां कुछ मास ठहर कर सूबेदारों के कार्य्य की जांच की और अपराधियों को कठिन दंड दिया।

१५–सिकन्दर के चरित्र में अन्तर—अर्बेला के युद्ध के उपरान्त से सिन्दर के रहन सहन का ढंग फारिस के राजाओं का सा होता जा रहा था परन्तु उसने अपनी चुस्ती में बट्टा नहीं लगने दिया था। वह फारिसवालों के ही ढंग के वस्त्र पहिनता था और फारिस के दर्बार ही कीसी रीति रस्में रखता था। मक़दुनिया का ढंग छोड़ देने से सिपाही उससे अप्रसन्न थे और उसने सूसा में अपने अस्सी सरदारों का फारिस की स्त्रियों से व्याह करा के उनको और भी रुष्ट कर दिया था। सिकन्दर की इच्छा अपने साम्राज्य से जाति और देश भेद के विचार को दूर करके यूनानियों और एशियावालों के चित्तों में भेद भाव और वैमनस्य को हटाने का था। उन पल्टनों में जिनमें मक़दुनियावालों के अतिरिक्त कोई नहीं था उसमें उसने फारिसवालों को भी भरती किया और एशिया के युद्धप्रिय जातियों से उसने तीस सहस्र सिपाही सेना में लिये और उनको मक़दुनिया के ढंग से शस्त्रबद्ध किया।

१६–सिकन्दर की मृत्यु—न्यारकस की जल यात्रा से स्थानों का ज्ञान प्राप्त करके सिकन्दर ने समुद्र द्वारा अरब पर चढ़ाई करना निश्चय किया और फेनेशिया में जहाज़ बनने की उसने आज्ञा दे दी थी। ये जहाज छोटे छोटे भागों में स्थल द्वारा यूफ्रेट्रिस के तट पर थाप्सेकस को ले जाये गये। यहां पर पुनः जोड़े जाकर वे बाबुल भेजे जाने को थे और यहां ही से चढ़ाई होने वाली थी। ईसामसीह से ३२३ वर्ष पूर्व वसन्त ऋतु में सिकन्दर ने सूसा से

काबुल को कूंच किया। संसार के जितने भी देश उस समय के यूरप निवासी जानते थे उन सबके दूत यात्रा में उसके पास आये। काबुल में उसको जहाज तैयार मिले। एशियाई और यूनानी दोनों ही सेनायें आ पहुंची थीं और चढ़ाई होने ही वाली थी कि सिकन्दर को ज्वर आ गया और वह मर गया (ईसामसीह से ३२३ वर्ष पूर्व-जून मासमें) मृत्यु के समय उसकी अवस्था केवल ३२ वर्ष की थी।

१७-सिकन्दर के लक्ष्य—कभी कभी यह कह दिया जाता है कि यूनान के से नगर बनाकर सिकन्दर का विचार एशिया को यूनान की भांति कर देने का था। उसकी विजय का असली फल यह था कि पश्चिमी एशिया कुछ कुछ यूनान की भांति हो गई थी, परन्तु यह काम उसके उत्तराधिकारियों द्वारा उसकी अपेक्षा अधिक हुआ था। सिकन्दरिया को छोड़ कर शेष जितनी उसकी बसाई हुई बस्तियें थीं वह दूर दूर स्थानों में सिपाहियों के रहने की थीं, कि जिसमें राष्ट्र अपने अधिकार में रहे। वे इस लिये नहीं थी कि राष्ट्र यूनान की भांति बन जाय। और उस की यह इच्छा कि मेरे राज्य की जातियें एक हो जांय यह इस से स्पष्ट जानी जाती है कि वह अपने सिपाहियों का फारिस की रमणियों से विवाह करा देता था। परन्तु यह कहने से यह अभिप्राय कभी नहीं हो सकता कि इन नगरों के द्वारा वह अपने राष्ट्र में यूनानी विद्याओं और कला कौशल का प्रचार करना चाहता था। और न यही मान लेने का कोई कारण है कि वह फारिस में दूसरी शासन पद्धति स्थापित करना चाहता था, क्योंकि फारिस राष्ट्र में उसने 'सत्रपियें' रहने दीं और कर उगाहने का भी पुराना फारिसी ढंग ही रहा केवल यही भेद चाहे समझ.

लिया जाय कि सिकन्दर सेना द्वारा सर्वाधिकारभोक्ता शासक बना रहना चाहता था और सूबेदारों को भी पूर्णतया अधिकार में रखना चाहता था। रहे फारिसवाले वे निर्बल और धृष्ट (ढीठ) थे अतः सूबेदार (सत्रप) स्वाधीन सम्राट् हो बैठे थे। मिश्र और बाबुल की उसकी कर्त्तूतों से यह स्पष्ट जाना जाता है कि सिकंदर फारिसवालों की अपेक्षा पराजित जातियों के विचारों का अधिक ध्यान रखता था। और यद्यपि उसकी शासन पद्धति कुछ नई नहीं थी तथापि सड़कें, बंदर और पोताश्रय इत्यादि बनाकर, देश की दशा में बहुत कुछ परिवर्त्तन करदेने की इच्छा थी, जिस से व्यापार की उन्नति हो और भिन्न भिन्न जातियों का परस्पर व्यवहार हो। शासननीति की बात यह है कि सिकंदर शायद यह समझता था कि यूनान स्वयं इस विषय को फारिस से बहुत कुछ सीख सकता है और फारिस को शासनपद्धति बताने योग्य यूनान नहीं है। वह फारिस की यह शैली कि "यदि योग्यता और पटुता से कार्य्य किया जाय तो बड़ा राष्ट्र भी एक शासक द्वारा शासित हो सकता है" ठीक समझता था। वह यूनानियों की छोटी छोटी रियासतों और समितिओं को पसन्द नहीं करता था।

१८–सिकन्दर की विजय के फल—सिकंदर की मृत्यु हो जाने पर उसके राज्य को सरदारों ने बांट लिया। पश्चिमी एशिया में बहुत से ऐसे नगर बनाये गये थे जैसे ऐण्टियांक और सेल्यूकिया इत्यादि कि जिनमें कुछ फारिसवाले और कुछ अन्य विस्तृत नगरों से आये हुए यूनानी बसते थे। दूसरी जातियों में रहकर यूनानियों ने जो अनुभव प्राप्त किया था यह उस ही का फल था कि वे सफलता पूर्वक एशिया में रहने को समर्थ हुए और जहां कहीं रहे वहां अपनी रीतियों का प्रचार कर सके। यद्यपि

सिकंदर के उत्तराधिकारियों के काल में यह नगर यूनानी नगरों की भांति स्वतंत्र नहीं थे और इस कारण से उनसे प्राचीन यूनानी के स्वतन्त्रता, हौसला और आत्मसम्मान विषयक विचार एशिया में बहुत कम आपाये। यूनानी भाषा और साधारण यूनानी स्वभावों का उनमें प्रचार हो गया। बाह्यरूप में ये नगर यूनानी नगरों की भांति जान पड़ते थे। यूनानी शहरों की भांति वहां मन्दिर, मूर्तियें, स्नानालय और नाटकगृह इत्यादि होते थे। धार्मिकरीति रसमें और त्योहार आदि यूनानी ढंगही पर होते थे। प्रायः यूनानी भाषा ही बोली जाती थी और यूनानी पुस्तकें पढ़ी लिखी जाती थीं, परन्तु जातियों का मिलाव हो जाने के कारण से कोई न कोई बात सदा उनमें ऐसी रहती थी कि जिससे उनमें और स्वच्छ स्वच्छ यूनानियों में भेद पाया जाता था इस कारण वे स्पष्ट अन्य जाति के मालूम पड़ते थे। सिरिया ऐसे कुछ प्रान्तों में यूनानी रंग ढंग शीघ्र फैल गये परन्तु जुडु आदि प्रदेशों में उन-रीतियों के प्रचार में बहुत ही बाधायें पड़ी। सिरिया के राजा ऐंटिओकस-यपीफेनिस ने जरूसलम के मन्दिर में यूनानी पूजा चलानी चाही, परन्तु यहूदियों ने विद्रोहकर दिया। इनका मुखिया मेकाबीस था और वे स्वतंत्र हो गये (ई० म० से १६० वर्ष पूर्व)। परन्तु इन बातों के होते हुए भी यूनानी भाषा और बहुत से यूनानी विचार जुडु में फैल गये। इस कारण से 'न्यूटेस्टामेंट' * (इंजील) यूनानी भाषा में लिखी गई थी।

१९—एशिया—सिकंदर के राष्ट्र के मुख्य टुकड़े तीन हुए—मक़दूनिया, एशिया, और मिश्र। एशिया के शासक, सिकंदर के

* 'न्यूटेस्टामेंट' ईसाइयों की दो भागों वाली पुस्तक बाइबिल का दूसरा भाग है—अनुवादक।

सरदारों में से एक सरदार सेल्यूकस के उत्तराधिकारी सेल्यूकिडी हुए। एशिया में जीते हुए देश को एक राष्ट्र की भांति वे मुट्ठी में न रख सके। उनके राज्य का एक एक भाग निकलने लगा। रोड्स आदि द्वीपों ने जल शक्ति की एक समिति स्थापित की और स्वाधीन बने रहे। एशियामाइनरके पश्चिमतट पर परगेमस नामक एक स्वाधीन राज्य उठ खड़ा हुआ जिसके निवासियों के रहन सहन के ढंग यूनानियों के से थे। एशियामाइनर के उत्तर में और केंद्र पर बहुतसी रियासतें बनगईं जैसे पांटस और केपाडोकियां इत्यादि, जिन में कुछ भी यूनानीपन नहीं था। युफ्रेटीज़ नदी के पार पारथियसवालों ने विद्रोह करके एक रियासत बनाली। दक्षिण में यहूदी स्वतंत्र हो गये। अन्त में एशिया में यूनानी राज्य घटते घटते केवल सिरिया देश पर रह गया। युफ्रेट्रिज नदी तक की रियासतें यूनानियों के हाथ से निकल कर रूमियों के हाथ पड़ीं और रूमी राष्ट्र की ये सब प्रान्त हो गईं (ई॰ स॰ से ६३ वर्ष पूर्व)।

२०—मिश्र देश—मिश्र में टालमी का घराना राज्य करता था, और एशिया की भांति राज्यकार्य में वहां भी यूनानी भाषा काम में लाई जाती थी और मुख्य मुख्य कर्मचारी भी यूनानी होते थे। यूनानी और मिश्रवासी एक दूसरे से भिन्न भांति से रहते थे। सिकंदरिया नगर यहूदियों और यूनानियों से भरी रहती थी। वहां एक विश्वविद्यालय स्थापित किया गया और यूनान के बड़े बड़े विद्वान वहां आकर मिले। गणितवेत्ता यूक्लिड और ज्योतिषविद्वान टालिमी ने अपने अपने ग्रन्थ वहां ही लिखे थे। वहां एक पुस्तकालय था कि जिस में सब यूनानी पुस्तकें मिलती थीं। परन्तु यद्यपि ज्ञान और विज्ञान का प्रचार सिकंदरिया में था, तथापि यूनानी कविता की आत्मा वहां नहीं थी और न स्वाभा-

विक और सरल यूनान की सी मानसिक शक्ति ही थी। वहां कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं लिखा गया कि जिसकी बराबरी बड़े यूनानी लेखकों के ग्रन्थों से की जा सके । पुरानी टेस्टामेंट का यूनानी भाषा में सिकंदरिया ही में अनुवाद हुआ था (ईसामसीह से २७५ से २५० वर्ष पूर्व तक)। और पढ़े लिखे यहूदी उन यूनानियों के विचारों से भली भांति परिचित हो गए जिन्होंने धार्मिक बातों पर बहुत ध्यान दिया था। मिस्र देश की अन्तिम यूनानी शासका सुविख्यात क्लियोपेट्रा रानी थी। उसकी मृत्यु के उपरांत मिस्र देश को आगस्टस ने रूमी प्रान्त बना लिया (ई० म० ३० वर्ष पूर्व)

२१-मक़दुनिया—सिकंदर की मृत्यु के उपरान्त मक़दुनिया में बहुत दिनों तक गड़बड़ रही, किन्तु राज्य विप्लव और आपस के युद्ध के बारे में स्थानाभाव से हम यहां नहीं लिख सकते हैं। ईसामसीह से २८९ वर्ष पूर्व गाल जाति के एक घराने ने मक़दुनिया पर चढ़ाई की थी और बड़ा उपद्रव मचाया था। इसके बाद समुद्र उतर कर वे एशिया माइनर में घुस आये, जहां उन्होंने यूनानी ढंग सीखे और गैलेटिया या गैलोग्रीशिया नामक राज्य स्थापित किया। इसके बाद मकदुनिया में शांति हो गई और सिकंदर के सरदारों में से एंटिगानस नामक एक सरदार के पुत्र पौत्रादि ने रूमियों द्वारा राज्य परिवर्तन किये जाने तक गद्दी को अपने हाथ में रक्खा। जिन दिनों कार्थेज और रूम की दूसरी लड़ाई हो रही थी, उन दिनों में फिलिप मकदुनिया का राजा था सो उसने कार्थेज से मेल कर लिया। जब युद्ध समाप्त हो गया तो रूमियों ने फिलिप पर युद्ध ठान दिया और काइनासिफेली पर उसको हराया (ई० म० १९७ वर्ष पूर्व) उन्होंने मकदुनिया का अधिकार यूनान पर से उठा दिया और सब यूनानी रियासतों को

स्वतंत्र कर दिया। ईसामसीह से १७१ वर्ष पूर्व पर्सियस के शासनकाल में मकदुनिया और रूम में फिर युद्ध हुआ। पिड्ना के युद्ध में पर्सियस की पराजय हुई, राज्यसत्ता उठा दी गई और मकदुनिया पांच प्रजा सत्ताओं में बँट गई। बाइस वर्ष उपरान्त विद्रोह के बहाने से मकदुनिया भी रूमी राष्ट्र का प्रान्त बना लिया गया।

२२–यूनानी रियासतें–एकिया की समिति— सिकंदर के मरने पर एथेन्स तथा और कई रियासतें मकदुनिया के विरुद्ध उठीं, परन्तु दाब दी गईं। डेमास्थिनीज़ को एथेन्स से भागना पड़ा और जब मकदुनिया वालों ने पीछा किया तो उनके हाथ में पड़ने से बचने के लिये उसने विष खालिया। अगले पचास वर्ष तक गड़बड़ रहा। ईसामसीह से २८० वर्ष पूर्व के लगभग मकदुनिया का राजा गुणतास स्पार्टा को छोड़ कर सम्पूर्ण यूनान का स्वामी था। फिर दो समितियों अर्थात् एकियन समिति और इटोलियन समिति के हो जाने से अधिकांश यूनान में शान्ति हो गई थी। आरम्भ में एकियन समिति पेलोपोनिसस के उत्तर तट के दस नगरों की समिति थी और तब तक उसने कुछ नहीं किया था। इन नगरों में एंटिगानस का राज्य 'अन्यायी' * के हाथ गया। इन अन्यायियों को दूर करने के प्रयत्न करने के कारण से यह समिति मकदुनिया की बड़ी शत्रु समझी जाने लगी।

* अन्यायी (टायरंट) का मतलब यह नहीं है कि वे प्रजा को बड़ा क्लेश देते थे। यूनानी भाषा में जो न्याय के अनुसार अधिकारी न होते हुए राज्य पर बैठ जाय उसे 'टिरनस' कहते थे चाहे उसका शासन बहुत सुशासन हो और प्रजा प्रसन्न रहे। विप्लव के समय जो ही बलवान् था वही राज्य सिंहासन पर बैठ जाता था और वह इतिहास में अन्यायी (टिरनस) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सं.

ईसामसीह से २४० वर्ष पूर्व के लगभग सिसियन का अरैतस (जिसने सिसियन को समिति में मिलाया था और समिति का सभापति बनाया गया था) ने मकदुनिया वालों से कोरिन्थ को बचाया। और अब स्पार्टा और दो चार और रियासतों के अतिरिक्त पेलापोनिसस के सब नगर समिति में आमिले। अथेन्स और इजीना भी उसमें आये।

२३-इटोलियन समिति—कोरिन्थ की खाड़ी के उत्तर में इटोलियन नाम की एक जंगली जाति थी जो कि अधिकांश यूनानियों की भांति नगरों में नहीं रहती थी और नितान्त असभ्य थी। इस जाति ने एक समिति बना रक्खी थी जो इस समय बड़ी शक्तिमती हो गई थी। फोकिस, लोक्रिस और बीशिया पर उनका अधिकार हो गया था, परन्तु लूट मार के कारण वे बदनाम थी।

२४-स्पार्टा—स्पार्टा ने मकदुनिया से अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की थी परन्तु वहां की पुरानी बातें जाती रही थीं। कुल नगर वासियों की संख्या केवल सात सौ रह गई थी और सब भूमि केवल एक सौ कुनबों के पास थी। ईसामसीह से लगभग २४० वर्ष पूर्व स्पार्टा के राजा एजिस ने ऋण उठा देना और भूमि बांट देनी चाही कि जिसमें नये सिरे से बहुत से पुरवासी हो जांय। अमीरों ने उसका विरोध किया और उसे मार डाला परन्तु उसके उत्तराधिकारी क्लियोमेनिस ने यह सब काम पूरे किये और स्पार्टा को कुछ काल को पुनः शक्तिमान् राज्य बना दिया। एकियन समिति और स्पार्टा एक दूसरे से द्वेष करते थे और अन्त में लड़ पड़े। क्लियोमेनिस ने अरैतस को हराया और अरैतस ने मकदुनिया के राजा की सहायता मांग कर और समिति को बहुत

कुछ मकदुनिया के अधिकार में हो जाने देकर उसने समिति की स्वातंत्र्यप्रियता की आहुति दे दी। स्पार्टा की हार हुई (ई० म० से २२१ वर्ष पूर्व) परन्तु समिति के हाथ कुछ भी न लगा। थोड़े ही समय उपरान्त एकियन और इटोलियन समितियों में लड़ाई हो गई और एकियन समिति ने पुनः मकदुनिया की सहायता मांगी।

२५–यूनान रूमी प्रान्त बनाया गया—ईसामसीह से २११ वर्ष पूर्व, रूमियों ने इटोलियन समिति से फिलिप के विरुद्ध मेल कर लिया क्योंकि उसने हैनिबाल को सहायता दी थी। और इस समय से रूमी लोग यूनान के मामलों में हस्तक्षेप करने लगे थे। अन्त में ईसामसीह से १४६ वर्ष पूर्व एकियन समिति के विरुद्ध स्पार्टा से प्रार्थना किये जाकर उन्होंने कोरिन्थ ले लिया और यूनान को रूमी प्रान्त बना लिया।

२६–अनऐक्य ही यूनानियों का दोष था—यूनान के इतिहास भर में यूनान की शक्ति को नष्ट करने वाला और उस पर असंख्य विपत्तियें डालने वाला केवल एक ही कारण है अर्थात् उनकी मिल कर कार्य करने की अयोग्यता। यह बात केवल नगरों नगरों की लड़ाइयों, और उनकी कोई स्थायी ऐक्यता स्थापित करने में असमर्थ होने ही में देखने में नहीं आती है; वरन् इस बात से बहुत अधिक जान पड़ती है कि एक नगर के भीतर उसही के निवासियों में परस्पर फूट थी। एक ही नगर में विरुद्ध दलों के लोग एक दूसरे से इतनी घृणा करते थे कि जितनी कोई विदेशी शत्रु भी नहीं करेगा। जातियें गवर्नमेंट को बहुत ऊंची दृष्टि से देखा करती थीं, और उनमें मिल कर काम करने की वह शक्ति थी कि जिसकी यूनानियों में बहुत ही कमी थी।

यूनान का इतिहास पढ़ने में यह दोष हमारे दृष्टिगोचर होता है; परन्तु यूनानियों के बड़े बड़े गुण इतिहास में हमारे सम्मुख बिलकुल नहीं आते हैं। उनकी तेज़ी, विद्याप्रेम, सुन्दर सुन्दर पदार्थ बनाने की शक्ति आदि को केवल उनके कामों के वृत्तान्त से हम लोग नहीं जान सकते हैं। इनको जानने के लिये और यूनानियों के मस्तिष्क महत्व को पूर्णतया समझने के लिये हमको यूनानियों ही के लिखे ग्रन्थ पढ़ना चाहिये।